भागवत परिचय

सम्पादक :

सप्ताचार्य

डा० वासुदेव कृष्ण चतुर्वेदी

एम. ए. (हिन्दी-संस्कृत) पी-एच. डी , डी. लिट्,

रीडर एवं अध्यक्ष संस्कृत विभाग

प्राच्य दर्शन महाविद्यालय,

वृन्दावन (मथुरा)

प्रकाशक :

श्रीकृष्ण सत्संग भवन

गतश्रम टोला,

मथुरा।

भागवत परिचय

•

आचार्य डा० वासुदेवकृष्ण चतुर्वेदी

एम. ए. (सं. हि.), पी. एच. डी., डी. लिट्.,
आचार्य (नव्य व्याकरण, साहित्य, वल्लभ वेदान्त,
सांख्ययोग, पुराण-इतिहास धर्मशास्त्र, फ० ज्योतिष)
साहित्यरत्न, साहित्यालंकार, काव्यतीर्थ, शास्त्री
लब्ध स्वर्णपदक, शोध निर्देशक,

•

प्रवाचक, अध्यक्ष
प्राच्य दर्शन महाविद्यालय
वृन्दावन (मथुरा)

•

प्रकाशक :

श्रीकृष्ण सत्संग भवन

गतश्रम टीला,

मथुरा।

● सम्पादक :

डा. वासुदेव कृष्ण चतुर्वेदी

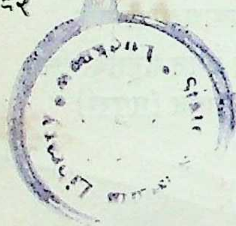
● प्रकाशक :

श्रीकृष्ण सत्संग भवन,

गतश्रम टीला, मथुरा ।

● प्रथम संस्करण

● सम्वत् २०३९ सन् १९८२



● मूल्य : २०)

● मुद्रक :

हर्ष गुप्त

राष्ट्रीय प्रेस,

मथुरा ।

विषयानुक्रमणिका

दो शब्द



श्रीमद्भागवत के टीकाकारों पर शोध प्रबन्ध होने के कारण प्रीतिवश जितनी सामग्री मिलती गई एकत्र करता गया, परन्तु शोध प्रबन्ध के लिए अपेक्षित वस्तु ही स्वीकार्य होती है विस्तृत नहीं फलतः सम्पूर्ण एकत्र सामग्री में से अपेक्षित अंश ही चयन किया। आगरा विश्व विद्यालय से उस पर पी-एच. डी. उपाधि भी प्राप्त हो गई और उसका प्रकाशन भी हो गया परन्तु उसके माध्यम से एकत्र अवशिष्ट शोध सामग्री का उपयोग नहीं हो पाया था। उसी समय भाईजी श्री हनुमान प्रसाद जी पोद्दार की प्रेरणा से श्रीमद्भागवत के पात्र और स्थानों की अनुक्रमणिका भी तैयार की थी वह तो पृथक रूप से गत वर्ष ही प्रकाशित हो गई परन्तु अन्य सामग्री का उपयोग न हो पाया। भागवतभवन के उद्घाटन के सन्दर्भ में एक दिन श्री सुदर्शन सिंह चक्र ने वार्ता के समय यह इच्छा प्रकट की कि भागवतभवन के उद्घाटनावसर पर भागवत से सम्बन्धित एक सन्दर्भ ग्रन्थ प्रकाशन की योजना है परन्तु कार्य अत्यन्त समय एवं श्रम साध्य है उनमें भागवत का पाठान्तर आदि भी देना चाहते हैं। मैंने अपने सहयोग का आश्वासन दिया और एकत्रित सभी सामग्री उन्हें प्रदान करदी जिससे वे अत्यन्त प्रसन्न हुए इस सामग्री में पाठान्तर, प्रक्षिप्त तालिका आदि के साथ भागवत भक्तों के लाभार्थ अनुष्ठान आदि की तालिका भी दी गई है। अगले प्रयास में और शेष सामग्री जिसमें भूगोल खगोल, चित्रकाव्य एवं आर्ष प्रयोग आदि के प्रकाशन का प्रयत्न किया जायगा।

आशा है प्रस्तुत सामग्री से शोधार्थियों के साथ श्रीमद्भागवत के गूढ़रहस्य ज्ञाता भी लाभान्वित होंगे।

भवदीय

नव सम्वत : २०३९ **वासुदेव कृष्ण चतुर्वेदी**

श्रीमद्भागवत स्वरूप

राजन्ते तावदन्यानि पुराणनि सतां भवे ।
यावद्भागवतं नैव श्रूयतेऽमृत सागरं ॥
(अ. १२. १३. १४)

श्रीमद्भागवतका प्रारम्भ स्वरूप—निगम कल्पतरोर्गलितं फलं शुक-मुखादमृत-द्रव-संयुतम् ॥
(मा. १. १. ३)

में समझाया है। भागवत वेद रूपी वृक्षका रसमय फल है। वृक्षकी परिणति फलोत्पत्ति है, फलोत्पादनके लिए ही बीज एवं वृक्षकी सार्थकता है। वेदार्थकी चरम परिणति श्रीमद्भागवतके आविर्भावमें ही है। भागवतीय तत्व और रस सिद्धान्त प्रकरण ही वेदार्थ की चरम सार्थकता है।

वृक्ष और फलके दृष्टान्त द्वारा अति गम्भीर सत्यकी चेष्टाको अन्तर्निहित किया है। समग्र वेदका सार है प्रणव, प्रणवकी मूर्ति है ब्रह्म गायत्री। ब्रह्म गायत्री ही फलवन्त होकर भागवतके प्रत्येक अक्षरमें विद्यमान है।[२]

(क) जन्माद्यस्यतः—यह समग्र ग्रन्थमें बीज-स्वरूप है। गायत्री के सहित इसी श्लोककी एक वाक्यता है। गायत्रीमें आनेवाली कियार्हदपद—इस श्लोकमें धीमहि है। गायत्रीका प्रचोदयात् ही 'तेन' शब्द द्वारा वर्णित है।[३] गायत्री के 'वरेण्यं' व 'भर्गः' पद ही भागवतमें—'सत्यं' परम कहे हैं। गायत्रीके 'सवितुर्देवस्य' का तात्पर्य ही भागवतमें-जन्माद्यस्ययतः में हैं।
(१।१।१)

अतः यह श्लोक गायत्रीका भाष्य स्वरूप कहा जाता है। अतः इसकी प्रामाणिकता भी सिद्ध हो गयी, क्योंकि श्रीमद्भागवतके प्रमाणके निमित्त मत्यत्स्पुराणके श्लोककी संगति भी यहाँ पूर्णरूपेण घटित हो जाती हैं—

यत्राधिकृत्य गायत्रीं वर्ण्यते धर्म विस्तरः ।
वृत्रासुर कथोपेतं तद्भागवतमिष्यते ॥
ग्रन्थोष्टादश साहस्त्रो द्वादश स्कन्ध संभितः ।
गायत्र्या च समारम्भस्तद्वै भागवतं विदुः ।
(मत्स्य ५३. २०)
(अग्नि २७२,६-७)

श्रीमहाप्रभुने भी अपनी वाणीमें इसे प्रमाण कहा है—

गायत्रीर अर्थ पई ग्रन्थ आरम्भ न
सत्यं परं धीमहि—साधनं प्रयोजन ।
(चै. च. २५,१४०)

(ख) श्रीमद्भागवतके (२।६।३०-३६) श्लोकमें ज्ञान—विज्ञान—रहस्य—और तदंग ये ४ विषय आलोच्य कहे हैं। यही चतुःश्लोकी है—

ज्ञान—शास्त्रार्थावबोधका नाम ज्ञान है।
विज्ञान—तत्वानुभूतिका नाम विज्ञान है।
रहस्य—प्रेम भक्ति ही रहस्य है।
तदंग—साधनभक्ति ही तदंग है।

---

१. आर्यधान कोष पृ. ५४५(गौ. मठ)

२. वेदः प्रणव एवाग्र। (भा. ११।१।११) प्रणवः सर्व वेदेषु (गीता ८।७) प्रणव ब्रह्मका वाचक है उसका वाचक प्रणव है—पतञ्जलि—प्रणव ब्रह्मके अति निकट है—
ओमित्येतद ब्रह्मणों नेदिष्ठं नाम—श्रुतिः
(अ. १२।६।४)

३. अनेन बुद्धि वृत्ति प्रवर्त्तकत्वेन गायत्र्यर्थोपिदर्शितः—
(श्री. भा. १।१।१)

यही चार भागवतके अनुबन्ध चतुष्टय हैं। इन्हींमें समग्र शास्त्र द्वारा वर्णनीय विषयोंका प्रतिपादन है। यही चतुःश्लोकी भागवत भगवानने ब्रह्माको उपदेश की। प्रणवका अर्थ गायत्रीसे जाना जाता है।

इसी प्रकार गायत्रीका ज्ञान श्रीमद्भागवत चतुःश्लोकीसे जाना जा सकता है।[1] ब्रह्माने यही चतुःश्लोकी भागवत नारद नामक पुत्रको दी। नारदने वेद व्यासको दी, वेदव्यासने वर्तमान भागवतकी भित्ति रची।

अतएव गायत्रीं एवं चतुःश्लोकीका प्रतिपाद्य भिन्न नहीं अपितु अभिन्न है।

भागवत चतुःश्लोकी की परिणति है, अतएव वेदका परिपक्व फल है।

(ग) सत्यके २ स्वरूप हैं—

१. अमूर्त्त

२. मूर्त्त

श्रीमद्भागवत ब्रह्म रूपका अकृत्रिम भाष्य है—

वेदके ज्ञान काण्डात्मक उपनिषदमें प्रधानतः ब्रह्म तत्त्व ही प्रतिपादित है। एवं उपनिषदोंके सिद्धान्त समूह ब्रह्म सूत्रके अल्पाक्षरोंमें समुद्दिष्ट है। ब्रह्म सूत्रकी कदर्थनाको देखकर व्यासदेवने स्वयं उसके भाष्यकी रचना की।[2]

भागवतमें प्रधानतः ३ विषय परिवेशित हैं—

सम्बन्ध

अभिधेय

प्रयोजन।

मूल वाच्य तत्त्व ही—सम्बन्ध है।

मूल प्राप्त तत्त्व ही—प्रयोजन है।

१. प्रणवेर येई अर्थ गायत्री ते सेई ह्य सेई अर्थ चतुःश्लोकी ते विवरियाछय (चै. म. २५।९२)

२. श्रीमद्भागवत करिवसूत्रेर भाष्य स्वरूप। उपनिषद सेई एक अर्थ (चै. च. २५।९५-९८)

प्रयोजन प्राप्तिसे जन्य कर्त्तव्य तत्त्वका निर्धारित ही—अभिधेय है।

ब्रह्म सूत्रके प्रथम सूत्र—

'अथातो ब्रह्म जिज्ञासा' इसकी भूमिकामें श्रीबलदेव लिखते हैं कि—

सर्वदोष वर्जित, प्रकृतादि स्पर्श शून्य, अनन्त गुण गणालंकृत सच्चिदानन्द विग्रह श्रीकृष्ण ही ब्रह्म सूत्रके प्रतिपाद्य हैं।

श्रीमद्भागवतके "वेद्यं वास्तवमत्र वस्तु शिवदं" के अनुसार पारमार्थिक वस्तु ही प्रतिपाद्य है।

भागवतके १।२।११ श्लोकमें परमतत्वको अद्वय एवं अखण्ड ज्ञान कहा है, परन्तु उसका प्रकाश तीन रूपमें होता है—

ब्रह्म—परमात्मा और भगवान

यह अखण्ड तत्त्वका त्रिविध प्रकाश है, वही स्वयं भगवान श्रीकृष्ण ही भागवतके मुख्य प्रतिपाद्य वस्तु हैं।

पादौ यदीयौ प्रथम द्वितीयौ
तृतीय तुर्यौ कथितौ यदरू
नाभिस्तथा पंचम एव षष्ठी
भुजान्तरं दोर्युगलं तथा दन्यौ
कण्ठस्तु राजन् नवमो यदीयो
मुखारविन्द दशमं प्रफुल्लम्
एकादशो यस्य ललाट पट्टकम्
शिरोऽपि यद् द्वादश एव भाति॥
तदादिदेवं करुणा निधानं
तमालवर्णं सुहितावतारम्
अपार संसार समुद्र सेतुं
भजामहे भागवत स्वरूपम्॥

भागवतके पात्र और ऋग्वेद

न केवल उपनिषदोंके पात्रोंकी चर्चा ही भागवतमें है अपितु ऋग्वेदमें भी उनकी आख्यायिकाएं हैं या वे ऋषि रूपमें मंत्रोंके द्रष्टा हैं। भागवतके पात्र जो ऋग्वेदमें हैं निम्नलिखित हैं। १म मण्डलमें—

पराशर :—शक्ति पुत्र पराशर जो भागवतकारके पिता हैं इनका उल्लेख ऋग्वेदके प्रथम मण्डलमें है। भागवतमें तो अनेक स्थलोंपर इनका नाम उल्लिखित है।[१]

गौतम:—रहूगणके पुत्र गौतमका उल्लेख ऋग्वेदके प्रथम मण्डलमें है और "भृगुर्वसिष्ठ श्च्यवनश्च गौतमो०" भा० मा० में हीं इनका उल्लेख है।[२]

कश्यप:—मरीचि पुत्र कश्यपका नाम महत्वपूर्ण है। समस्त सृष्टिके मूलमें कश्यपका नाम सादर गृहीत होता है। देव-असुर-गन्धर्व-यक्ष-किन्नर-राक्षस-मानव सभी उच्च योनियोंके ही नहीं अपितु जलचर, थलचर, औरं नभचर स्थावर-जंगम सभीके वे पिता हैं।[३] कश्यपके पुत्र ही वामन हुए जिन्होंने राजा बलिको छलकर तीनों लोकोंका राज्य देवोंको सौंपा था।

अम्बरीष:—भागवत नवम स्कन्धमें अम्बरीष भक्तकी कथा वर्णित है। यह क्षत्रिय वंशोत्पन्न नृपति था और भगवान् विष्णुका अनन्य भक्त था। दुर्वासा मुनि इसे शापग्रस्त कर स्वयं पछताये थे।[४]

सहदेव:—भागवतमें दो सहदेवोंके नाम उल्लिखित हैं। प्रसिद्ध युधिष्ठिरके भाई और जरासन्ध पुत्र। इनका सम्बन्ध ऋग्वेदके ऋषियोंसे अयुक्त प्रतीत होता है। किन्तु तत्व विचारके शब्द ऋषियों जैसे हैं।[५]

१. भा० भा० ३।१४ २. भा० भा० ३।१४ ३. भा० ३।१४।४३ ४. भाग०।९।५ ५. भाग० १०।७४।२५

कुत्स:—कुत्स ऋषिका ऋषियोंकी नामावलीमें है।

दीर्घतमा:—इनकी कोई विशेष गाथा भागवतमें नहीं है किन्तु उल्लेखमात्र है

लोमश:—लोमश ऋषिका भी उल्लेख आता है।

अगस्त्य:—महर्षि अगस्त्यने इन्द्रद्युम्नको शाप दिया था। गजकी योनिमें इन्हीं महर्षिकी कृपासे उसने अपना उद्धार कर लिया था। अगस्त्याश्रमका भी कई स्थानोंपर उल्लेख है, अतः यह निश्चित है कि महर्षि अगस्त्यने प्रथम मण्डलमें समागत वेदकी ऋचाओंको प्रत्यक्ष किया हो। महर्षि अगस्त्य भारतके विशिष्ट प्रसिद्ध सन्तोंमें गिने जाते हैं।

इन्द्र:—यद्यपि इन्द्र शब्दसे देवराज इन्द्रका ही ज्ञात होता है तथापि ऋग्वेदमें इन्द्रके सूक्त हैं तथा इन्द्रका अनेक बार प्रयोग किया गया है।

(१।१५।८)

लोपामुद्रा:—ऋषि पत्नियोंमें लोपामुद्राका नाम उल्लेखनीय है।

ऋग्वेदके द्वितीय मण्डलके ऋषि

गृत्समद १:—वेदमें गृत्समद ऋषिकी चर्चा आती है। इन्द्र सूक्तमें गृत्समदके सम्बन्धमें आख्यायिका वर्णित है। एकबार असुरोंने इन्द्र देवको मारनेके लिए चारों ओरसे घेर लिया था। वहां इन्द्रदेवने गृत्समदका वेष धारणा कर अपने प्राणोंकी रक्षा की, जब वे यज्ञमें घुसे तो वैसे ही आकारके गृत्समदको देखकर विचार करने लगे कि यही कपटी इन्द्र है। तब गृत्समदने उत्तर दिया

१. भा० १।९।७

कि 'स जनास इन्द्रः' अरे मनुष्यों ! वह इन्द्र है' मैं नहीं हूं ।

भृगुः—भृगु ऋषि अग्निके पूजक थे । वेदोंमें इन्होंने सर्वप्रथम अग्निको प्रतिष्ठित किया था । भागवतमें "भृगुर्वसिष्ठः" में भृगुकी कथा है । भागवत सुननेमें जो आलस्य कर रहे थे उन्हें सादर निमंत्रण देकर भृगु लाये थे ।

त्रिदेव परीक्षा भृगु करने गये थे और विष्णु भगवान्की छातीमें लात मारकर परीक्षा भी इन्होंने ली थी ।

(भा० १०।८९)

ऋग्वेद तृतीय मण्डल

विश्वामित्रः—ऋग्वेदमें विश्वामित्र मन्त्र द्रष्टाके रूपमें आते हैं और इनकी अनेक आख्यायिकाएं भी वर्णित हैं । भागवतमें भी इनका उल्लेख है । ये हरिश्चन्द्रोपाख्यानमें प्रसिद्ध हैं ।

(भा० १०।७४।८)

गाधिः—कुशिकके अपत्य गाधि वैदिक ऋषि हैं । भागवतमें इन्हें अनेकबार स्मृत किया है ।

(भा० भा० ३।१४)

यमदग्निः—परशुरामके पिता यमदग्नि थे । भागवत नवम स्कन्धमें इनकी कथा वर्णित है । इनकी रेणुका स्त्रीका नाम भी कई स्थानोंपर लिया है ।

(भा० १।९।६)

चतुर्थ मण्डल

वामदेवः—ऋषि ऋग्वेदके ज्ञाता हैं और भागवतमें ऋषियोंके साथ रहते हैं ।

(भा० १०।७४।८)

त्रसद्दस्युः—भागवतमें त्रसद्दस्युकी वंशावली वर्णित है किन्तु मन्त्र भागसे इनका सम्बन्ध विचारणीय है ।

(भा० ९।७।३)

पंचम मण्डल

अत्रिः—महर्षि अत्रिके नयनाश्रुसे चन्द्रमाका जन्म हुआ था । अत्रिकी पत्नी अनुसूया थी । अनुसूयाके स्नान करते समय उनकी नग्नावस्था देखकर त्रिदेवोंमें (ब्रह्मा-विष्णु-शिव) ने उपहास किया, तब पातिव्रत धर्मके-प्रभावसे अनुसूयाने तीनों देवोंको अपना पुत्र बनाया । विष्णुके अंशसे दत्तात्रेय, शिवके अंशसे दुर्वासा और ब्रह्माके अंशसे चन्द्रमा प्रकट हुआ था ।

(भा० १।९।७)

बुधः—भागवत और वेदमें यह अत्रिवंशीय कहा है । भागवतमें इसका विस्तार है । चन्द्रमाकी तारासे मित्रता थी, अतः ताराका अपहरण करके चन्द्रमा अपने साथ ले गया और वही बुध नामक देव गर्भमें आ गया । ब्रह्माकी सभामें इसका निर्णय लिया गया । वृहस्पतिका कथन था, यह मेरा पुत्र है किन्तु सभामें तारने कहा कि यह गर्भस्थ शिशु चन्द्रमाका है । चन्द्रमा अत्रिपुत्र था, लिखा जा चुका है ।

(भा० ९।१४)

षष्ठ मण्डल

भरद्वाजः—भरद्वाज ऋषिकी वंशावली भागवत नवम स्कन्धमें है । भरद्वाज ऋग्वेदके द्रष्टा हैं किन्तु इन्हें सामवेदमें गिना जाता है । इनकी शाखाके अनुयायी सामवेदी हैं । यह गोत्र सम्बन्ध किस प्रकारसे चला विचारणीय है ।

(भा० १।९।६)

वीतहव्यः—भागवतमें इनकी पृथक् कथा नहीं है । वीतहोत्रका उल्लेख है ।

(भा० १०।७४।९)

गर्गः—गर्गका उल्लेख दोनों में है ।

(भा० १०।७४।८)

सप्तम मण्डल

वसिष्ठ १:—वसिष्ठ सूर्य वंशके कुल गुरु हैं। मनुने इनको आचार्य बनाकर पुत्रेष्टि यज्ञ किया था किन्तु मनुके कन्या उत्पन्न हुई। वसिष्ठने कहा कि तुम्हारी पत्नीने यज्ञके होता ब्राह्मणोंसे कन्याके नामकी आहुतियां पढ़वाई थीं, अतः पुत्री उत्पन्न हुई है। मनुके आग्रहपर वसिष्ठने शिवकी आराधना की और शिवकी आराधनासे वह पुत्री पुत्र बनी, उसका नाम सुद्युम्न रखा गया। एकबार वह बालकोंके साथ पार्वतीके शापित बनमें गया, उस वनमें पार्वतीने शाप दे रखा था कि जो कोई पुरुष इसमें प्रवेश करेगा स्त्री बन जायगा। सुद्युम्न अपने साथियोंके सहित एवं घोड़ोंके सहित पुरुषसे स्त्री रूपमें परिवर्तित हो गया। पुनः मनुके आग्रहपर वसिष्ठने शिवकी आराधना की और शिवने एकमाह पुरुष और एक मास स्त्री बने रहनेका वरदान दिया—

"मासं पुमान् भविता मांस स्त्री तवात्मजः"
(भा० ६।१।३६)

स्त्री पुरुष दोनों रूपमें सृष्टिका आरम्भ इससे सिद्ध होता है, पश्चात् वर्गीकरण हो गया। इस प्रकार वसिष्ठकी अनेक चमत्कारी कथा भागवतमें है।

अष्टम मण्डल

कण्वः—ये शाखाके प्रवर्तक थे।
(भा० १०।७४।७)

सौभरिः—मान्धाता राजाकी ५० कन्याओंके साथ महर्षि सौभरिने विवाह किया था। ये वृन्दावनवासी थे।
(भा० ६।६)

मनुः—नवम स्कन्ध तो मनुकी वंशावलीसे भरा है। समस्त भागवतमें मनु ओतप्रोत हैं।
(भा० ६।१)

भार्गव;—भार्गवका उल्लेख भी कई स्थानोंपर है।
(भा० १०।७४।६)

सुपर्णः—भागवतमें गरुड़के लिए प्रयुक्त है।
(भा० १२।११।१६)

नवम मण्डल

शुनः शेपः—शुनो लांगूलका भाई शुनःशेप था। ऋषि अजीगर्त इसके पिता थे। हरिश्चन्द्रको वरुणने जलोदरका श्राप दे दिया था। हरिश्चन्द्रका पुत्र अपने पिताकी रक्षाके लिए शुनःशेपको खरीदकर लाया था किन्तु मामा विश्वामित्रने रास्तेमें वरुणको प्रसन्न करनेवाला मंत्र दे दिया था। उसका उच्चारण करनेपर वरुण प्रसन्न हो गया और शुन;शेपकी मुक्ति करा दी तथा राजाका उदर रोग दूर हो गया था।

वेदमें शुनःशेपको कूपमें डालनेकी कथाएं आती है।
(भा० ६।७)

असित[1]:—इनके नाम भी दोनोंमें हैं।

रहूगणः—भागवत पंचम स्कन्धमें रहूगणका उपाख्यान है, यह तत्त्ववेत्ता था। यह राजा सिन्धु देशका निवासी था। जड़भरतजीसे इसने ज्ञान प्राप्त किया था।
(भा० ५।१०)

उशना[2] मन्यु,[3] उपमन्यु, व्याघ्रपाद-के उल्लेख भागवतमें हैं।

ययाति[2]:—ययाति नामक राजाकी कथा नवम स्कन्धमें है। वृषपर्वाकी कन्या शर्मिष्ठा और शुक्राचार्यकी पुत्री देवयानीकी परस्परमें मैत्री थी। एकबार वे वनमें गयीं और वहां परस्परमें कलह हो गयी तथा देवयानीको शर्मिष्ठाने कूपमें ढकेल दिया। राजा ययाति मृगयाके

---

१. भा० १०।७४।७

१. भा० १०।७४।७ २. भा० ४।१।४५ ३. भा० ३।१२।१२

व्याजसे वहाँ पहुंचे, कूपमें-से देवयानी की ध्वनि सुनकर हाथ पकड़कर उसे बाहर निकाला और शुक्राचार्यकी अनुमतिसे विवाह भी किया। इन्हीके सुप्रसिद्ध यदु नामक राजाका जन्म हुआ, जिनके वंशमें भगवान श्रीकृष्णका प्राकट्य हुआ था। ययाति राजाने अपना वृद्धत्व यदुको दिया और यौवन चाहा, परन्तु यदुने अस्वीकार कर दिया, फलतः यदुवंशी राजाओं को गद्दीपर बैठनेका अधिकार इसने समाप्त कर दिया। इस आदेशका पालन भगवान् श्रीकृष्णने भी किया था।

ऋग्वेद और भागवत दोनोंमें यह नहुषका पुत्र स्वीकार किया है।

(भा० ९।१८)

नारदः—भागवतका प्रारम्भ नारदके द्वारा व्यासको उपदेशसे है।

(भा० १।९।६ नारद सर्वत्र व्याप्त हैं।

सप्तऋषिः—कश्यप आदि सप्तऋषियोंके उल्लेख वेद भागवत दोनों ग्रन्थमें हैं।

(भा० ५।२२।१७)

दशम मण्डल

वैवस्वत यमः—भागवतमें भी इनके वंशका वर्णन है।

(भा० ९।१)

शर्यातिः—शर्याति राजाकी कन्या सुकन्या थी। वनमें सुकन्याने महर्षि च्यवनके नेत्रोंमें काँटे डालकर ज्योति नष्ट कर दी थी, तब शर्याति राजाने अपनी पुत्री उन्हें भेंट कर दी थी। इन्होंने कई यज्ञ भी कराये थे।

(भा० ९।३)

अरुण,[१] नारायण[२] का नाम महर्षियोंमें गृहीत होता है।

पुरुखाः—राजा पुरुखा और उर्वशीके प्रेमालापकी कथा प्रसिद्ध है।

(भा० ९।१४)

सरमाः—सरमासे सारमेयगणोंकी उत्पत्ति भागवतमें वर्णित है। वेदकी सरमासे साम्य विचारणीय है।

(भा० ६।६।२६)

मान्धाताः—युवनाश्व राजाका पुत्र मान्धाता था। यह युवनाश्वके उदरसे उत्पन्न हुआ था। राजा युवनाश्व ही एक ऐसे हैं, जिनके गर्भसे पुत्र उत्पन्न हुआ। भागवतकी कथामें लिखा है कि एकवार राजा युवनाश्वने पुत्रेष्टि यज्ञ किया। रातमें प्यास लगनेपर वह पुत्र प्रदान करनेवाला कलशः जल पीलिया। महर्षि वसिष्ठके आश्वासनपर राजा जीवित रहा और गर्भपूर्ण होनेपर उसके उदरको विदीर्ण कर मान्धाताको निकाला। इन्द्रने 'मान्धाता' अर्थात् मैं इसकी रक्षा करूँगा कहा, अतः मान्धाता नाम पड़ा था।

(भा० ९।६)

विश्वावसुः—गन्धर्व है।

(भा० ६।३।१४)

इन्द्राणीः—की कथा नहुषके उपाख्यानमें आती है।

(भा० ६।७)

पृथुः—वेदमें इसे वेन पुत्र लिखा है। भागवतमें भी वेनका पुत्र लिखा है। इसीके नामसे पृथिवीनाम पड़ा है। राज पृथुने पृथ्वीका दोहन किया था और १०० अश्वमेघ यज्ञ किये थे।

(भा० ४।१५-२३ अध्याय)

यमीः—यम और यमी दोनोंका साथ-साथ जन्म हुआ था।

शिविः—शिवि राजा परम उदार था।

(भा० ९।२०)

त्वष्टाः—यह विश्वरूपका पिता था। विश्वरूपकी मृत्यु हो जानेपर इसने इन्द्रको नष्ट करनेवाले पुत्रकी

१. भा० ९।७। ३
२. भा० ५।४५।

कामनासे यज्ञ किया था किन्तु स्वर दोषके कारण इन्द्रसे मरनेवाला वृत्रासुर उत्पन्न हुआ।

(भा० ६।९)

ऋग्वेद और भागवत

	मण्डल सूक्त-ऋचा	भागवत स्कन्ध-अध्याय
१. वामनावतारका संकेत	३-५४-१४	८।१८
२, शुन: शेपकी कथा	१-१९०-९ १-२४-२	९।७
३. इन्द्र-वृत्र-युद्ध	१-३२	६।१२
४. दधीचिकी हड्डीसे वज्र निर्माण	१४-१३	६।१०
५. सूर्यकी किरणसे चन्द्रमें प्रकाश	१।८४।१५	५।२२
६. मान्धाताकी रक्षा	१।११२।१३	९।६
७. जीवात्मापरमात्मा	१।१६४।२०	४।२९
८. हिरण्यकशिपुका पुरोहित शण्डामर्क	२।३०।८	७।४
९. समुद्रसे उच्चैःश्रवा घोड़ेकी उत्पत्ति	३।३५।६	८।८
१०. गायत्री मन्त्र	३।६२।१०	५।५
११. सुदासराजा	७।८३।६-७	९।२
१२. युद्धकर्ता विष्णु	८।२५।१२	१०।
१३. राजावेनके वंशज	९।८५।१०	४।१४
१४. राजा नहुषके वंशज	९।१९।१२	९।१८
१५. यम-यमीसंवाद	१०।१०	९।
१६. पितृयान-देवयान	१०।१८।१ १०।८८।१५	३।२
१७. युवा-युवतियोंका वरण	१०।३०।६	४।१
१८. सपत्नीसे दुःख	१०।३३।२	४।८
१९. दध्यङ् ऋषिका सिर काटना	१०।४८।२	६।१०
२०. पुरुषसूक्त	१०।९०	२।६
२१. राजा वेन	१०।९३।१४	९।१०
२२. उर्वशी-पुरुरवा संवाद	१०।९५	९।१४
२३. देवापि-शन्तनु	१०।९८	९।२२

भागवत और उपनिषद्

श्रीमद्भागवतके विभिन्न कथानकोंका स्रोत उपनिषद् वाङ्मय है। ईश्वरके संकल्पसे सृष्टिका वर्णन तृतीय स्कन्धमें वर्णित है। तैत्तरीय उपनिषद्में भी "सोऽकामयत। बहुस्याम् प्रजायेयेति।" अर्थात् उसने इच्छा की, मैं बहुत हो जाऊँ। सतपोऽतप्यत।१

भागवतमें सृष्टि रचनाका एक क्रम है। ऐतरेयो० में लिखा है कि रचनाके पूर्व एक ही आत्मा परमेश्वर था। सबसे पहले जल रचा, पुनः विविध लोकोंकी रचना हुई। २ विराट्को तपाया और विराट्का मुख निर्भेदन हुआ। विराट्में मनुष्यादि देह बन गये। मुखसे वाणी हुई और वाणीसे उसका देवता अग्नि प्रकट हुआ। आदि०। भागवतका प्रसिद्ध देवासुर संग्राम वर्णन जो षष्ठ स्कन्धमें है छा० उप० में भी वर्णित है ३ किन्तु यह वर्णन आध्यात्मिक विषयोंको लेकर है। इसके अतिरिक्त भागवतका प्रारम्भ गायत्रीके 'धीमहि' पदसे है।४ गायत्री की उपासना परोरजः सवितुं जति वेदाः' पंचम स्कन्धमें भी है छा० उ० में गायत्री की उपासनाका महत्व है। ५

गायत्री मंत्र ही सब सारोंका सार है। गायत्री इस लोककी शक्ति है। गायत्रीके तीन चरण है।

सनत्कुमार और नारदका कथोपकथन भागवत माहात्म्यमें वर्णित है । नारद भक्तिकी तरुणावस्था एवं ज्ञान वैराग्यकी वृद्धावस्थाके कारण दुःखित होकर सनत्कुमारके साथ हरिद्वारके समीप वनमें गये और वहाँ सत्संग प्रारम्भ हुआ । ६

छा० उप० में भी सनत्कुमारने नारदको उपदेश दिया है। ७ परमेश्वरकानाम सत्य है, ऐसा छा० उ० में वर्णित है और भागवतके प्रथम श्लोकमें "सत्यं परं धीमहि" सत्यको नमस्कार किया है।

"तदह वा ब्रह्मणोनाम सत्यम्"

१. तै० उ० ६।
२. रोत० उ० १।२
३. छा० उ० १।१
४. भा० १।१।१
५. छा० उ०
६ भा० भा० १
७. छा० उ० ७।१।१
८. छा० उ० ८।३।४
९. छा० उ० ८।७।१-३

गौतम और भारद्वाज—इनका वर्णन नवम स्कन्धमें है । वृहदारण्यकोप० से आत्म सम्बन्धमें गौतम—भारद्वाज ऋषियोंका उल्लेख है । १ इस प्रकरणमें विश्वामित्र, जमदग्नि, वशिष्ठ, कश्यप, अत्रिके नाम भी हैं, जो भागवतमें अनेकत्र वर्णित हैं। गालव, आंगिरस, त्वाष्ट्रविश्वरूप अश्वि, दधीच, विप्रचित्ति, जनक, पराशर्य, जातूकर्ण्यके उल्लेख भागवतमें है और वृह० उ० में भी । २

याज्ञवल्क्यका अनेकशः दोनोंमें उल्लेख है।

कुरुपंचालका वर्णन भी वृह० में ३।९।१ में है ।

उपनिषदोंका मूल वेद है और वैदिक आख्यानोंसे भागवतके आख्यानोंका साम्य है।

१. वृह० उ० २।२।४
२. वृह० उ० ३।१।२

उपनिषदों के प्रमुखपात्र और भागवत

उपनिषदोंके प्रमुख पात्रोंमें क्षत्रिय राजा एवं ब्राह्मण महर्षियोंके उपाख्यान अनुस्यूत हैं । अनेक प्राकृतिक देवगण भी मानवीकरण रूपमें चित्रित किये गये हैं । श्रीमद्भागवतमें भी उनके सम्बन्धमें कथाएं लिखी गयी हैं ।

अग्नि :—का विग्रहधारी रूप केनोपनिषद्में वर्णित है१ भागवतमें दावानल पानके वर्णनकी कथाके अतिरिक्त कई स्थलोंपर नाम्ना निर्देश है ।२

वायु :—वायुका वर्णन केनोपनिषद३ में और भागवत दोनोंमें है ।४

उमा :—उमाका नाम्ना निर्देश भी है और उसके पर्यायवाची शब्द भी उल्लिखित हैं ।५ ये शिवकी पत्नी हैं और दाम्पत्यके लिए उमाकी पूजाविधि वर्णित है ।

गौतम :—उपनिषद्७ और भागवत दोनोंमें इन्हें महर्षिके रूपमें उपस्थित किया है । ऋषियोंका जहाँ-जहाँ उल्लेख है वहाँ गौतम मुनिका नाम अवश्य दिखलाई देता है ।

भरद्वाज :—प्रश्नोपनिषद्९ में भरद्वाजको तत्वचिन्तक रूपमें रखा है । भागवतमें "मूढ़े भरद्वाजमिम्" के द्वारा

भरद्वाजकी व्युत्पत्ति भी दी है और वंश परम्पराका वर्णन भी।१०

शिवि :—शिविकी उदार नृपतियोंमें गणना है।११ महाभारतमें कपोत-श्येनकी कथाका उल्लेख है। राजा शिविने कपोतकी रक्षाके लिए अपनी जंघाका मांस श्येन रूपधारी इन्द्रको समर्पित किया। यह उशीनर देशका राजा था।१२

कौसल्य :—कोसल देशके प्रसिद्ध राजाओंमें कौसल्यका नाम है।१३ भागवतके षष्ठ स्कन्धमें इसका नाम है।१४

भृगु :—यह पुराण युगके प्रसिद्ध महर्षि हैं। इनका उल्लेख वेदमें भी उपलब्ध है "यमीदिरे भृगवः" अग्निसूक्तमें इन्हें स्मृत किया है। भागवतके माहात्म्यमें वर्णन उपलब्ध है कि सनत्कुमारने जब कथारम्भकी तो भृगु मुनिने समस्त महात्मा एवं सन्तोंको निमंत्रण देनेका कार्य हाथमें लिया।

"भृगुर्वसिष्ठश्च्यवनश्चगौतमो"

—भा० मा. ३।१३

"कहा विष्णु को घट गयो जो भृगु मारी लात" उक्तिका मूल भागवतके दशम स्कन्धमें उपलब्ध होता है।१ भृगुके चरण चिह्नको आज भी मूर्तिके वक्ष भागपर उट्टंकित करनेकी प्रथा है।

कवन्धी :—प्रश्नोप. में (१।१) कवन्धीका उल्लेख है। भागवतमें कवन्धका (मा. ९।१०.१२)

पिप्पलाद :—पिप्पलको ही भोजन करनेके कारण इनका पिप्पलाद नाम प्रसिद्ध हुआ। प्रश्नोप. १।१ के साथ माहात्म्य (३।१३) में इनका उल्लेख है। ये सनत्कुमारकी कथा सुनने गये थे।

द्वादश स्कन्धमें पिप्पलायन नामके ऋषि भी कहे हैं (१२।७।२)

प्रजापति :—प्रश्नोपनिषद् (१।१६) में प्रजापति तत्ववेत्ता है। भागवतमें अनेक प्रजापतियोंका उल्लेख है किन्तु कथा रूपमें दक्ष प्रजापति और द्वितीय दक्ष प्रजापतिके नाम उल्लेखनीय हैं। प्रथम तो शिवजी के श्वसुर हैं। सती चरित्रका प्रसिद्ध पात्र प्रजापति है। द्वितीय शवलाश्व, हर्यश्व नामक पुत्रगणोंका जनक हुआ है। सृष्टि पूर्ण करनेमें इसका विशिष्ट योगदान है।

रुद्र :—प्रश्नो २।९ में रुद्रका उल्लेख है। भा. में सती चरित्र प्रभृति अनेक उपाख्यान रुद्रकी गाथाओंसे भरे पड़े हैं। रुद्रकी व्युत्पत्ति 'रोदनात् रुद्र' लिखी गयी है। जन्म लेते ही इन्होंने रुदन किया अतः ब्रह्माने इनका नाम रुद्र रखा था।

सूर्य :—प्र० उ० (२।९) में सूर्य वर्णित है। भा० के नवम स्कन्धका प्रारम्भ सूर्य कथासे है। वैवस्वत पर्यायवाची नाम है। इसकी कथाएं बहुचर्चित हैं। द्वादश स्कन्धमें द्वादश सूर्योंका उल्लेख है। ये सूर्य धाता-विधाता-पूषा आदि चैत्र-वैशाख आदि द्वादश मासोंके अधिपति लिखे हैं।२

वैवस्वत :—कठोप. १।७ में वैवस्वत यमका उल्लेख है। नचिकेता वैवस्वत यमके लोकमें गया वहाँ उसे यमने ३ वरदान दिये। भाग. में वैवस्वतको यम कहा है नवम स्कन्धमें इसका उपाख्यान है।

१. के. उ. ३।३ २. भाग. १०।५८।२५
३. के. उ. ३।६ ४. अ. १०।५।१९
५. के. उ. ३।१३ ६. भाग. ९।१।२५
७. कठ. उ. ५।६ ८. भाग. ९।२१।३४
९. प्र. उ. १।१ १०. भाग. ९।८।५
११. प्र. उ. १।१ १२. भाग ८।२०।७
१३. प्र. उ. १।१ १४. ६।१५।१५

१. भा. १०।१९
२. भा. १२।११

अथर्व :—अथर्वण वेदके ज्ञाता अथर्व मुनि मुण्डकोप. १।३ में स्वीकार किये हैं और व्यासकी शाखाओंके ज्ञाता रूपमें भागवतमें । "अथर्ववित् सुमन्तुश्च" भा. १२।७।१

अंगिरा :—छा. उ. १।२।१० में अंगिराका उल्लेख है। भागवतमें अंगिरा ऋषिने शूर देशके राजाको हर्ष-शोक देनेवाले पुत्रका वर प्रदान किया है। राजाकी एक कोटि रानियोंमें किसी के सन्तान नहीं थी। अंगिराके वरदानसे पुत्र हुआ, उसे रानियोंने ईर्ष्या के कारण विष देकर मार दिया। अंगिराने राजाका शोकापनोदन करते हुए उसे अध्यात्म तत्वका उपदेश दिया है।१ भा. में अन्यत्र भी इनका उल्लेख है।२

शुनक :—छा० उ० १।९।३ में शुनकका नाम है भागवतमें शुनक पुत्रका उल्लेख है।वैसे १८ पुराणोंके श्रोता रूपमें शौनक तो अत्यन्त प्रसिद्ध हुए हैं। 'शौनक उवाच' से ही समस्त पुराण प्रारम्भ हुए हैं। भागवतका प्रारम्भ भी शौनकोंके छः प्रश्नोंके द्वारा ही पल्लवित होता हैं। 'कुमुद, शुनको ब्रह्मन्' अ. १२।७।३ में स्पष्ट शुनक मुनि ही है।

क्षत्ता :—छा० उप० ४।१।८ में तत्ववेत्ताके रूपमें क्षत्ताका उल्लेख है। भागवतमें तृतीय स्कन्धमें जो परम्परा चली है उस भागवत परम्पराको क्षत्ताने नया रूप दिया है।३

वसिष्ठ :—छा० उ० ५।१।२ में इनका वर्णन है। भागवतके अनेक कथानकोंमें वसिष्ठ हैं। नवम स्कन्धमें इनकी उत्पत्तिका वर्णन है। वसिष्ठ एक बड़े पुरोहितके रूपमें वर्णित हैं। सूर्य वंशसे इनका घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है।४ भगवान् श्रीरामकी कथाके मुख्य पात्र रूपमें ये जनसाधारणमें परिचित हैं। विश्वामित्रके प्रतिद्वन्द्वीके रूपमें इन्हें पुराणोंमें रखा गया है। भागवतमें भी इनकी शत्रुताकी कथा कही गयी है५ आडिबक युद्ध महाभारतमें वर्णित है।

आरुणि :—छा० उ० ५।३।५ में आरुणिका वर्णन है। भागवत १०।८।१८ में भी इसका वर्णन है। आरुणेयोपाख्यान महाभारतमें भी प्रसिद्ध है। आरुणिकी गुरु भक्ति प्रसिद्ध है। गुरुकी आज्ञासे यह गाय चराने जाता था, वहाँ गायोंका दूध पीकर स्थूल शरीरधारी हो गया। गुरुने परीक्षा ली और दूध न पीनेका आदेश दिया इसने वत्सोंके मुखसे टपकनेवाला झाग पीना प्रारम्भ किया। गुरुने इसका भी निषेध किया तब आकके पत्ते खानेसे अन्धा होकर विना पानीके कूपमें गिर गया। गुरुने कृपापूर्वक इसका वहाँसे उद्धार किया और सम्पूर्ण शास्त्रोंका ज्ञाता बना दिया। वेदस्तुतिमें "आरुणयो दहरम्" आरुणि सम्प्रदायके लोग दहर ब्रह्मकी उपासना करते हैं लिखा हैं। निःसन्देह यह अंश छा० उप० से सम्बन्धित हैं क्योंकि इस उप० में भी दहर विद्याकी बड़ी महिमा गाई गयी है।

इन्द्रद्युम्न :—छा० उ० ५।१४।१ में तथा भागवत ८।४।७ में इसका उल्लेख है। इन्द्र द्युम्न नामक राजा गज-ग्राह युद्धमें वर्णित है। यह पाण्ड्य देशका राजा था। एक बार यह मौन व्रत लिए भगवदाराधनामें मग्न बैठा था कहींसे अगस्त्य मुनि आये परन्तु इसने आतिथ्य नहीं किया। उन्होंनेअपमान देखकर इसे हाथी होनेका शाप दिया था।

सनत्कुमार :—छा० उ० ७।३।१ में उल्लिखित और है भागवतके प्रमुख वक्ता हैं। नारद जब समस्त भूतलपर भ्रमण करते वृन्दावन आये और वृन्दावनमें भक्तिसे भेंट हुई तो उसके कष्टको दूर करनेके लिए नारद सनत्कुमारके पास गये और उन्होंने आनन्दवनमें भागवत पुराणका सप्ताह पारायण सुनाया, जिसे श्रवण कर भक्तिका कष्ट दूर हुआ।१

१. भाग. ६।१४-१५ अध्याय २. भाग. १।१९।९
३. भाग. ३।१।१ ४. भाग. ९।१
५. भाग. ९।१३

१. भागवत माहात्म्य १

प्रसिद्ध हिरण्याक्ष-हिरण्य कशिपु एवं रावण-कुम्भकर्णके जन्म कथानक सनत्कुमारसे मिले हैं। सनत्कुमारके शापके कारण ही जय-विजय नामक भगवानके पार्षद उक्त असुरोंके रूपमें जन्मे थे। ये भगवानके प्रिय रूपमें चित्रित हैं और प्रायः चार भाई सनक-सनन्दन-सनातन-सनत्कुमार साथ-साथ रहते हैं। पूर्वजोंके पूर्वज होनेपर भी सदा ५ वर्षकी अवस्था वाले बालकके समान रहते हैं।

सृष्टि उत्पन्न करनेके ब्रह्माके अनुरोधके उल्लंघन करनेके कारण इनका शरीर बालकोंके समान ही रहा।

ब्रह्मदत्त :—वृह० उ० १।३।२४ में तथा भागवत ९।२१।२५ में चर्चित है। ये शुकमुनिके दौहित्र हैं अतः ब्रह्मवेत्ता होना स्वाभाविक है।

गार्ग्य :—वृह० उ० २।१।४ तथा भा. ९।२१।१९ में इनका उल्लेख है। अन्यत्र कालनेमिको गार्ग्य पुत्र कहा है।

याज्ञवल्क्य :—वृह० उ० २।४।१ तथा भा. ९।१२।३ में इनकी कथा है। एकबार याज्ञवल्क्यने वैशंपायनसे कहा कि आप अपने समस्त शिष्योंसे प्रायश्चितकी न कहें। इकला मैं ही समर्थ हूँ। वैशंपायन प्रायश्चित्त करानाचाहते थे याज्ञवल्वयकी अहंवादितासे उन्होंने शाप दिया और याज्ञवल्क्यने पठित विद्या उगल दी। पुनः सूर्यनारायणकी उपासनासे नवीन यजुष् ग्रहण किये और शुक्ल यजुर्वेदके द्रष्टा ऋषि बन गये।

शुक्ल कृष्ण यजुर्वेद के भाग कर्ताके रूपमें याज्ञवल्क्यकी भागवतमें विस्तृत चर्चा है।१

उपनिषदोंमें याज्ञवल्यकी कात्यायनी-मैत्रेयी पत्नियोंका नाम भी सादर गृहीत है। भागवतमें मैत्रेयीका उल्लेख ४।१।४८ में है।

कौशिक :—वृह० २।६।१ भाग. ६।८।४८ में इनका उल्लेख है। कौशिक विश्वामित्रकी अनेक कथा हैं। कुशिक ऋषिकी सन्तानका नाम कौशिक पड़ा। चरुके व्यत्ययके कारण क्षत्रिय भार्याका चरु ब्राह्मणीने खाया, ब्राह्मणीका चरु क्षत्रियाणीने खाया अतः परशुराम तो जमदग्निके घर क्षत्रिय धर्मा प्रकट हुए और कुशिकके घर ब्राह्मणत्व विशिष्ट धर्मा विश्वामित्र प्रकट हुए थे।)

आग्निवेश्य :—वृह० २।६।२ तथा भा. ९।२।२१ में उल्लिखित है। इनकी कोई विशिष्ट कथा भागवतमें नहीं है।

पाराशर्य :—वृह० २।६।२ में तथा भागवतमें १०।७४।८ एवं पराशर नाम "योगेश्वरौ व्यासपराशरौ च" माहा० ३।१४ में एवं अन्यत्र अनेक प्रसंगोंमें है। पाराशर्य व्यासका नाम है। भागवतके रचयिता भी पाराशर्य हैं। ब्रह्मसूत्र रचयिता भी यही हैं। इन्हींका नाम बादरायण है।

जातूकर्ण्य :—वृह० २।६।३ एवं भाग. ९।२।२१ में इनका उल्लेख है। "जातूकर्ण्यश्च तच्छिष्यः" भा. १२।६।५८ में भी स्पष्ट जातूकर्ण्यका उल्लेख कर वैदिक परम्पराके निर्वाहक रूपमें इसे रखा है।

विश्वरूप :—वृह० २।६।३ भा. ६।६।४४ में उल्लिखित मुनिका नाम है। विश्वरूपके तीन मस्तक थे जिनसे वह अन्न-सुरा और सोम-रस पान करता था। यह त्वष्टाका पुत्र था और देवताओंने इसे कुछ दिन अपना आचार्य मनोनीत किया था। यह सुर-असुर दोनोंसे सम्बन्धित था और असुरोंकी ओर रुचि होनेके कारण उनकी वृद्धिकी कामनाके लिए हवन कर्म करता था। एकबार इन्द्रने पता लगाकर इसके तीनों मस्तकोंका उच्छेद किया। जिनसे कपिंजल-कलविंक और तित्तिर पक्षी उत्पन्न हो गये। इन्द्रको ब्रह्म हत्या लगी, जिसे बादमें स्त्री-जल-भूमि और वृक्ष चारोंमें विभक्त किया।

---

१. भाग. १२।६।६२

यह विश्वरूप तान्त्रिक था। इन्द्रको नारायण कवच विद्याको इसीने प्रकाशित किया था। उपनिषदोंमें चर्चित विश्वरूपके साथ जोड़नेका कारण वहाँ त्वष्टाका उल्लेख है।

त्वाष्ट :—वृ० २।६।३ में नाम आया है और भागवत ६।७।२५ में अतः विश्वरूपको ब्रह्मवेत्ता मानना पड़ता है।

अश्विनी :—ये युगल देव हैं। वृह० २।६।३ एवं भा० ६।३।१६ में वर्णित हैं। भागवतमें ये च्यवनकी अन्ध चक्षुको ज्योति प्रदान करते हैं, वृद्धत्व दूर करते हैं।

दधीचि :—वृह० २।६।३ भा. ६।११।२० में वर्णित हैं। देवगण इनसे अस्थि माँगते हैं और उनका वज्र बनाते हैं। इसी वज्रसे प्रसिद्ध दैत्य वृत्रासुरका विनाश करते हैं। ये अथर्ववेदके तत्वज्ञ मुनि थे।

सनक :—वृह० २।६।३ तथा भा ३।१२।४ में इनका उल्लेख है। सनत्कुमारके ये भाई हैं।

परमेष्ठी :—वृह० २।६।३ तथा भा० २।३।६ में इनका उल्लेख है।

स्वयभू :—वृह० २।६।३ भा० २।७।२ में वर्णित हैं।

जनक :—वृह० ३।१।१ भा० ९।१३।१३ में चर्चित हैं। प्रसिद्ध सीता देवीके पितृ रूपमें समस्त जनवर्गमें समादत हैं।

शाकल्य :—वृह० ३।९।२४ भा० १२।६।५७ में उल्लेख है। "शाकल्यस्तत्सुतः" में वह वेद शाखा प्रवक्ता हैं।

आत्रय :—वृह० २।६।३ तथा भाग. माहा० ३।६ में अत्रिज पिप्पलादाः" अत्रि पुत्र आत्रेय ही हैं।

उपनिषदोंके तथा भागवतके स्थल विशेष

ब्रह्मलोक :—कठोपनिषद् (६।५) में ब्रह्मलोकका वर्णन है। भागवत में तो ब्रह्मा नामक देव ब्रह्मलोकसे ही अपने भक्तोंको दर्शन देने आते हैं। भागवतके अनेक स्थलोंमें ब्रह्मलोकका वर्णन है।१

भूः भुवः स्वः—छान्दोग्योपनिषद्में भूः भुवः स्वः लोक रूपमें भी वर्णित है।२

वैसे ये तीनो व्याहृतियाँ हैं।

भूर्लोकः कल्पितः पद्भ्याम्
भुवर्लोकोऽस्य नाभितः
(भा० २।५।३८

श्लोकमें तीनों लोकोंका उल्लेख है। देवगण स्वर्गसे गर्भस्तुति करने आये, वहीं लौटकर गये (भा० ८०।२।४२)

नैमिषारण्यः—छा० उ० १।२।१३ में नैमिषारण्यका उल्लेख है। यह स्थल इतना पवित्र है कि इसका वर्णन १८ पुराणोंमें उपपुराणोंमें,अधिपुराणोंमें, तथा समग्र कथा साहित्यमें उपलब्ध होता है। इसकी महत्ता इस कारण भी है कि समग्र ऋषियोंने कथा यज्ञके लिए निरापद भूमिकी कामनासे भगवान्से प्रार्थना की। उन्होंने अपना एक मनोमय चक्र बनाकर वैकुण्ठसे छोड़ा एवं ऋषियोंसे कहा कि जिस स्थानपर चक्रकी नेमि रुक जाय वहाँ आप लोग बैठकर श्रवण यज्ञ करें। सीतापुरके समीप आजकल यह स्थान है। इसे नैमिषारण्य कहते हैं। श्रीमद्भागवतके कारण यह जन-जनमें प्रसिद्ध हो गया है। प्रसिद्ध सत्यनारायणकी कथा यहीं हुई थी, अतः यह अति प्रसिद्ध स्थान बना है। ईश्वरने नेमिश असुरको इस स्थानपर मारा था, अतः यह स्थान प्रसिद्ध हो गया। नैमिषारण्यमें सहस्त्रों वर्ष बैठकर शौनक एवं सूतने विभिन्न पौराणिक कथाओंको प्रकट किया था।

---

१. भा. २।५।३९,
२. छा० उ० १।८।५

उपनिषदोंमें उल्लेख होनेसे इसका महत्व और भी बढ़ा है, यह निःसन्देह है। भागवतमें कई स्थानोंपर इसका उल्लेख है।[1]

पंचालदेशः—छा० उं० ५।३।१। में पंचाल देशका उल्लेख है तथा भागवत ४।२५।२१ में इसका उल्लेख है। इसे ही कुछ विद्वान् पंचाल देश मानते हैं और पांचाली शब्द द्रौपदीके लिए प्रसिद्ध है। वैसे कई स्थानोंपर कुरु-पंचाल देश साथ-साथ वर्णित हैं। श्रीकृष्णने हस्तिनापुरसे द्वारकाकी यात्रा पंचाल देशमें प्रविष्ट होकर की थी।

भा. १।१०। ३४

काशीः—वृह० उप० २।१।२ में काशीका उल्लेख है। श्रीमद्भागवतके ६।७।१४ में काशीका उल्लेख है इतना ही नहीं, इसके सम्बन्धमें भागवतमें कई उपाख्यान हैं प्रसिद्ध सान्दीपनि आचार्यको 'काश्यं' लिखकर काशी निवासी स्वीकार किया है। सान्दीपनि आचार्य उज्ज-यिनीमें निवास कर विद्यादान करते थे। भगवान् श्रीकृष्ण-बलरामने इन्हींसे विद्या अर्जित की थी।

काशीको कृष्णके सुदर्शन नामक चक्रने जलाया था, जैसे हनूमान्ने लंका जलाई थी।

काशीपति भूतनाथका अनेकत्र उल्लेख है।

कुरुदेशः—छा० उ० १।१०।१ में कुरुदेशका वर्णन है। प्रसिद्ध कौरवोंका नाम इस कुरुदेशसे सम्बन्धित है। कुरु नामक राजर्षिने जिस भूमिपर यज्ञादि किये थे वह कुरुक्षेत्र स्थान बना। कुरुदेशकी सीमा व्यापक थी। कुरुका उल्लेख भागवतमें कई स्थलोंपर वर्णित है।

'कुरु जांगल पंचालान् शूरसेनान् सयामुनान्'

भा. १।१०।३४

में कुरुके साथ कुरुक्षेत्र भी पड़ा है।

मद्रदेशः—वृह० ३।१।१३ में मद्रदेशका वर्णन है। यह स्थान सुप्रसिद्ध पाण्डवोंके भाई नकुल-सहदेवके कारण ख्याति प्राप्त है। पाण्डुकी दो पत्नी थीं—कुन्ती और माद्री। कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिर-अर्जुन-भीम और माद्रीके पुत्रोंका नाम नकुल और सहदेव था। महाभारत भागवत आदि प्रसिद्ध ग्रन्थोंमें इनकी चर्चा बहुधा आती है।

सूर्यलोकः—छा० उ० १।८।५। में सूर्य लोकका वर्णन है। भागवतमें देवोंके लोकमें सूर्य लोकका वर्णन आता है। भा. ५।२२।५

चन्द्रलोकः—प्रश्नोपनिषद् १.९ में चन्द्रमाके लोकका वर्णन है। भागवतमें सूर्य लोकके ऊपर चन्द्रलोकका वर्णन उपलब्ध होता है।

"एवं चन्द्रमा अर्क गभस्तिभ्य उपरिष्टात् लक्ष योजनत उपलभ्यमानः"

भा० ५।२२।९

देवलोकः—वृह० उ० १।५।१६ में देवलोकका वर्णन है। भागवतमें कंसके कारागारमें देवगण देवलोकसे भगवान्की स्तुति करने आते हैं। देवलोकका विभिन्न कथानकोंमें उल्लेख मिलता है। इसे ही स्वर्ग लोक या दिव शब्द कहा गया है—

"देवा प्रतिययुः दिवम्" भा० १०।२।४२

मनुष्य लोकः—वृह० १।५।१६ में मनुष्य लोकका वर्णन मिलता है। भागवतमें मर्त्य लोक या मनुष्य लोककी ही समग्र श्रीकृष्ण परक कथाएँ हैं।

भू-लोक ही मनुष्य लोक है। भू-लोकका वर्णन भा० ११।२४।१२ में है। भारतवर्षका ११।२।१७ तथा अन्य अनेक स्थानोंपर वर्णन है।

नक्षत्र लोकः—वृह० ३।६।१ में नक्षत्रलोकका उल्लेख है। भागवत पंचम स्कन्धमें शिशुमार चक्रका वर्णन (खगोल वर्णन) नक्षत्र लोकका ही वर्णन है।

भा० ५।२३।४

१. भा० ३।२०।७

प्रजापति लोकः—वृह० ३।६।१ में प्रजापति लोकका वर्णन है। भागवतमें यह लोक प्रजापति ब्रह्मासे सम्बन्धित है अतः यह ब्रह्मलोकका पर्यायवाची शब्द बनाकर व्यवहृत किया है। 'परमेष्ठीः प्रजापतिः' यह ब्रह्माके लिए ही व्यवहृत है। लोक रूपमें भा० ५।२३।६-५ में व्यवहृत है।

विदेह—वृ० ३।१।१। में प्रसिद्ध तत्ववेत्ता विदेह राजाकी आख्यायिका वर्णित है। विदेह एक प्रसिद्ध स्थान है, इसे जनक राजाके परिवारसे संयुक्त माना गया है। भगवान् श्रीकृष्णका परम प्रिय भक्त श्रुतदेव विदेह देशमें ही रहता था। एक बार भगवान्ने विदेहकी यात्रा की और मैथिलदेशके राजा बहुलाश्वका मनोरथ भी पूर्ण किया।

'स उवास विदेहेषु मिथिलायां गृहाश्रमो'

भा० १०।८६।१४

इस यात्रामें श्रीकृष्णकी पूजा आनर्त, धनु, कुरु जांगल, कंक, मत्स्य पंचाल, कुन्ति, मधु, केकय, कोसल, आदि देशके देशाधिपोंने की थी।

भा १०।८६।२०

विदेह नगरका उल्लेख भा० ११।८।२२ में है।

(ब्रह्मलोकका ११।२३।३० में वर्णन है)

ब्रह्मसूत्रके प्रमुख पात्र

ब्रह्मसूत्रोंमें किसी ऋषिका वंश वर्णन नहीं है और न किसी आख्यायिकाको ही इसमें प्रमुखता दी गयी है किन्तु विभिन्न सिद्धान्तोंके स्थापनमें जिनका उल्लेख परम आवश्यक समझा गया है, उन्हें ही इसमें उल्लिखित किया है। ऋषियोंके नाम इस प्रकार हैं:—

बादरायणः—(ब्रह्म सूत्र ४।३।१५)

उक्त सूत्रमें बादरायणका नामोल्लेख करते हुए कहा है कि उपनिषदोंमें ब्रह्मकी प्रतीक उपासनाका वर्णन है, ऐसा उनका मत है।

बादरायण व्यासका नाम है और भागवतके तो रचयिता भी यही हैं।

बादरिः—बादरिका उल्लेख ४।४।१० में है। बादरिका कथन है कि उस लोकमें स्थूल शरीर नहीं मिलता केवल मनसे ही भोगोंको भोगता है। 'बादरि' बादरायणसे भिन्न आचार्य हैं। इनका नाम्ना निर्देश भागवतमें नहीं मिलता। भा० ३।४।४ में बदरीका उल्लेख अवश्य है। बादरिका नाम बदरि शब्दसे संयुक्त किया जा सकता है।

आश्मरथ्यः—'अभिव्यक्ते रित्यायाश्मरथ्यः' १।२।२६

में आश्मरथ्य नामक आचार्यका उल्लेख है। भक्तोंपर अनुग्रह करनेके लिए देश विशेषमें ब्रह्मका प्राकट्य होता है अतः कोई विरोध नहीं है। यह आश्मरथ्यका मत है।

'अश्मकान्मूलको जज्ञे' भा० ६

में अश्यमक शब्द प्राप्त होता है किन्तु इसका उक्त ऋषिसे कोई सम्बन्ध रहा हो, निश्चय नहीं कहा जा सकता है।

काशकृत्स्नः—अवस्थितेरितिकाशकृत्स्नः १।४।२२

काशकृत्स्न आचार्यका मत है कि प्रलयकालमें सम्पूर्ण जगत्की स्थिति परमात्मामें होती है।

भा० (बंगला सं०) ४।१३।१६ में कृत्स्न शब्द मिलता है। सम्भव है काशके साथ वह जुड़ा हो।

औडुलोमिः—आर्त्विज्यमित्यौडुलोमिस्तस्मै हि परिक्रीयते' औडुलोमि आचार्य मानता है कि कर्तापन ऋत्विक्का है क्योंकि वह यजमान द्वारा वरण किया जाता है, हां फल यजमानको प्राप्त होगा, ऋत्विक्को नहीं।

औडुलोमिका मत भा.,१।४।२१ में भी प्रदर्शित किया है।

महर्षि पाणिनि ने भी इनकी व्युत्पत्ति उडुलोमन् शब्दसे प्रदर्शितकी है।

कार्ष्णाजिनिः—३।१।९ में कार्ष्णाजिनिका पक्ष प्रस्तुत किया गया है।

जैमिनिः—ब्रह्मेण जैमिनिरुपन्यासादिभ्यः ४।४।५

सूत्रमें जैमिनि आचार्यका मत रखा गया है।

मुक्तात्मा ब्रह्मके सदृश रूपसे स्थित होता है ऐसा आचार्य जैमिनिका मत है। इसके अतिरिक्त १।३।३१, ३।४।४०, ३।४।१८, १।४।१८ १।२।२८ आदिमें जैमिनि आचार्यका मत उद्दृत किया गया है।

श्रीमद्भागवतके द्वादश स्कन्धमें लिखा है कि व्यासने जैमिनि नामक शिष्यको सामवेदकी शाखा दीं।

साम्नां जैमिनये प्राह तथा छन्दोग संहिताम्
भा० १२।६।५३

जैमिनेः सामगस्यासीत' १२।६।७५ में भी जैमिनिको सामवेद ज्ञाताके रूपमें स्मृत किया है तथा भा० १।४।२१ में 'सामगो जैमिनिः कविः' लिखा है।

आत्रेयः—भागवतमें अत्रि सम्प्रदाय उपलब्ध है। अत्रिका प्रसिद्ध कथा है। मुख्य पात्र जैमिनि और बादरायण है जिनका श्रीमद्भागवतसे घनिष्ठ सम्बन्ध है। इस अध्यायका प्रयोजन दोनों व्यक्तियोंके एक कर्तृत्व को सिद्ध करनेके लिए किया है। सम्पूर्ण उपनिषदोंका अनुशीलन करनेसे निष्कर्ष यह देखा गया कि विभिन्न अल्पज्ञात उपनिषदोंके बहुतसे पात्र तो भागवतमें उपलब्ध हैं। उनकी पुनरावृत्तिसे ग्रन्थका कलेवर बढ़ जाता और अध्ययनकी उपयोगितामें कोई विशेष महत्व न रहेगा इस विचारसे प्रसिद्ध उपनिषदोंके मुख्य पात्र ही यहाँ तालिका रूपमें प्रस्तुत किये गये हैं।

ब्रह्मसूत्रोंमें न तो अधिक पात्र हैं न स्थान।

पात्रोंके आधारपर उपनिषदोंका आश्रय लेकर ऊहापोह करके स्थानोंका अन्वेषण करना मुख्य ध्येय नहीं है, अतः केवल दिग्दर्शन मात्र कराके इसे यहीं विश्राम दिया गया है। उपनिषदोंके पात्रोंका अध्ययन भागवतके वैशिष्ट्यका द्योतन करानेवाला है अतः अध्ययन सार्थक ही रहा है।

अर्थोऽयं ब्रह्मसूत्राणांका निर्वेचन

पाराशर्य पुनः पुराणनिचयं वेदार्थ सारान्वितम्,
स्त्री शूद्र प्रतिवोधनाय च विदां वेदान्त शास्त्रं मुदे।
श्रीगीता वचसां विधाय विवृतिं ज्ञान प्रदीप प्रभा,
लोकैर्लोकमतिं समुज्ज्वल रुचिं लोके वृतार्था दधौ॥
वेदं प्रमथ्य जलधिं मति-मन्दरेण
कृष्णावतार ! भवता किल भारताख्था
येनोदहारि जनतापहरां सुधावै
तं सर्व वैदिक गुरुं मुनिमानताः स्मः॥
वेदान्तसूत्र महिमा किमु वर्णनीया
युक्त्यानिरीश्वर मतानि निरस्य सम्यक्।
संस्थाप्य सेश्वर मतं श्रुतिभिः वृता य
ल्लोकाहरेर्भजनतः सुख मुक्तिभाजः॥*

*वेदान्त सूत्र भक्तिरूपसिद्धान्ती—श्रीसारस्वत गौड़ीय मिशन प्रतिष्ठान (बंगला)

ब्रह्मसूत्रके रचियता वेदव्यास हैं' इन्हींका एक नाम बादरायण है। अतः इन्हें बादरायणसूत्र और व्याससूत्र भी कहा जाता है। ब्रह्मसूत्र रचनाके सम्बन्धमें एक आख्यायिका स्कन्ध पुराणमें आती है।

द्वापर युगमें जब वेदसमूह समाप्तप्राय हो गया था तब चर्वाकि, बौद्ध, कपिल, प्रभृतिने वेद वाक्यों का अपनी मतिके अनुसार अर्थ करके लोकको परमार्थके मार्गसे च्युत करनेका प्रयास किया।

इस अनर्थको देखकर देवगण हरिकी शरणमें गये और इस अनर्थ निवारणकी प्रार्थना की, तब भगवान्‌ने कृष्णद्वैपायनके रूपमें अवतार लिया।

व्यासने दुष्ट मत निराकरणके लिए चतुरध्यायी ब्रह्म-सूत्र या उत्तरमीमांसाका आविष्कार किया। वेदान्तसूत्रके और भी कई नाम हैं—

१. ब्रह्मसूत्र, शारीरिकसूत्र, व्याससूत्र, वादरायणसूत्र, उत्तरमीमांसा एवं वेदान्तदर्शन। चैतन्यमहाप्रभुको 'वेदान्तसूत्र' नाम प्रिय था जैसाकि उन्होंने स्वयं लिखा हैः—

प्रभूकहे, वेदान्त सूत्र ईश्वर वचन
व्यास रूपै कैल ताहा श्री नारायण,
भ्रम प्रमाद विप्रलिप्सा करणापाटव
ईश्वरेरवाक्ये नाहि दोष एई लव।

(चै. च. आदि ६।१०८-१०६)

भगवद्‌गीतामें भी लिखा है—

''वेदान्तकृद्वेदविदेवचाहम्''

(गीता १५।१५)

वेदान्त शब्दका अर्थ है वेदका अन्त—चरमसिद्धान्त। श्रीश्रीलप्रभुपादने महाप्रभुके उक्त वाक्यकी व्याख्यामें लिखा है कि—वेदान्त शब्दकी व्याख्यामें हेमेन्द्र कोषकारका मत यह है—ब्राह्मणोंके सहित उपनिषत् अंश ही वेदान्त या वेदावशिष्ट या वेदशेष भाग है अर्थात् वेदसमूह का ही अन्त वेदान्त है। वेदका चरमोद्देश्य जिस शास्त्रमें प्रदर्शित हुआ है उसे ही वेदान्त कहते हैं।

वेदान्त सूत्र प्रस्थानत्रयमें 'न्याय प्रस्थान' के नामसे भी पुकारा गया है। उपनिषद् श्रुतिप्रस्थानमें एवं गीता भारत—पुराणादि स्मृति प्रस्थानमें माने जाते हैं।

वेदान्त अर्थ—वेदान्तमें वेद शब्द प्रथम आया है यह शब्द विद् धातुसे बना है। यह कर्म वाच्य धातु है। इससे चलू प्रत्यय होकर वेद शब्द निष्पन्न होता है। विद् धातुके अन्य अर्थ भी हैं—

वेत्तिवेद विदि ज्ञाने वित्तेविदिविचारणे
विद्यते विदि सत्तायां लाभे विन्दति विन्दते।

साधारणतः विद् धातुका अर्थ ज्ञान या अनुभव है। ''वेदयतिधर्म ब्रह्म च वेदः'' अर्थात् जो शास्त्र धर्म और ब्रह्मसत्तत्वको बताता है उसे वेद कहते हैं।

श्रीजीवगोस्वामीने भी वेद शब्दपर विचार करते हुए लिखा हैः—

''यश्चानादित्वात् स्वयमेव सिद्धः,
सएव निखिलैतिह्य मूलरूपो
महावाक्यसमुदायः शब्दोऽत्रगृह्यते
स च शास्त्रमेव, तत्त्ववेद एव।१

फलतः शब्दमय शास्त्रावतार ही वेद है। वेदके दो भाग हैं—एक अंश कालम है ''संहिता'' तथा दूसरेका नाम है ''ब्राह्मण''। वेद साधारणतः छन्दोमय है। छन्दोमय श्लोकको ही मन्त्र कहते हैं तथा मन्त्रकी सभिष्टका लयसूक्त है। सूक्तोंकी समष्टिको ही संहिता कहा गया है।

वेदके 'ब्राह्मण' भागमें यज्ञादिके मन्त्र तथा नियमोंका उल्लेख है। ब्राह्मण ग्रन्थ प्रायः गद्यलिखित हैं। इसके

१. सर्व्व संवादिनी—तत्वसन्दर्भ

अतिरिक्त वेदके एक भागको 'आरण्यक' भी कहते हैं। वेदके चतुर्थ शेष अंशका नाम 'उपनिषद' श्रुति या वेदान्त कहा जाता है। उपनिषदोंको वेदान्त कहनेका तात्पर्य यही है कि इसमें वेदका चरमसिद्धान्त निरूपित है।

उपनिषद् शब्दका अर्थ भी यही है:—

"ब्रह्मणा उपसमीपे निषीदति अनया इत्युपषनिद।"

अर्थात् जिस शास्त्रके साहाय्यसे साधक मुक्त होनेके लिए भगवानके समीपमें पहुँचनेमें समर्थ हो उसे ही उपनिषद कहते हैं।

उपनिषद्—शब्द उप उपसर्ग पूर्वक निपूर्वक 'षद्‌ल्ट' धातुसे विषप् प्रत्यय होकर निष्पन्न होता है।

"उपस्थिततत्वात् ब्रह्मविद्यां निश्चयेन तन्निष्ठतया ये द्रष्टानुश्रविक विषय वितृष्ण: तेषां संसार वीजस्य सद् विशरणकर्त्री शिथिलयित्री अवसादयित्री विनाशयित्री व्रह्मेन मयित्रीति"२

वेद समुदाय श्रीनारायणके ही प्रश्वासोंसे उत्पन्न हुआ है। अत: वेदको अपौरुषेय कहा जाता है। छान्दोग उपनिषदमें ऐसा लिखा है—

"एतस्य वा महतो भूतस्य नि:श्वसितयेतद् यद्वै ऋग्वेद:"

स्वयं भगवान् श्रीकृष्णके शक्तयावेशमवतार श्रीकृष्ण द्वैपायन वेद व्यासने वेद और वेदसार उपनिषदोंके तात्पर्यको लेकर ही ब्रह्मसूत्र या वेदान्त सूत्रकी रचनाकी है। सूत्रका तात्पर्य यह है:—

अल्पाक्षरमसन्दिग्धं सारवद्विश्वतो मुखम्।
अस्तोममनवद्यं च सूत्रं सूत्रविदो विदु: ॥१

२. चैतन्य चरितामृत आदिलीला—२ य प्ररि. टीका अनुवाद
१. (क) स्कन्द पुराण, (ख) वायु पुराण

श्रीधर स्वामीने व्रह्म सूत्रकी व्याख्या इस प्रकारकी है—

"ब्रह्म सूत्रयते सूत्रयते सूत्रयते एभिरित ब्रह्मसूत्राणि"

सांख्य-पातञ्जल न्याय वैशेषिक और पूर्व मीमांसा आदि सकल ग्रन्थ 'सूत्राकार' में ही ग्रंथित हैं।

श्रीवेदव्यासने अपने ब्रह्मसूत्र निर्माणमें अन्य भी ऋषियोंके मतोंको उद्धत किया है। जिनके नाम इस प्रकार हैं—

आत्रेय—आश्यरथ्य, औडुलोमि, कार्ष्णजिनि
काशकृत्स्न, जैमिनि वादम्।

इससे यह सिद्ध होता है कि वेदव्याससे पूर्व वे महर्षि ब्रह्मसूत्रोंकी आलोचना कर चुके थे।

श्रीवेदव्यास रचित इन्हीं ब्रह्मसूत्रोंको सम्पूर्ण आचार्योंने प्रामाणिक ग्रन्थके रूप में स्वीकार किया है। इसे उत्तर मीमांसा तथा दर्शन शास्त्र भी कहा जाता है। दर्शन शब्दका अर्थ है देखना, प्रत्यक्ष करना, अवलोकन करना, और साधन द्वारा वस्तुका साक्षात्कार करना, इसे ही दर्शन कहा जाता है। फलत: जिन शास्त्रोंके द्वारा परमेश्वरका साक्षात्कार या अनुभव करें उन्हें दर्शनशास्त्र कहते हैं। उस दर्शनकी कथा उपनिषदोंमें प्राप्त होती है "आत्मा वा अरे द्रष्टव्य:" इस तत्वज्ञान वा तत्वदर्शनका एकमात्र उपाय श्रीभगवानकी कृपा ही समझनी चाहिये।१

वेदान्त सूत्रका अर्थ ज्ञान परम कठिन है। विभिन्न लोकमें इसके विभिन्न अर्थकी सम्भावनाको देखकर श्रीनारद महर्षिकी प्रेरणासे महर्षि वेदव्यासने ही इसका प्रथम भाष्य बनाया। यह भाष्य ही 'श्रीमद्भागवत पुराण' के नामसे विख्यात है। यह बात गरुड़ पुराण आदिसे भी स्पष्ट है—

"भाष्योंऽयं ब्रह्मसूत्राणां भारतार्थ विनिर्णयः
गायत्री भाष्य रूपो सौ वेदार्थपरिबृंहितः ॥

श्रीमहाप्रभु एवं उनके अनुयायी गौडीय वैष्णव भी इसको ही प्रमाण मानते हैं। वेदान्तका अकृत्रिम भाष्य भागवत है ऐसा उनका निर्णय है।

कालान्तरमें वेदान्त सूत्रके अनेक भाष्य हुए हैं।

श्रीरामानुज, श्रीमध्व, श्रीविष्णुस्वामी और निम्बादित्य प्रमुख सात्त्वत वैष्णावाचार्योंके भाष्य तो अत्यन्त प्रसिद्ध हैं।

श्रीरामानुजके भाष्यका नाम 'श्रीभाष्य'। इन्होंने विशिष्टाद्वैत मतवादका प्रचार अपने भाष्य द्वारा किया।

"चित् और अचित्विशिष्टि ब्रह्मका एकत्व ही विशिष्ट अद्वैतत्त्व है।

श्रीरामानुजके पश्चात् उनके परवर्ती शिष्योंने भी अनेक भाष्यों की टिप्पणी की है।

श्रीमध्वाचार्य कृत भाष्यके ३ भाष्योंका परिचय मिलता है।

१. ब्रह्मसूत्र भाष्य, अनुव्याख्यानम्, अनुभाष्यम्।

श्रीवेदव्यासने मध्वको प्रत्यक्ष दर्शन दिया था और इन्हें भाष्यकी प्रेरणा दी थी। इनके मतमें जीव और ईश्वरमें भेद है। तथा जीव और जीवन में भी भेद है। ईश्वर और जड़में भेद है। जीवन और जड़में भेद है तथा जड़ और जड़में भी भेद है। श्रीमध्वाचार्यके परवर्ती अनुयायी आचार्योंने विपुल रचना द्वारा केवलाद्वैतवादका खण्डन किया है।

श्रीविष्णु स्वामी रचित भाष्यका नाम 'सर्वज्ञसूक्ति' है। इन्होंने शुद्धाद्वैत वादका प्रचार कया। श्रीवल्लभाचार्यने इसी मतका प्रतिपादन व प्रसार किया था। श्रीश्रीधरस्वामी इसी मतके प्रसिद्ध आचार्य हुए हैं। श्रीधरस्वामीको केवलाद्वैतवादका मानना भ्रम है। भक्तिरक्षक श्रीधर स्वामिपाद श्रीनृसिंहके सेवक थे। श्रीधर स्वामीकी कृतिकी प्रमाणिताके सम्बन्धमें एक आख्यायिका आती है कि एकबार श्रीधरस्वामीने अपनी कृति विश्वनाथके मन्दिरमें काशीमें रखी तो श्री विश्वनाथके हस्ताक्षर इस प्रतिपर मिले जिसमें निम्न श्लोक लिखा था—

अहं वेद्मि शुकोवेत्ति व्यासोवैत्तिवानवा
श्रीधरः सकलं वेत्ति श्री नृसिंह प्रसादतः ॥

श्रीधरकी भावार्थ दीपिका टीका, तथा गीताकी टीका सर्वजन्य प्रसिद्ध है। श्रीचैतन्य तो श्रीधरके बड़े ही भक्त थे।

श्रीनिम्बार्काचार्यने—भेदाभेद वादका प्रचार किया। इनके भाष्यका नाम—"वेदान्त पारिजात सौरभ" है। इनके मतानुसार 'ब्रह्म, जीव और जगत स्वरूपतः और धर्मतः भिन्न-भिन्न हैं। यह भेद और अभेद समभावसे सत्य नित्य और अविरुद्ध है।

पूर्वोक्त वैष्णवाचार्य चतुष्टयके अतिरिक्त श्रीशंकराचार्यका 'शारीरक भाष्य' नामसे एक भाष्य है। आजकल भारतमें इसका प्रचलन ही सर्वाधिक है। इनके मतवाद का नाम 'केवलाद्वैतवाद है"। इनके द्वारा विवर्तवाद, मायावाद, अनिवार्यवाद, निर्विशेषवाद प्रभृति नामोंका प्रचार किया गया। इनके मतानुसार एकमात्र सत्य वस्तु ब्रह्म ही है। 'ब्रह्म' निर्गुण, निर्विशेष और निष्क्रिय है। जीव और जगत ब्रह्मका ही विवर्तमात्र है। इनके सम्बन्धमें यह श्लोक प्रसिद्ध है—

"श्लोकार्धेन प्रवक्ष्यामि यदुक्तं ग्रन्थ कोटिभिः।
ब्रह्मसत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः ॥

---

१. "यमेवैष वृणुते तेन लभ्यः"

श्रीचैतन्यमहाप्रभुने श्रीसार्वभौमके लिए यह कहा था—

जीवेर निस्तार लागि सूत्र कैल व्यास
मायावादि भाष्य शुनिते हय सर्वनाश ।।
परिनामवाद व्यास सूत्रेर सम्मत
अचिन्त्य शक्ति ईश्वर बू जगद्रूपे परिणत
मनिपैछें अविकृते प्रसवे हेयभाव
जगद्रूप हय ईश्वर नवू अविकार ।।
आर ये ये किछू कहे सकलेई कल्पना
स्वतः प्रभान वेद वाक्ये ना करिये लछना ।।
आचार्येर दोष नाहि ईश्वर आज्ञा हईल
अतएव कल्पना करि नास्तिक शास्त्र कैल ।।

पद्मपुराणमें भी ऐसा निर्देश है कि आचार्य शंकरको ईश्वरने ही प्रेरणा दी थी कि मनुष्योंको मुझसे विमुख करो जिससे यह सृष्टि उत्तरोत्तर बढ़े—

स्वागमैः कल्पितैस्त्वंच जनान् मद्धिमुखान् कुरु।१
मा चं गोपय येनस्यात् सृष्टिरेषोत्तरोत्तरा ।।
मायावादमसच्छास्त्रं प्रच्छनां बौद्धमुच्यते ।
मयैव विहितं देवि कलौ ब्राह्मण मूर्तिना ।।२
जीवतत्व शक्ति कृष्ण तत्व शक्तिमान् ।
गीता विष्णु पुराणादि नाहाते प्रमान ।।
(चै. च.)

चैतन्य यह भी स्वीकार करते हैं कि शंकर, शिवरूप थे और भगवान् श्रीकृष्णकी आज्ञासे अवतरित हुए थे।

शंकर स्वयं परम वैष्णव थे। यमुनाष्टक, गोविन्दाष्टक, गोपीगण महिमा, कृष्णलीला, विष्णुसहस्रनाम भाष्य तथा गीता टीकासे भी उनका परम वैष्णभक्तत्व स्वतः सिद्ध है किन्तु उनके भाष्य पठनको श्रीचैतन्यने सर्वनाश करनेवाला माना।

श्रीमद्भागवत ब्रह्म सूत्रका अकृत्रिम भाष्य है। वेद अपने तीन काण्ड़ोंके लिए प्रसिद्ध है, जिन्हें—ज्ञानकाण्ड, कर्मकाण्ड, उपासनाकाण्ड कहते हैं। ज्ञानकाण्डमें ब्रह्मतत्वका प्राधान्यतः विवेचन है। ज्ञानकाण्डका सिद्धात्त ब्रह्मसूत्रोंमें अल्पाक्षरोंमें समुद्दिष्ट है। जब ब्रह्मसूत्रोंकी कदर्थना प्रतीत हुई, तब व्यासने उसके भाष्यका प्रकाश किया। सम्बन्ध प्रयोजन और अभिधेय ये ३ विषय भागवतमें दृष्टिगोचर हैं, मूल वाच्य तत्व सम्बन्ध है। मूल प्राप्त तत्व—प्रयोजन है। प्रयोजन प्राप्ति जन्य कर्तव्य तत्वका निर्धारण ही अभिधेय है।

ब्रह्मसूत्रोंके प्रथम सूत्र १ 'जन्माद्यस्ययतः' की व्याख्यामें बल्देव विद्याभूषणने श्रीकृष्णको सूत्रोंका प्रतिपाद्य लिखा है—

भागवतमें पारमार्थिक वस्तुको प्रतिपाद्य माना है
२ "वेद्यं वास्तवमत्र वस्तु शिवदम्"

परम तत्व अद्वय एवं अखण्ड—ज्ञानके नामसे अभिहित किया है परन्तु वह त्रिविध रूपसे प्रकाशित है—
ब्रह्म—परमात्मा—भगवान्।

* वदन्ति तत्तत्वविदस्तत्वं यज्ज्ञानमद्धयम् ।
ब्रह्मेति परमात्मेति भगवानिति शब्द्यते ।।

यह अखण्ड तत्वका त्रिविध प्रकाश ही कृष्ण है एवं यही भागवत का मुख्य प्रतिपाद्य है।

---

१. पद्मपुराण उत्तर खण्ड सहस्रनाम कथम ६२ अ- ३१ श्लोक
२. चै चरि- मध्य (६। १६६—१८२)

१. ब्रह्मसूत्र (१।१।२)
२- भाग (१।१।२)
* भाग (१।२।११)

5352

ब्रह्मसूत्रोंका यथारूपमें भागवतमें बहुधा उल्लेख भी उनके स्पष्ट प्रभावका द्योतक है। शब्दतः साम्य एवं अर्थतः साम्य पूर्वाध्यायमें लिखा गया है।

२ 'अर्थोऽयं ब्रह्म सूत्राणाम्' भागवतके लिए ही लिखा गया है, अन्य पुराणों के लिए ऐसा कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है और न किसी अन्य पुराणके बारेमें किसी आचार्यने ही कोई प्रमाण दिया है।

३ ब्रह्मसूत्रके 'साम्वरोय' शब्दका अर्थ प्रेम है

४ भागवतमें भी 'मयिनिर्बद्ध हृदया' में लिखा है कि कि प्रीति भक्ति ही भगवानको वश करनेमें समर्थ है।

५ ब्रह्मसूत्र ३।२ में

अभिप्रेय आलोचनके उपक्रममें बलदेवने कृष्ण विषयक अनुरागके हेतु रूप भक्ति (साधन–भक्ति) का प्राधान्य स्वीकार किया है।

२. गरुड़ पुराण
३. ब्रह्मसूत्र (३।३।२८)
४. भाग
५. गोविन्द भाष्य (३।२)

६ भागवतमें "स्मरन्तः स्मारयन्तश्च" में साधन भक्तिसे प्रेमाभक्तिके उदयकी ओर निर्देश किया है।

७ भागवतमें ब्रह्मसूत्र प्रभावका स्पष्ट निर्देश प्राप्त है—

सर्वं वेदान्त सारं हि
श्रीमद्‍भागवतमिष्यते ॥

इससे भागवतको ब्रह्मसूत्रोंका भाष्य कहना उचित ही है।

यही बात गरुड़ पुराणमें वर्णित हैं—

अर्थोऽयं ब्रह्मसूत्राणां भारतार्थ विनिर्णयः
गायत्री भाष्य रूपो सौ वेदार्थ परिवृंहितः।

एवं यही भाव भागवतमें भी स्पष्ट उल्लिखित है—

सर्वं वेदान्त सारं हि श्रीमद्‍भागवतमिष्यते ॥
(भा. १२।१३।१२)

अतः श्रीमद्‍भागवत वेदान्त शास्त्रोंका सारांश सिद्ध है।

६. भाग (११।३।३२)
७. भाग (१२।१३।१२)

टीकाकारोंकी श्रुतियां

वीरराघवाचार्य

द्वितीय स्कन्ध

अध्याय-श्लोक	
१।५	कारणं तु-ध्येयं
	आत्मावारे
	अथातो
१।७	तमेवं
१।३३	नाम रूपे
२।८	यत्तुवेतत्
२।१६	तस्य तावदेव
२ २२	तासांमूर्द्धनिं
२।२२	तेर्चिषि
२।२२	न तस्य प्राणा
२।२४	यथा पुष्कर
२।२४	अथ चक्राच
२।२४	ते न प्रद्योते
२।२४	अग्निज्योतिः
२।२४	पुण्य पापो विधूय
२।२८	पृथिवी मंडं
२।३१	क्षयं तमस्य
२।३२	ये चेमेऽरण्ये
२।३५	मनसा तु
४।१७	१२।४४
७।७	१३।५
७।१४	१४।११
७।२८	१४।२६
८।१५	१६।७
९।३६	१६।१३
१०।९	१६।१८

२।३५	सत्यं ज्ञानमनन्तं
२।३५	सदेव सौम्येदमग्र
४।१६	ब्रह्मविदाप्नोति
५।१५	तस्य ह्-वा
५।१५	सर्वे वेदा
५।१५	चन्द्रमामनसो
५।३५	सहस्त्रशीर्षा
६।१२	
६।१८	
६।१९	
६।२०	
७।१०	स्वे महिम्नि
७।११	तस्य ह्-वा
७।४०	विष्णो
	तृतीय स्कन्ध
७।०७	सत्यं ज्ञान
	विज्ञान घन एव
	परमं सौम्यं
	तमेवानुविशतीति
९।२६	तदात्मान स्वयं
९।३१	अर्हसत्यं
९।७५	सत्यंज्ञान
१०।९	एताभूत मात्रा
२१।३४	२८।३८
२५।४२	३२।७
२६।७	**चतुर्थ स्कन्ध**
२६।८	३३।३
२६।४३	१।३०
२५।५८	२।२२

२८।२६	**पंचम स्कन्ध**	७।४७	५।३७
७।१९	२।२	८।५३ सू.	५।३८
७।२५	६।५	९।११ सू.	५।३१
७।२६	७।१३	९।३० सू.	५।४०
७।३९	१०।१४	९ ३२	५।४१
७।४०	१०।१५	९।४७	६।११
७।४६	१२।३	१०।६६	७।२५
७।५०	१५।७	११।१३	७।२६
७।५४	१७।११	१२।१४	७।२७
९।७	१८।१३	१३।१० सू.	१८।५
९।१३ सू.	१८।२६	१३।२६	१९।३९
९।१६	१८।३५	१४।२	१९।४१
११।२३	१८।३६	१४।३७	२४।२८
११।२७	१९।१२ सू.	१५।९	२४।५५
१२।४	१९।२४	१५।११ सू.	२४।५०
१३।८	२०।३२	१५।४१	**नवम स्कन्ध**
२०।८ सू.	२१।५	१५।४५	१।८
२०।३०	२२।११	१५।५०	१।९
२१।२८	२६।७	१५।५१	२।१५
२२।२१	**षष्ठ स्कन्ध**	१५।६६	२ १७ सू.
२२।३७	१।१	**सप्तम स्कन्ध**	४।८
२४।३७	१।१३	**अष्टम स्कन्ध**	४।४०
२४।४३	१।४०	१।१२	५।३
२४।६१	१।४२ सू.	२।३२	७।२७
२५।८	३।११	३।५	१४।२२
२६।१	३।३२	३।१६	१४।४४
२८।३२	६।१ सू.	३।३०	१९।२९
२८।५८	६।२	५ २६	**दशम स्कन्ध**
२९।२४	६।२२	५।२९	२।२६
२९।४५	६।२६	५।३२	२।३६
२९।४८	७।२४	५।३३	३।१३ सू.
२९।५०	७।३७	५।३४	३।१४
२९।६८	७।३८	५ ३५ सू.	३।१५
२९।७३	७।४०	५।३६	३।१९

३।२०	१६।१२	५२।३६	८४।२६
३।२४	२०।२१	६०।११	८४।३६
३।२५	५१।२६	७४।२१	८५।४
१४।२३			

८७. सत्यं ज्ञान मनन्तं
सर्वं खल्विदं ब्रह्म
सर्वे वेदायत्पद
वेदैश्च सर्वैरहमेववेद्य
अनेन जीवेनात्मनाऽनुप्रविश्य
नाम रूपयो निर्वहितति
सर्वाणि रूपाणि विचिन्त्यधीरः
तत्सृष्ट्वा तदेवानुप्राविशत
सौम्येकेन मृत्पिण्डेन
तदैक्षत
ऐतदात्म्यमिदं सर्वं
आत्मनः आकाशः सम्भूतः
तस्यैष एव शारीर आत्मा
सवा एष पुरुष विधएव
तस्य प्रियमेव
तत्सृष्ट्वा तदनु
यज्ञेन यज्ञमयजन्त
श्रोतव्यो मन्तव्यो
यतो वाचो
पुमान्न देवो न नरः
नयत्येह कर्मचितो लोकः
परास्य शक्तिर्विविधैव
रसो वै रसः ३४ मी
ये के चास्मात् लोकात् प्रयन्ति
तस्मात् लोकात्
स्वात्मना चोत्तरयोः सू.
नेह नानास्ति
यथा सौम्येकेन

८८।१	६।१५	१४।३३	**द्वादश स्कन्ध**
८८।४	६।१३	१५।३६	१।४
एकादश स्कन्ध	६।१७	१६।२६	१।२३
३।२०	६।२१	१७।२७	१।२७
३।३६	१०।११	१६।१७	५।११
४।५	१०।१२	२।१६	१०।३१
४।७	१३।३८	२४।२२	११।१४
६।१४	१४।२५	२६।४६	

दशम वेदस्तुति की श्रीधरी-श्रुतियां

श्रुति

१०।८७-२ तत्त्वमसि
निर्गुणं निष्क्रियं
३. तः सर्वज्ञः सर्ववित्
न चासंगोह्ययं पुरुषः
तत्वौपनिषदं
मनोवाचो
विष्णोर्नुकं वीर्याणि
यन्मनोनु मनुते
स एव यद् दृग्विषये
न हृद्देश तिष्ठति
परांचखानिव्यतृणत्
१४. यतोवा
येन जातानि
यत्प्रयन्त्यमि
सत्यं ज्ञान
विज्ञानं ब्रह्म
१५. यत इन्द्रो जातो
एकं सत्
वाचारम्मणं
१६. तद्यथापुष्करपलाशे
विष्णोर्नुकं
सवाएषपुरुषो (तत्त्०)
१८. उदरं ब्रह्म
हृदयं ब्रह्म
ब्रह्माद्वैता
यदिदमस्मिन् ब्रह्मपुरे
शतंचैका च हृदयस्य
१९. एकोदेवः सर्व
तत्सृट्वा तदेवानुप्राविशत्
२०. बुद्धेर्गुणेनात्म गुणेन
य आत्मनि तिष्ठन्
सर्व एवात्मनो
यस्य देवे पराभक्तिः
२१. यं सर्वेदेवा नमन्ति
२२. आराममस्य पश्यन्ति
असूयानामतेलोका
२४. यो ब्रह्मणं विदधाति
न तंविदाथ यद्ब्रह्म
कोअद्धावेद
कुत आजाता
अर्वागदेवी
यतोवाचो
२५. अक्षयर्यंहि चाहु;
ब्रह्ममैवसन्
सदैवसौम्य
अनीशया
एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म
नेहनानास्ति किंचन
यथेह कर्म चितोलोकः
एवमेवामुत्र
आदित्यवर्णं तमसः
सयथा सैंध्रवद्यनो
अरेयमात्मानचरते
नैषातर्केणमतिरापनेया
२६. असतोऽधि
२७. तस्यवाक् तन्तिर्नामानि
२७. यमेवैषवृणुते
२८. अपाणिपादो
भीषास्याद्वातः

२९. यथाग्नेः क्षुद्राः
३०. यस्यामतं तस्यमतं
३१. अग्नेः क्षुद्राः
एकमेवाद्वितीयं
अजामेकां
अविनाशीत्र
यथा नद्यः स्यन्दमाना
यथासौम्य मधु मधुकृतो
३२. परीत्य भूतानि
३३. तद्विज्ञानार्थं
आचार्यवान्
३४. परीक्ष्यलोकान्
३६. अक्षय्यं हि
अपामसोम
तद्यथेहकर्माचितो
एवमेवाच
तस्माद्वाएतस्मात्
३७. यद्यस्मादिदं
सदेवसौम्येतद्
आत्मा वा इदेमेक
नासद् आसीन्न
यथासौम्यैकेनात्
वाचारम्भणं
यथा एकेन लोह मणिना
यथा एकेन नखनिकृन्तनेन
३८. द्वासुपर्णा सयुजा
अजामेका
३९. कामान्यः
४०. एषनित्यो
४१, यदूर्ध्वमार्गि
अस्थूलमनणु

जीव गोस्वामी

यस्य ज्ञान मयं तपः १
न तस्य कार्यं करणं च विद्यते

यतो वाचो निवर्तन्ते
तत्तुसमन्वयात १।१।४ सू.
शास्त्रयोनित्वात्
श्रुतेस्तु शब्दमूलकत्वात्
तर्काप्रतिष्ठानात्
तं त्वौपनिषदं पुरुषं पृच्छामि
यः सर्वज्ञः सर्ववित् यस्यज्ञानमयंतपः
सत्यंज्ञानमनन्तं ब्रह्म
विज्ञानमानन्दं ब्रह्म
एतस्यैवानन्दस्यान्यानि
कोह्येवान्यात्
आनन्दाद्धयेव खल्विमानि भूतानि नं०
नतस्य कार्यं करणञ्चश्रूयते
तत्तेजोऽसृजत्
सर्वकामः सर्वरसः
यंसर्वेदेवा नमन्ति (नृ. सि. वा.)
सदेव सौम्येदण्ड
आनन्द ब्रह्मणो रूपम्
वेदाऽमेतं पुरुषं महान्तं
यमैवैषवृणुते
एकोहवैनारायण आसीत्०
यस्यपृथिवी शरीरं
ओमित्येतद् ब्रह्मणो नेदिष्ट
तंत्वौपनिषदं पृच्छामि
प्रणवोह्यपरं ब्रह्म
यतोवाचः
यो सौ सर्वेषु वेदेषु तिष्ठति (गो. ता)
प्राणं देवा
तस्यै व शरीर आत्मा
तस्य यजुरेवशिरः
तस्याद्वाएतस्मान्मनोस्याद-यो.
तस्य श्रद्धैवशिरः
विज्ञानं यज्ञंतनुते
तस्माद्वाएतस्मात् विज्ञानमया०
तदप्येषश्लोको भवति अहममेव०

तस्यैष एव शारीर आत्मा
तस्माद्वा एतस्मादात्मनः सकाशात्०
यच्चानन्द मयान्तेऽपि तस्येष्ट एव०
यो विज्ञानं तिष्ठन्
सोऽकामयत वहुस्यां प्रजायेय
सतपोनप्यतः
सतपस्तप्त्वा इदंसर्वमसृजत्
रसोवैसः
यद्वस्योपक्रान्तं तस्यवात्मत्वं
तस्याद्वा एतस्मात्
(आनन्द मयोऽभ्यासात्) १।१।१३
(नेतरोऽनुपपत्तेः)
यदापश्चयः पश्येत रुक्मवर्ण
यन्मयं ब्रह्मपरमं
यस्य पृथिवी शरीरं
कोह्येवान्यत्
रसोवैसः
ब्रह्मणोहि प्रतिष्ठाहं
असन्नेवसभवति
नित्योऽनित्यानां
(श्रुतेस्तु) सू. १५
त दन्यत्वाऽरम्भण शब्दादिश्च
इन्द्रो यतो वसितस्य राजा
विष्णोर्नुकं वीर्याणि प्रवोचं १६
यंसर्वेदेवा नमन्ति
अन्धेनतमसा १७
ब्रह्मविदाप्नोति (तं. ३७)
सवाएषपुरुषोऽन्नरसमय
अन्नाद्वै प्रजाः प्रजायन्ते
तस्माद्वाएतस्मात्०
महान् प्रभुर्वैपुरुषः (१८)
(विकारावर्ति चताहिदर्शनयति न्यायात्
ब्रह्मणोंश भूतस्तथेतरो (मोता) २०
द्वासुपर्णा सयुजासखाया
मायांनुप्रहर्ति विधाद्

यो योनिं
यंसर्वे देवानमन्ति
मुक्ताह्येनमुपासते
(मुक्तोपसृत्य व्यपदेशात् (ब्र. सू.)
अम्बुवदग्रहणात्
(वृद्धिह्रास भाक्त्वामन्तर्भावात्)
अथपुनरेव नारायण सोऽन्यं धाम २६
यस्त्वविज्ञानवान् भवति युक्तेनमनसासह
यस्तुविज्ञानवान् भवति
यस्त्वविज्ञानवान्नर
यस्तुविज्ञानवान् भवति
विज्ञान सारथिर्यस्तु
इन्द्रियेभ्यः पराह्यर्थाः
महतः परमव्यक्तं
(ईक्षतेनाशब्दम् १।१।५
सऐक्षत २८
यथाग्नेः क्षुद्रा
अक्षरात् परतः परः
असद्वा इसमग्र
न सन्दृशे तिष्ठति
न चक्षुमापश्यति
यदेवैषवृणुते
मद्रूपमद्वयं ब्रह्म
यथा प्रकाशत्येक ३०
यतोवाइमानि ३६
सदेवसौम्येदमग्र ३१
अरेऽस्यमहतोभूतस्य ४३

सनातन गोस्वामी

८७।२४ आनन्दमयोऽभ्यासात् (सू)
८७।२८ अपाणिपाद इति
३० रसोवैसः रसंह्येवायंलब्ध्वाऽनन्दी भवति
४१ (क) एको वशीसर्वगः कृष्णईड्य
एकोऽपिसन् बहुधायोविभाति (तापनी)
तेध्यान योगान्द्रगतां च पश्यन्
गोप वेषो मे पुरस्तात् आविर्बभूव

४२ (ड) तमेकं गोविन्दं सच्चिदानन्द
तवाभ्यास्त न्युन्नमिगमध्ये
तत्रहिरामस्य राममूर्तिः प्रद्युम्नस्य प्रद्युम्न मूर्तिः
अनिरुद्धस्यानिरुद्ध मूर्तिः
(ट) यावीरवी कन्या चित्र आयुस्सरस्वती
वीरपत्नीधियन्द्राः या
(ठ) जजान एव व्यबाधस्पृथः प्रापश्यत्
प्राप्यमथुराँ पुरींरम्यादि सेवितां
(थ) न तस्य कार्यं करणं च विद्यते
(द) परास्यशक्तिर्विविधैव श्रूयते
(न) असावतवरतं मेध्यतः स्तुतः

विश्वनाथ चक्रवर्ती

सोऽचाभवत १४
अक्ष व्यंचातुर्मास्य याजिनः
तमेवविदित्वा
शतं चैका च हृदयस्य नाड्याः
भक्तिरेवैनं नयति सच्चिदानन्दैकरसे
नित्यं विज्ञानमानन्दं ब्रह्म
एकोदेवः सर्व भूतेषु गूढ़ः
यः सर्वज्ञः सर्ववित्
यस्य ज्ञानमयं तपः
सर्वस्य वशी सर्वस्येशानः
यः पृथिव्यां तिष्ठन्
सोऽकामयत बहुस्यां
सईक्षत
तत्तेजोऽसृजत्
सत्यं विज्ञानमानदं ब्रह्म
अक्षटयं वै
वाचारम्मणं विकारो १५
विष्णोर्नुकं वीर्याणि १६
एकावशीसर्वगः कृष्णईड्य
एकोऽपिसन् बहुधायो विभाति
नित्योनित्यानां १७

सएवायम् पुरुषो
तस्माद्धा (तै)
यो विज्ञाने तिष्ठन्
रसोवैसः
महान् प्रभुर्वै पुरुषः १८
शतं चैकाचा
श्रोतव्योमन्तव्यो १९
आत्मावा अरे द्रष्टव्यः २३
यमेवैषवृणुते
व्रजस्त्रीजन (नो. ता.)
अविद्यायान्तरे वर्तमानाः २५
असतोऽधिमनो ऽ सृज्यत २६
असद्राइदमग्र आसीत
असतो मनोऽधिसृज्यत २७
यस्यदेवेपराभक्तिः २७
नित्योनित्यानां
जुष्टं यदा पश्यत्यन्
यथाग्निः २९
यस्यामतम् तस्यमतं ३०
अजोदेब्या ३१
अजोह्येको
यथा नद्यः स्यन्दमानाः
यथा सौम्य मधु मधुः
सौम्य इमाः सर्व प्रजाः
एषोऽपुरात्मा ३२
येन संसरते पुमान्
नित्यो नित्यानां
एको बहूनां योविदधा
एतद्विष्णोः परंपद्म ३२
मथुरायां स्थितिर्ब्रह्मन् ३५
(गो. ता.)
यथोर्णनाभि : ३६
तैरहं पूजनीयोवै ४०
अस्थूलमनणु ४१
तस्मात् कृष्ण एव०– ४६ गो. ता.

विजयध्वज

सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति १
केवलो निर्गुणश्च
तुवि ग्रीवो वपोदरः
मनसा अग्रे २
स्वध्याय प्रवचने
सत्येन लभ्य;
तमेवं विद्वान्
वृहन्तो ह्योस्मिन् गुणाः ३
वृहहि दृष्टमवशोषतं—१५
(कालकायनश्रुतिः)
(निवद्वाय वृहद्रुपलः)
तम आसीत्
स एषासान्नं
(इन्द्रद्युम्न श्रुतिः)
त्यजन्तितापं यद्दते भवत्कथा
अनिशमनुश्वसन्त्य सूखोद्धरितास्तव १७
रिपवो (पैङ्गीश्रुत्यर्थः) दृतयइव)
दृतिवत्तमसिप्रविष्टाः तवगुण प्रथमः परिहायतमः
पर्यन्ति ते पदमजस्रमनन्त सुखम्"

१८. तंप्रपदाभ्यां प्रापद्यत ब्रहमेमें पुरुषंयत्प्रपदाभ्यां
प्रापद्यत ब्रहमेमें पुरुषं तस्मात्प्रपेदे तस्मात् प्रपेद
इत्याक्षतेशकाः खुरा उरंस्त्रह्मः शार्कराक्षा
कस्मिन् वह मुत्क्रान्ते—
प्राण एवैनंमनु प्रविशति (हिरण्यनाभश्रुतिः)

१९. यो जीववद्योनिषु भात्यनन्तो मूढैस्तद्योगै
र्भरताधिगम्यः। निचाय्यतं शाश्वतमात्मसंस्थं
तदिच्छवोत्मन्यदधुर्महान्तः (कमठश्रुतिः)

२१. प्रक्रमवत् स्वसत्कृतंस्त्वेंषु पुरुषेषु
सर्वासु सुधीषुस्थित्वा त्वां तु वहिरन्तर मच्चरणेऽपि
तत्रपुरुष वदन्त्यखिल शक्ति धृतः स्वकृतन्
निषुसीद्यगणयते गणेपुत्वामाहुर्विप्रतयं कवीनां
इति श्रुति प्रश्रयप्रायगर्भस्य प्रश्रयवदित्यस्यायमर्थः

२३. नपरिलषन्ति केचिदपवर्गं (पाठांन्तर)
नकिंचिदभिवाञ्छन्ति यतयः सुसदाश्रयाः
प्रेष्ठस्य रमणस्याप्त्य प्रियव देह दृष्टयः।

२४. असुर्यानामतेलोका अन्धेन तमसावृताः
तांस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनोजनाः।

२५. त्वं वेत्थ नापरस्ते स्वरूपं ननित्य
वाङ्भागगोग प्रियस्य कुतो ब्रह्मा
प्राप्त लोकश्च देवास्थताप्राप्ता
जनिमन्तो यतोऽस्मात् ।

२६. ना सदासीन्नोसदासीत्तदानीं नासीदजो
नो व्योमापरो यत् किमत्वरीवः
कुहकस्य शर्मन्नम्भः कियासीःद्गहनं गभीर भी

२७. सत्वादिकं देह यथो मनश्च सत्वादि
वद्धश्चवदन्त्यसन्त परं पुमांसं
न सुरास्तुर्तैहि जीवः सुदृष्टाः परमार्थरूपः
त्रैगुण्यदेहेन्द्रियंकामा (चैतन्यविवेके)

२८ सर्वगं येप्रपश्यन्ति ब्रह्मानन्दमजाक्षरम्
एकमेवाद्वयं नित्यं निऋतेस्तेशिरोगतोः
(यथैव कुण्डलं त्यक्त्वा नादातुं कनकांशकम
तस्यैव तदवस्यत्वात् केवला भेदतः स्फुटम्
एवं सुरासुरनरेष्वस्थितो भगवान् हरिः
नैव भेदेन मन्तव्यो जीव भेदे तु सत्यपि
ये तथाभिन्न शेषं पश्यन्ति परमर्षयः
ऋतप्राप्तिविरुद्ध त्वात् संसार निऋते शिरः)
(गारुड़े)

२९. परिवयसे पशूनिव
(हम यह पौराणिक श्लोक होने परभी श्रुतिमान रहे हैं)

३०. वर्ष भुजोखिल यह भी श्लोक है
तदेवं विद्वान्
खण्डाधीशाः सार्वभौमस्य यद्वंष्येशाद्याः
कुर्वंते तेऽनु शास्ति' त्वं मुक्तिदो बन्ध दोऽतो
मतो नस्त्वं ज्ञानदोऽज्ञानदंश्चासि विष्णोः
(शाण्डिल्य श्रुतेः)

आत्मानंमुक्तिदं विष्णुंयदि पुंसउदीक्षयेत्
सुप्रसन्नस्तथा बन्धस्ततएवेति सेत्स्येति ।
इति स्मृति गृहीत श्लोकस्यार्थमत्र)

३१. एकमेवाद्वितीयम्
नेहनानास्ति किंचन
न तत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते
तथा द्रवते चापि स्वतन्त्रो नापरो
स्वतन्त्रो नापरः कश्चिद्विष्णोः प्राणपतेः प्रभोः

३२. मुच्यते तत्वसम्बुद्धादाचार्यात् पुरुषो भवात्
एतावेव स्वतो बद्धौ परमः प्रहृतिस्तथा
(कलापश्रुत्यर्थः)
देशतः कालतश्चैव सम व्याप्तावजावुभौ
ताभ्यामुभय योगाभ्यां जायन्ते पुरुषाः परे ॥
(कौटल्य श्रुति)
सम्यग्ज्ञानवदाचार्यान् मुच्यते पुरुषो भवात्
द्वावेव नित्य मुक्तौतु परम प्रहृतिस्तथा ।

३३. यो नः पिता जनिता याविधाता धामानिवेद
भुवनानि विश्वा । योदेवानां नामधी एकएवतं
सम्प्रश्नं भुवनायन्त्यन्यात अयाजनाद्रविणं समस्या
ऋषयः पूर्वे जनितारो न भूता असूर्ते सूर्ते रजसि
निषत्ते मे भूतानि सम कृण्वन्निमानि
ब्रह्मेशेन्द्रादि सन्नाम्नां येर्थभूतागुणामताः
पूर्ती शितृत्व द्रष्टत्व प्रमुखास्ते हरेः सदा ॥
अतक्ष्तुसर्व नामासौ सर्वकर्ता च केशवः
त्वयितद्धय श्लोक है ।
"ततेतिनात" श्रुतिः
आनन्दत्वादनाभास वुत्कृष्टत्वादुनामकः
एतन्नामद्वयं विष्णो ज्ञात्वा पापैः प्रमुच्यते ॥
नाम्नः सम्बुद्धिरसूचि ये गुणाः

३४. यस्ये देव पराभक्तिर्यथादेवे तथा गुरौ ।
तस्यैतेकथिता त्यर्था प्रकाशन्ते महात्मनः ॥
देवा अपिस्कुयोनाद्यायतन्ते सर्वसाधनैः ।
पुत्रदारादिभिः सार्धं नोच्वसन्तीह संसृतो
गुरोऽरनुग्रहमृते साधनं न हरेः प्रियम् ।
गुरूपदेशात्तुर्हरिं प्राप्नोत्येवनसंशयः । इत्यादिस्मृति

३५. नास्त्यकृतः कृतेन

३६. ब्रह्मा ज्ञात्वेति लोक प्रवृत्ति प्रवर्ततां
कोनु मोक्षं ददाति अतोब्रह्मोपासते
साधुधीरा नाहंभावस्तेषु रुद्राधिवास ॥
महाभाग्यं तु कैवल्यं ज्ञानांकः प्रहास्यति ।
अतः सन्तोविजानन्ति हरिं तेत्वनहंकृताः ॥
इतिसंदितिश्लोकस्य

३७. यज्जीवमीशं प्रवदन्ति तर्कैस्तच्चेश्वरो
वचनं सन्दधाति
नासीदादौ मरणे नो भविष्यन्
मृषाततो हीशितृत्वं स्वयेषु (श्रु)
अनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति ।
अन्धेनैवनीयमानाः यथान्धा ।

३८. ये जगत् प्रवदन्त्ज्ञा जीवादन्येश वर्जितन्
तेषामपितु तां वाचमीश एव ददात्यजेः
न च तर्कैर्भवेदाशो जीवो वेद विरोधितः ॥
(इतिस्मृत्यर्थवेन श्रुत्यन्तरमुद्धतम्)

३९. स्मरन् ब्रह्म गुणांन्नित्यं मुक्तौब्रह्मसरूपतां
दुर्मनां प्रकृतिं त्यक्त्वा हृत्वा चान्यां दुरन्वयान्
याति तच्च परेशानात् सहि पूज्यो य पूजकः
तस्यैकस्य स्वतन्त्रत्वात् स चानन्त गुणो विभुः ।

४ . यथा का भयनानो योकामो निष्काम
निषिद्ध काकयुक्तानांमसतां तुविशेषतः
दुर्ज्ञेयो भगवान् विष्णुर्हृदिस्थोऽस्मृत हारवत्

४१. जानाति प्रकृतिर्विष्णु ज्ञेयोविष्णुश्च निर्गुणः ।
तावुभौन विजानन्ति ऋते ब्रह्म परंपराम् ॥
(महोपनिषद)
अन्ये सर्वे श्रिथा बद्धा. श्रीर्बद्धा विष्णु नैवतु
बन्धश्चविष्णु तन्त्रत्वं मुक्तानाश्चश्रियस्तथा ॥
(इतिगारुड़)

वल्लभाचार्य

८ श्लोक
सर्वे वेदायत्पद १

नेहनानास्ति—२
अन्येनप्राणा:
(ब्रह्मविधीप्रतिया)
आवृत्तिरसकृदुपदेशात् म. १।१)
अरूपमस्पर्श १४
यत्येवाइमानि—१५
अमृतंवैवाचावदति
शान्तोदान्त—१६
योन: शपा—१७
यमे न: सपत्न:
यो मां द्वेष्टि
यज्ञेनयज्ञ
तस्यपुरुष
तत्सृष्ट्वा—१६
(गुणं प्रतिष्ठा सू. १।२।११)
सत्वताच्च
कोह्येवान्यत—२०
सर्वे वेदा
अस्यैवानकस्य
यस्यामतं—२४
नासदासीद
अक्षम्य्यंहवै—२५
आदित्यवर्णं
य: सर्वश:
सत्यं ज्ञान
स आत्मानं—२६
तत्सृष्ट्वा
वाङ्मनानि—२८
यतोवाचो—४१
असङ्गोह्ययं—२९
यथावृक्षस्य—३०
ताभिन्नाकाश
एतस्यैवक्षररस्य
(साच प्रशासनात १।३।१०)

शुकदेव

तत्त्वौपनिषद १
शास्त्रयोनित्वात (सू.)
१।१।३
जुष्टं पश्यत्यन्यमीशं
(तन्निष्ठस्य मोक्षोपदेशात् (१।१।७)
निष्कलं निष्क्रियं
केवलो निर्गुणश्च
अस्थूलमनणु
एतस्माज्जायतें प्राण—२
यतोवाइमानि
आनन्दाद्धयेव
(अथातोब्रह्म जिज्ञासा) १।१।१
यतो वाचो निवर्तन्ते
सर्वे वेदा
सर्वगन्ध:
य: सर्वज्ञ:
नेह नानास्ति
परास्य शक्ति:
(अधिकन्तुभेद निर्देशात् (२।१।२२)
जीवोल्प शक्ति: (भालवेत्रश्रु)
एषोणुरात्मा
(तद्गुणसारत्वात् २।३।२९)
(ज्ञात एव २।३।२९)
वहिर्द्दृष्टे
यथोद्यानखनतात्
तथाहेय गुण०
यथा न क्रियते
सत्यं ज्ञान
स्वाभाविकी
हिरण्य गर्भ: सम १५
(तत्तुसमन्वयात्)
योवायो तिष्ठन्
तमेवभान्तं

यतोवाइमाति
(जन्माद्यस्य सू.)
यथोर्णनाभिः
सन्मूलाः
वाचारम्भणं
त्यजन्ति तापं १६ (इन्द्रद्युम्नपु) १६
यथापुष्कर १६
यो नः शपादशपत
योमां द्वेष्टि
यज्ञेनयज्ञ
तस्य पुरुष
अनिशमनु—१७
आनन्दाद्ह्येव
उदरं ब्रह्म (शांर्कसश्रु) १८
ये चारुणयस्ते
तयोर्हव
एकोदेवः—१९
योजीववत्—२० (कमठत्रु)
अंशोह्येष परस्य
(अंशोनाना व्यपदेशात् सू.)
ब्रह्मदाशा
भक्तिवशः पुरुषो—२१ माठर श्रु
सर्वस्य शरणं सुहृत्—२२
योऽन्यां देवतामुपास्ते (छान्दां)
तमीश्वराणां
नतस्यकार्यं
एकोहवै
जीवशावाभासेन
आत्मनि श्रुते
अजोह्येको
प्रहृति पुरुषं
सदेवसौम्य
(अथातो ब्रह्म सं) २३
इदानीं आत्मावा अरे
यतोवाचो—२४

विष्णोर्नुकं
यो ब्रह्माणं
वेदोवा
द्वावजावीशनीशो —२५
स एवैक उद्भवे
एषदेवो०
नेहनानास्ति
सन्मूलाः—२६
भोक्ताभोग्यं
श्रुण्वन्तोऽपिवहवोयं न विदुः —२७
यमैवेष
सर्वनेयं प्रपश्यन्ति
वायति नाद्रयः
नैनं सामान्यृचो
नछन्दांसि
स्वराद ईशः —२८
अपाणिपादौ
स्वाभाविकी
तेनु शास्तित्वं
तदैक्षवहुस्यान् —२९
(अंलमत उपपत्ते, सू ३।१२।३७
अणोरणीयान्
संसारवन्ध
अक्षरात् परतः
लीलो द्वावहरि —३०
(अशोनानाव्यपदेशात् २-३-४२)
अन्तः प्रविष्ट
अणुह्येष आत्मा
अणु तश्चक्षुपः
यस्यामतं
अजावेका —३१
तस्माद्वा
यथाग्निः
यथासौम्य
यथानधः (प्रश्नो)

संसारवन्ध –३२
अविद्यायां (मुण्डक)
यं सर्वेदेवा (नृसिंह)
विश्वम्भरं महाबिष्णु (रामतापनी)
यस्मात् स्व भक्तानां
सत्पुण्डरीक नयनं–भो. ता.
समित्पाणिः—३३
यस्यदेवे
मथूरायां —३५
सदेव —३६
तदैक्षत
नारायणाज्जायते
नैषामतिः
यथोर्णनाभिः
सौम्येनाः सर्वाः
ऊर्ध्व मूलोर्वाक्
अविद्यायामन्तरे
यः सर्वज्ञः —३७
स्वाभाविकी
यं देव देवकी
य आत्माऽपहत
नेहनानास्ति
असत्यमाहु
तस्माद्वा
तमीश्वराणां –३८
परास्य शक्तिः
सर्वे वेदा—४०
सर्वस्यवशी
तमेवभान्तं
य ऊर्ध्व मार्गे—४१
सत्यं ज्ञान
स्वाभाविकी—४६
सऐक्षत
अन्तःप्रविषः—५०
तस्यतावदेवचिरं
न तस्य कश्चित जनिता
संसारवन्ध

श्रीनिवास सूरी

एषोणुरात्मा
क्षरात्मा नातीशते
तदन्तः प्रविश्य
सच्च
एषसर्वभूता
सदेवसौम्य
आत्मा नमामी
न चतेतनमश्चा०
नोरनाद्यन्त
यतोवाचो
आनन्दं ब्रह्मणो
तस्य वाएतस्य महतो १२
स्वाभाविकी १४
प्रधान क्षेत्रज्ञः
यः पृथिव्यां
यस्य पृथिवी
य आत्मनि
यस्यात्माशरीरं
य आत्मानमन्तरो
यमयति यस्याव्यक्त
एकोनारायणः
यतोवाइमानि
यस्याक्षरं शरीरं
सत्यं ज्ञानमनत
सदेवसौम्य १५
वाचारम्भणं
तस्माद्वा एतस्मात् १७
सवा एष पुरुषः
तस्य प्रियमेव शिरः
तदनुप्रविश्य

एष सर्व भूतान्तरात्मा
(वैश्वानरः साधारयशब्दाविशेषात)
१।२।२५
शतंचैका च
तदनुप्रविश्य १६
(अंशंनानात्वव्यपदेशात्) स.
दधातिसक्रन्मानः-२१
तद्धैदन्तं ह्यव्याहृत २५
क्षरं प्रधानं
तद्यथेह
ऐतदात्म्यमिदं
विषयाविष्टः-२६
मनस्सतुविशुद्धेन
तत्सृष्ट्वा
यस्यात्मा शरीरं
य आत्मानमन्तरा
यस्याव्यक्तं शरीरं
तदात्यागं स्वयमनुसत
तद्वैतत् सुकृतं
रसोवैसः
आदित्यवर्ण २८
परभयत्राति
भीषास्माद्वातः
नाययात्मा प्रवचनेन २९
यमेवैषवृणते
(उतक्रान्ति नत्यागती नामा ३०
सू. २।३।२३
तेन प्रद्योतेनैवआत्मा
अन्तः प्रविष्टः
यथानद्यः ३१
नित्योनित्यानां
प्रकृति पुरुषं चैव
सर्व खल्विदं ब्रह्म
न तत्र रथा न रथ ३६
सूर्याचन्द्रमसौ ३७
वाचारम्भणो
उततमारेश
वाचारंमणं
यथा सोम्येकेन लोह
यथा सौम्येकेन नाव
अन्तः प्रविष्टः
येनाश्रुतं
ज्ञाज्ञोद्वावनीशो ३८
परास्य शक्तिः
भोक्तंचभोग्यं ४१
यस्यपृथिवी

राधारमण

१. आस्थूलत्र नव्य ह्रस्वदीर्घ
२. अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्
सर्व खाल्विदं ब्रह्म
१७. ब्रह्मविदाप्नोति
सवा एष पुरुषोऽन्न
२६. असद्वाइदमग्र

कविचूड़ामणि

यः सर्वज्ञः सर्ववित यस्य ज्ञानमयन्तपः
सर्वस्य वशी सर्वस्येशानः
यः पृथिवव्यां तिष्ठन् पृथिव्या अन्तरः
सोऽकामयत बहुस्यां
स ऐक्षत्
सत्यं ज्ञानमनन्तं व्रह्म
यः सर्वज्ञः सर्ववित्
एतस्य वा अक्षरस्य प्रशासने
ऋचंवाचंप्रपद्ये
मनोवाचं प्राण तान्यात्मने
एवं विदित्वा मुनिर्भवत्येतमेव
१४. यो सौसर्वेषु वेदेषु तिष्ठति (नो. ता.)
तस्माद्वा

नेह नानास्ति
वेदान्तकृद्
यतो वा इमानि
यो ब्रह्माणं विदधाति
य आत्मनि तिष्ठन्
सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म
यः सर्वज्ञः
१५. इन्द्रोयातो वसितस्य
अग्निर्मूर्द्धा
१६. श्रृणु तस्य ब्रह्मण ज्ञान
यथा पुष्कर पलाशे
१७. असुर्यानाम
ब्रह्मविदाप्नोति (वैं)
सवाएष
तस्याद्वा
(प्राणमय) यएषप्राणमयः
(पुरुष) मनोमयः
(विज्ञानमय) तस्माद्वाएतस्मानानोमया-
दन्योऽन्तर
विज्ञानं यज्ञं तनुते
तस्माद्वा एवस्मात्—आनन्दमयः
यः प्राणमन्तरो
य आत्मनि तिष्ठन्
योऽन्तश्चरति
१८ शतं चैकाहृदयस्य
१९. एकोदेवः
२०. चरणं पवित्रं
२१. यं सर्वे देवा नमन्ति
२२. आराममस्य पश्यन्ति
असूर्यानाम
२३. न वा अरे सर्वस्य
२५. सदेवसौम्य
अथयो आत्मकामो
समानवृक्षें पुरुषो
एक एवहि
२६. असतोऽधि अन्योऽसृजत्
२७. तस्यवाकतन्ति
नायमात्मा
२८. अपाणिपादो जवनो
प्राणस्य प्राण
भीषास्माद्वातः
२९. असद्वा
यथाग्निः
३०. आराग्रमात्रोह्य परो
अत्य तिष्ठत्
अविधयोमृत्यु
काममयो यं पुरुषः
तमेव विदित्वा
एक एवहि भूतात्मा
यस्यामतं मतं
यः पृथिव्यां तिष्ठन्
३१. अजामेका
तस्माद्वा
यथानद्यः
३२. आचार्यवान् पुरुषोवेद
३३. परीक्ष्य लोकान्
३४. परीक्ष्य लोकान्
यदासर्वे प्रमुच्यन्ते
कामः संकल्पे
यथासमो मनुष्याणां
—मात्रात्रुप जीवन्ति
३५. आत्मावा अरे
तद्वारातदक्षरं
३६. (समाम्नायोऽर्थस्य तन्निमित्तत्वात्)
एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म
अक्षय्यंवै
३७. आत्मावाइदमेक
यथासौम्येकेन
३८. द्वासुपर्णा
३९. कामान् यः कामयते

३९. नैनंपाप्मा पापो
४०. एषनित्यो महिमा
४१. सहोवाच यदूर्द्धवम्
यस्मिन्नाकाशे सर्वमोतं प्रोतं
४१. अस्थूलमनणु
४९. (शब्द ब्रह्मण ब्रह्म) न्याय

वीरराघव

सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म १
सर्व खल्विदं ब्रह्म
सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति
वेदैश्च सर्वेरहमेववेद्यः
अनेन जीवेनात्मनानुप्रविश्य० २
नामरूपयोनिर्हिताते
सर्वाणिरूपाणि विचिन्त्य धीरः
तत्सृष्ट्वातदेवानुप्राविशत
सर्वे खिल्विदं ब्रह्म
तज्जलानिशान्त उपासीत
सौम्येकेन मृत पिण्डेन १५
तदैक्षत १७
एतदात्माभिदं सर्व
आत्मनः आकाशः सम्भूत
तस्यैष एव शारीर आत्मा
सवा एष पुरुष विध एव
तस्य प्रियामेषारविः
तत्सृष्ट्वातदनुप्राविशत्
यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवाः २०
श्रोतव्यो मन्तव्यो
यतोवाचो २४
पुमान्न देवौ न नरः २५
तद्यथेह कर्माचित्तोलोकः
परास्य शक्तिविविधैव
रसोवैसः २६
तेन प्रद्योतेनैष आत्मा ३०

ये के चास्मत् लोकात् प्रयन्ति
तस्मात् लोकात्
(स्वात्मना चोत्तरयोः) सू.
रसोवैसः ३४
नेहनानास्ति ३६
यथा सौम्यकेन ३७
सदैवसौम्येदमग्र आसीत् ३७
नासदासीनो
यथासौम्यके
स्तब्धोस्युत्तमा
नासदासी

रामानुज

यतोवाइमानि भूतानि जायन्ते २
लोकवत्तु लीला कैवल्यम् सू.
जन्माद्यस्य यतः सू.
नास्त्यकृतः कृतेन
पिबन्तयेनामाविरमामविज्ञाताः
अजोह्येको जुषमाणो० १४
लोकवत्तुलीला कैवल्म्
अन्तः प्रविष्टः शास्ता जनानाम्
आत्मानमन्तरोयमयती
सोऽकामयत
रसोवैसः
तत्सृष्ट्वा तदेवानुप्राविशत
सत्यं ज्ञानमानन्दं ब्रह्म
आनन्दं ब्रह्म
अव्यक्तमक्षरे लीयते अक्षरं तमसि १५
वाचारम्भणं विकारो
कारणन्तु ध्येयम्
तत्सृष्ट्वा १७
तदनुप्रविश्य
स सर्वेभ्यः पाप्मभ्यः १८
आदित्य वर्णंतमसः

तद्विष्णोः परम पदन्
सैष सम्प्रसादो
परं ज्योति रूपं सम्पद्य
समानं वृक्षं परिषष्वजाते
यतोवाचो ० २१
नसदासीन्नोसदासीत्तदानी १ २४
तदनु प्रविश्य
आदित्य वर्ण तमसः २५
अपाणि पादो २८
परास्य शक्तिः
भीषास्माद्वातः
अन्तः प्रविष्टः ३०
(तद् गुणसारत्वाद्व्यपदेशः सू.)
यतोवाइमानि ३७
यद्यस्मादिदं विश्वं
नासदासीन्नो सदासीत्
यथामाम्येकेन मृत् पिण्डेन
यथा एकेन लोहमणिना
यथा एकेन नख निकृन्तेनन
अन्यदेव ताद्विदितादथो ४१
अस्थूलमनणु

श्रीधरी टीकामें समागत श्रुतियां

ब्रह्मसूत्र स्मृति

भागवत श्लोक	श्रुति (अष्टटीकापृष्ठ)	स्मृति	ब्रह्मसूत्र
जन्माद्यस्य			
१।१।१	'यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते' तैत्तरीयोपनि० (पृ२ पं. १) स ईक्षत (लोकानुत्सृज) यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं तदात्मानं स्वामयुक्त पृ ४ पं. ४८, ७ अनु. आद्यश्रुति	मनः सर्वाणि भूतानि' आद्यवली ६ अनु ६ श्रुत्यैकदेशः (ऐतरेयो प. १ ख. १ ब्राह्मणम्)	जन्माद्यस्ययतः १।१।१ (महा भा. शान्ते. दानधर्मोत्तर विषय सहस्रनामे १३ वचनं
निगम०			
१।१।३	'रसोवैसः'		
१।२।८ (अंका)	अक्षय्योहि वै चातुर्मास्य याजिनः		
१।५।१४	(१५) नकर्मणा नप्रजया धनेन	व्यवसायात्मिकाबुद्धिः (गीता)	
१।६।२६	अस्यमहतो भूतस्य	(कैवल्योपनिषद् ४ ब्राह्मण)	
१।७।१६			अग्निढोगरदश्चैव
१।७।४५	अर्धोवा एष आत्मनो यत्पत्नी		

१।७।५३ जायापती अग्निमादधीयातां
१।७।५३ आततायिनमायान्तं १।७।५३
१।६।३५ सेनयोरुभयोमध्ये
१।६।२३ दृश्यते त्वग्रद्या बुद्धया एवमुक्त्वार्जुनः संख्ये (गीता)
१।१०।३६ अन्योवा एष प्रातरुदेत्यय:
असौवानाविष्ठी (विजय ध्वज:)
१।११।१४ यावन्नछिद्यते नालं
१।१३।३७ आमान्नं वा प्रजातीर्थे
१।१।६ पुत्रे जाते व्यतीपासे
२।१।३६ नामरूपे व्याकरवाणि शोकाक्रान्तः
ओमित्येकाक्षरं
पुरुषत्वे चाविस्तरामात्मां येन शुक्लीकृताहंसाः
सूर्या चन्द्रमसौ धाता यथापूर्व
(टिप्पणी श्रीधर)
२।२।७ यथा पशुरेवायं सदेवानाम्
२।२।८ अंगुष्ठमात्रं पुरुषं मध्य आत्मनि
(सिद्धान्त)
२।२।२४ तदा विद्वान् पुण्यपापे विधूय (टिप्पणी)
(आथर्वण)
२।२।३२ निर्भिद्य मूर्धन् विसृजेत् परंगतः
यदा सर्वे प्रमुच्यन्ते
तेऽर्चिभिरभिसंभवन्ति
नकर्ममिस्तां गतिमाप्नुवन्ति
२।५।११ न तत्र सूर्योभाति
(मुण्डकोपनिषद् २।१०)
२।५।३५ सहस्रशीर्षा (आद्य)
२।५।३७ ब्राह्मणोऽस्य
२।५।३८ ताभ्याआसीदन्तरिक्षं
२।६।१२ पुरुष एवेदं सर्वं

अहं भवानसे २६।१५ तक प्रत्येक में श्रुत्यंश

२।६।१६ समूमिम्
(असौ प्राण आदित्यः)
२।६।१७ उतामृतत्वस्य
२।६।१८ एतावानस्य
पादोऽस्यविश्वाभूतानि

२।६।१६ त्रिपादस्यामृतं दिवि (३।१२।६)
२।६।२० त्रिपादूर्ध्वमुदैत
ततो विष्वङ व्यक्रामत्
२।६।३० चन्द्रमा मनसो जातः
२।६।३५ सहस्रशीर्षा (उक्तः) आवीऋचा)
२।६।३७ ब्राह्मणोऽस्य मुख (उक्तः)
२।६।२१ तस्याविराडजायत
२।६।२२ यत्पुरुषेण हविषा
२।६।२७ यज्ञेन यज्ञमयजन्त
२।६।१ सप्तास्यासन् (स्व कल्पित)
२।६।२८ तेन देवा अयजन्त
२।६।३५ योअस्याध्यक्षः परमे व्योमन्
२।७।६ पुंनाम्नोनरकाद्यस्मात्
२।७।४० विष्णोर्नुकं वीर्याणि प्रवोचम्
२।७।४७ द्वितीयाद्वै भयम् (वृ. १।४।१)
२।६।२२ यस्य ज्ञानमयं तपः (मु. १।१।६)
२।६।३२ अहमेवासमग्र (छा० ७।२४।१)
२।१०।११ आपो नाराद्गतिप्रोक्ता आपो वै नर सूनवः।
२।१०।२४ त्वङ् निरभिद्यत त्वचो लोमानि
(ऐतरेयोपनिषदि)
२।१०।४४ तस्माद्वा एतस्मादाकाशः संभूतः
सोऽकामयत
२।१०।४५ निष्कलं निष्क्रियं शान्तं
३।१।१३ त्यजेदकं कुलस्यार्थे
३।१।३४ मनः पूर्वरूपं वागुत्तररूपन् आत्मा बुद्धया पाणिनीय शिक्षा
३।५।२७ विष्णोस्तु त्रीणिरूपाणि
(सात्वततन्त्र)
३।५।३१ आकाश शरीर ब्रह्म
३।५।४८ ता एनमब्रुदन्यातन नः
३।६।१० यस्य ज्ञानमयं तपः
३।८।१८ सोऽपश्यत् पुष्करपर्णे
३।६।१७ यत्करोति यदश्नास्ति (गीता)
३।६।१६ यस्मात् क्षरमतीत० (गीता)
३।१०।२० अथेतरेषां पशूनामशना पिपासे

३।१२।२		
३।१२।४१		अविद्यास्मितारागद्वेषाभिनि-वेशाः (पातंजल योगसूत्र)
३।१२।४४	भूर्भुवः सुवरिति वा एतास्तिस्रो	
३।१२।४५		एवं व्याहृतयः प्रोक्ता व्यस्ता (आश्वलायन)
३।१५।३४		
३।१७।१८		कामः क्रोधस्तथालोभः (गीता)
		यदाविशेत् द्विधाभूतं (पिण्ड सिद्धि)
३।१९।२२	त्रयोऽस्यपादा	
३।२०।१२		
३।२०।२३	सजघनादसुरानसृजत्	तत्रे—विष्णोऽस्तु त्रीणिरूपाणि
३।२०।२९	साऽह्नो रात्र्योः सन्धिरभवत् ।	
३।२१।३४	बृहद्रथन्तरे पक्षो को. १।५	
३।२१।३४	"स्तोम आत्मा"	
३।२२।१६	गृभ्णामिते सौभगत्वाय हस्तं	
३।२२।१९		यावदपत्योत्पत्तिस्तावद्गार्हस्थ्यम् (भाषावन्धसमयः)
३।२३।४७		पुमान् पुंसोऽधिके (स्मृतिः)
३।२५।४२	भीषास्माद्वातः पवते	
३।२६।२	तमेवविदित्वातिमृत्युमेति	
३।२६।५	अजामेकां लोहित शुक्लकृष्णां	
३।२८।३	श्वेता० ४।५	
३।२८।८		द्वौ भागौ पूरयेदेनौ (स्मृति)
३।२८।३४		उरूजंघान्तरादाय
३।३१।२४	असंगोह्ययं पुरुषः वृ० ४।३।१५	यतो यतो निश्चरति (गीता)
३।३२।७	सूर्यद्वारेण तेविरजाः प्रयान्ति (मु०१।२।११)	
३।३२।१०		ब्रह्मणा सहतेसर्वे
३।३२।३२		ते प्राप्नुवन्तिमामेव
४।१।५९		अर्जुनेतु नरावेशः
४।३।४३	वाजपेयेनेष्ट्वा वृहस्पतिसवेन यजेत बृह. ६४।३	
४।५।२१	ऐन्द्रापौष्णश्चरुर्भवति	
४।६।३८		
४।७।१९	वृहद्रथन्तरेपक्षौ कौ० १।५	तर्जन्यंगुष्ठयाग्रे

४।७।२६	द्वितीयाद्वैभयं भवति (वृ० ४।१।२	
४।७।२६		अहं ब्रह्मा च शर्वश्च
४।७।४१	स एष यज्ञः वृ० १।४।१७	चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च (स्मृतिः)
४।११।२२	कामोऽकार्षीत् कामः करोति	चतुर्भिश्च त्रिभिस्तथा ।
४।११।२३	कोअद्धावेद (वाष्कल मंत्रो० १०)	षड्भिर्विराजते योऽसौपश्चधा
४।१३।३५	यज्ञोवै विष्णुः	हृदयेनव ।।
४।१८।१		ओदकं पार्वतं वार्क्षमैरिणं (वृहस्पतिः)
४।१९।१		सरस्वतीदृषद्वत्योदेवनद्यो (स्मृतिः)
४।१९।१२		आयुक्तः प्रतिमुक्तश्च(अमरकोषः)
४।२१।३४	यज्ञोवै विष्णुः	
४।२१।३६	एतस्यैवानन्दस्यान्यानि वृह० ४।३।३२	
४।२१।४२		प्रशस्ता चरणं नित्यं
४।२२।२		ऊर्ध्वप्राणा ह्युत्क्रामन्ति
४।२२।२८		दृश्चानुरंजितं
४।२२।३२	आत्मनस्तुकामाय सर्वप्रियं भवति (वृह० २।४।५)	
४।२२।४०	ननुंब्रह्मविदाप्नोति	
४।२३।१४		संपीड्य सीवनीं
४।२३।१७		इन्द्रियाणांहि (ना०)
४।२४।३७	हंसः	
४।२४।४०	एषवै	
४।२४।६४	तयोरन्यः पिप्पलं	
४।२५।२३	अन्नमयं हि	
४।२५।४७	तस्माद्दक्षिणेऽर्ध	
४।२८।३३	तद्विज्ञानार्थं	
४।२८।५१	द्वासुपर्णा	
।२९।३७	तरतिशोकमात्मवित्	
४।२९।५६		शरीरजैः कर्मदोषैः
५।६।२		शुचीनांश्रीमतांगेहे (गीता)
५।१०।२	नेहनानास्ति किंचन	
५।१२।८	वाचारम्भणं विकारो	
५।१६।११		पुण्यषड्भगयादत्ते

५।१८।१५	संवत्सरो वै प्रजापतिः	
५।१८।२६	तस्य वाक् तन्तिर्नामानि दानाम्नि	
५।१८।२७	ता अहिंसन्ताहममुकमस्म्यहमुकमामि	
५।१८।३२	सर्वं खल्विदं ब्रह्म	
५।२०।८	सुपर्णोसिगरुत्मान् त्रिवृत्ति शिरः	
५।२०।३५		कोटिद्वयं त्रिपंचाशत् (शैवतन्त्रे)
५।२१।८	अद्धयोवा एष प्रातरुदेत्यषः	वायु पुराणे ५।२२।७
५।२२।१२	अभिजिन्नाम नक्षत्रमुपरिष्टात्	
५।२६।२९	न्यग्रोधास्त्रिभिराहुत्य	
६।१।१३		मनसिश्चन्द्रियाणां च
६।१।४०	अस्य महतो भूतस्य निःश्वसित	
६।१।४२	आदित्य चन्द्रावनिलोऽनलश्च स्मृतिः	सकृदुच्चरितं येन हरिरित्क्षर द्वयं स्मृतिः
६।२।१९		हरिर्हरतिपापानि
६।४।३२	अपाणिपादः	
६।४।३४		यो यो यां यां तनुं भक्तः
६।४।४६	शिरोवाएतद्यत्प्रवर्ण्यः	ये यथामां (गीता)
६।५।२०		मोक्षंरात्रह्मबुद्धीनां जीवमाया-वराकिनां (वाचऽकूट संग्रह)
६।५।३७	जापृण्वानावै व्राध्यायः	ऋणानि त्रीण्यपाहृत्य (मनुः)
६।५।४०	यदहरेवविरजेत्तदहरेवप्रव्रजेत् यदि नेतरथा ब्रह्मचर्यादेव	
६।६।४२	पुरुषस्त्वे चाविरामात्मा	
३।७।२२		ब्राह्मणंकुलसंपन्नं भक्तं विष्णो
६।९।१	विश्वरूपो वै त्वाष्ट्रः	
६।९।११	तस्मादाद्यो न परिचक्ष्या	
६।९।१२	यदब्रवीत् स्वाहेन्द्रशत्रोवर्धस्व	मन्त्रोहीनः स्वरतो वर्णतोवा
६।९।१८	सइमांल्लोकानावृणोत्तद्वृत्रस्य वृत्रत्वन्	(शिक्षा)
६।९।२०		महाभये परित्राणमन्यतो
६।९।३८	नेति नेति	
६।९।४५		कृषिर्भूर्वाचकाशब्दोणश्चनिर्वृत्ति
६।९।५२	अश्वस्यशीर्ष्णा प्रवदीमुवाच	वाचकः (निरुक्ते)
६।१०।३३		द्वाविमौपुरुषौ लोके
६।११।३४	वार्त्रहत्यायशवसेपृतना वाह्याय च	
६।१६।९	तदात्मानं स्वयमकुरुत	कर्षयन्तः शरीरस्थ (गीता)

६।१६।४२		
६।७।२३		भूतभावोद्भवकरो विसर्गः (गीता)
६।१८।१४	पुरीष्यासो अनयः पंच वा एतेऽनयो यच्चित्तयः	
६।१८।१७	सत्रे ह जाताविषिता नमोभिः	
७।२।३७		अव्यक्तादीनिभूतानि (गीता)
७।२।४५	प्राणोवैमुख्यः	
७।३।३२	अक्षरात् परतः परः	
७।५।२७		ब्रह्महा क्षयरोगीस्यात् (याज्ञ.)
७।६।२६		त्रैगुण्यविषयावेदा (गीता)
७।७।१९	अविनाशी वारेऽयमात्मा आत्मा नित्योऽव्ययः शुद्धः एकः ऋचो अक्षरे परमेव्योमन् निरवद्यं निरञ्जनम् एकमेवाद्वितीयम् विज्ञातारमरे केन विजानीयात् यस्मिन् द्यौः पृथिवी चान्तरिक्षम् निष्कलं निष्क्रियंशान्तं आत्मज्योतिः सम्राडिति होवाच सइमांल्लोकानसृजत् सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म असङ्गोह्ययं पुरुषः	
७।७।२४	पूर्णस्यपूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते यतोवाइमानि भूतानि	
७।७।२९		यत्करोषि यदश्नासि (गीता)
७।७।४०		भक्तया मामभिजानाति (गीता) यन्नदुःखेनसंभिन्नं
७।७।४०	तद्यथा इह कर्माचितोलोकः क्षीयते	
७।८।१८		कौन्तेयप्रतिजानीहि
७।:।१०		तेषामहंसमुद्धर्ता धर्मश्चसत्यंच दमस्तपश्च (सनत्सुजातोक्ताः)
७।९।१८	देवाहवैप्रजापतिमब्रुवन्	
७।९।३१	वाचारम्भणं विकारोनामधेयं	
७।९।४७	स ऐक्षत	

७।६।४६	किमर्थावयमध्ये कामहे	
७।१०।६	यदासर्वे प्रमुच्यन्ते	यदातेमोहकलिलं (गीता)
७।१०।१३	तत्सुकृत दुष्कृते विधूनुतः	तदधिगमुत्तरपूर्वा (न्यायात्)
७।११।७		
७।११।२४		श्रुतिः स्मृतिः सदाचारः (याज्ञ)
७।११।२८		वेदोऽखिलोधर्ममूलं (मनुः)
७।११।३०		नमस्कारेणमंत्रेण (याज्ञ०)
		आशुद्धेः संप्रतीक्ष्योहि
७।१३।५		रजकश्चर्मकारश्च
		निद्रादौ जपस्यान्ते (योगग्रन्थ)
		पुष्ययुक्ता पौर्णमासी
		(त्रिकांड्यां)
७।१५।३०		प्रत्यक् स्फूर्तिरसत् स्फूर्तिः
		(सर्वज्ञसूक्त)
७।१५।४०	आत्मानं चेद्विजानीयात्	द्वन्द्वाहतस्य गार्हस्थ्यं
	आत्मानं रथिनंविद्धि	
७।१५।५०	इतितुपंचभ्यायाहुतावयः	
	सइमास्तेजोमात्रा	
	तस्यएतस्य हृदयाग्रं	
७।१५।५६	ते धूममभिसंभवन्ति	
	ते अर्चिभिरभिसंभवन्ति	
७।१५।६२	त्रय आवसथत्रयः स्वप्नाः	
८।१।१०	ईशावास्यमिदं विश्वं	
८।१।११	चक्षुषश्चक्षुरुत श्रोत्रस्य श्रोत्रम्	
८।२।४	चक्षुषश्चक्षुरुत	
८।२।५	आदित्यवर्णं तमसः परस्तात्	
८।२।७	तमेवविदित्वातिमृत्यु मेति	
८।२।११	सन्यास योगाद्यतयः	
८।२।१३	पूर्वमेवाहमिहासम्	
८।२।११	तत्पुरुषस्य पुरुषत्वम्	
८।२।१६	सोऽकामयत बहुस्याम	
८।.।११	य आत्मनि तिष्ठन्नात्मने	
८।५।२६	अनेजेदेकं मनसो जवीयो	
८।५।२६	यद्वाचानभ्युदितं येन	
८।५।२६	द्वासुपर्णा सयुजा सखाया	

८।५।३७	सैषात्रय्यविधानतपति	
	य एषोऽन्तरादित्ये	
८।५।१४	ब्राह्मणोऽस्य मुख कल्पित	
८।६।८	अनाविराविरासेयं नाभूताभूदिति ब्रुवन्	
	ब्रह्माभिप्रैति निव्यत्वं विभुत्वे भगवत्तनौः	
	(श्रीधरस्यैवेदं इति टिप्पणीकारः)	
	निर्गुणं सगुणंचैव शिवंहरिपराक्रमैः	
	स्तुवन्तस्तु प्रजेशाना नामान्यन्ताऽन्तरं तयोः	
	(श्रीधरया)	
८।७।२६	अग्निः सर्वाः देवताः	
८।८।३९	ऋद्धिकामाः सममासीरन्	
८।९।१५		अहतं यन्त्रनिर्मुक्तमुक्तवासः
		स्वयंभुवा शस्तं तन्माकालिकेपु
		तावन्मात्रे न सर्वदा (स्मृतिः)
८।१२।४०	अपांफेनेन नमुचेः शिर इन्द्रो कर्तयत्	
८।१३।४		त्वयिकिंचिना (श्रीधरः)
८।१६।३१	चत्वारि श्रृंगात्रयो अस्यपादा	चत्वारि श्रृंगेतिवेदा (यास्कः)
८१६।३८	नमोहिरण्यगर्भाय प्राणाय जगदात्मने	
	योगेश्वर्यशरीराय नमस्ते योगहेतवे	
	श्लोकोऽयं श्रीधरप्रणीत इतिप्रतीयते (टिप्पणी	
	(श्रीधरः)	
८।१७।८		आयत्नेताविनिर्जित्य (श्रीधरः)
८।११।२६	यज्ञोवैविष्णुः	
८।१८।५	अभिजिन्ताम नक्षत्रम्	
८ १९।३८	ओमितिसत्यं नेत्यनृतम्	
	परागवा एतद्रिक्तमक्षरम्	
	तस्मात् कालएव दधात्	
८।१९।४०	एवमेवानृतंयद्यमात्मान	
	ओमितिसत्यं नेत्यनृतं	
८।१९।४१	परागवा एतद्रिक्तमक्षरं	
८।१९।४२	अथैतत् पूर्णमभ्यात्मं	
८।१९।४३	तस्मात् कालएवदधात्	वर्णिनांहि वधोयत्रतत्र (याज्ञ०)
८।२२।३		आपदर्थेधनंरक्षेद
८।२४।२९	विष्णोर्नुकं वीर्याणि प्रवोचं	

८।२४।२६	विष्णोर्नुकं वीर्याणि प्रवोचं	
८।२४।२६	न ते विष्णोर्जायमानोनजातो	
८।२४।४८	यदरोदीत्तरुद्रस्य रुद्रत्वं	
९।३।१२	ऐन्द्रवायवं गृहणाति	
९।४।८	उच्छेषणभागो वै रुद्रः	
९।४।११	नामानेदिष्ठंशंसति नामानेदिष्टं	
९।४।४०	अपोऽश्नाति तन्मैवाशितंनैवानशितम्	
९।५।५	स ऐक्षत	
९।७।८	हरिश्चन्द्रो हवैध्वंस ऐक्ष्वाकोराजा पुत्रआस	
९।७। ५	अन्नमयंहि सौम्यमनः	
९।१३।६	कुम्भेरेतः सिषिचतुः समानम्	
९।१४।२२	अमृतं वा आज्यम्	
९।१४।२७		महानिशाद्धघटिके
९।१४।४४	शमीगर्भादग्निं चयनम्	
९।१४।४५	उर्वश्यस्यापुरसि पुरूरवाः	
९।१६।२६	तस्य हविश्वामित्रस्यैकशतं पुत्राआसुः— एकएवऋषि यवित् प्रवरेष्वनुवर्तते	
९।१६।३४	कस्यनूनं कतमस्यामृतानाम्	
९।२०।२२	पुंनाम्नो नरकाद्यत् पितरं त्रायते सुतः तस्मात्पुत्र इति प्रोक्तः स्वयमेवस्वयंभुवा हिरण्येन परीवृतान्, कृष्णान् शुल्कदतो मृगान्	
९।२२।१५		दाराग्निहोत्रसंयोगं कुरुते योऽग्रजे स्थिते
९।२२।२५	अपि तरत्य तलिप्सुदेवत्गुरुप्रयुक्ता ऋतुमतीयात्	
९।२४।१६		ककुरभानंशुचिकंवलाग्र (पराशरः)
९।२४।२६		भजमानाच्यविद्रूरस्थः (पराशरः)
९।२४।२७		तस्यापिकृतवर्मशलधनु० (पराशरः)
१०।२।२५	सत्यं च समंदर्शनम्	
१०।३।१४	तत् सृष्ट्वातदेवानुप्राविशत्	
१०।५।१		सूताः पौराणिकाः प्रोक्ताः

		वेदुपचितमन्यजन्मर्मि० (जातकै)
१०।८।५		कौमारं पंचमाब्दान्तं
१०।१२।३७		
१०।१३।२०	सर्वं विष्णुमयं जगत्	
१०।१४।१४		
१०।१४।२३	पूर्वमेवाहमिहासमिति	नराज्जातानिनाराणि आपोनाराइतिप्रोक्ता प्रणश्यति (गीता)
१०।२३।२९		
१०।२८।२		कलायां द्वादशीदृष्ट्वा
१०।३६।१४		
१०।४०।३		देहोसवोक्षामनवोभूतमात्रा नात्मानमन्यं च विदुः परंयत् (हंसगुह्ये)
१०।४०।५	सप्रथमः स प्रकृतिर्विश्वकर्मा	
१०।४०।१५	दृश्यते त्वग्रयाबुद्ध्या मनसैवाऽनुद्रष्टव्यः	
१०।४०।२७	यदेतत् भूताण्यन्वाविश्च	
१०।४२।३२	यद्भयो० य उदगान्महतोऽर्णवात्	
१०।४५।३४		६४ कला
१०।५२।१८		राक्षसोयुद्धहरणात् (स्मृति)
१०।५६।११		चतुर्भिर्व्राहिभिर्यः गुणं
१०।५६।३८		पत्नीदुहितरश्चैव (या० स०)
१०।५९।२७	पूर्वमेवाहमिहासमिति	
१०।५९।३३		कन्यापुरे सकन्यानां शोडषातुल विक्रमः
१०।६०।९		देव सिद्धासुरादीनां नृपाणां च जर्नादन
१०।६०।३८	एतस्यैवानन्दस्यानात्मनि भूतानि	देवत्वे देवदेहेमं मनुष्यत्वे च मानुषी। द्विषन्न न भोक्तव्यं (पराशरः)
१०।६६।३०	यज्ञस्य देवमृत्विजम्	अस्वर्ग्यं लोकविद्विष्टं धर्मम्
१०।७४।२१	ऐतदात्म्यमिदं सर्वम्	कृषिर्भू वाचकः शब्दः
१०।७८।३५	अनामगोत्रं	यत्करोषि यदश्नासि (गीता)
१०।७८।३६	अंगादंगात् संभवसि	
१०।८४।१२	यो वाचं ब्रह्मेत्युपास्ते	

१०।८४।१७ वाचारंभणं विकारो
१०।८४।२६ यावतीर्वैदेवता
१०।८४।३१ ननु–कर्मणानप्रजया
१०।८४।३६ जायमान्येवै ब्राह्मण — ऋणानित्रीण्यपाकृत्य
१०।८५।७ न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्र० — यदादित्यगतं तेजो
१०।८७।२ यः सर्वज्ञः सर्ववित्
सर्वस्य वशीसर्वस्येशानः
यः पृथिव्यां तिष्ठान् पृथिव्या आन्तरः — आदित्यां देवतायुक्ता
सोऽकामयत बहुस्याम् — स्व बुद्धयारज्यते येन
स ऐक्षत
तत्तेजोऽसृजत्
सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म
१०।८७।१४ यतो वा इमानि भूतानि
(१) यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्व
य आत्मनि तिष्ठन्
सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म
यः सर्वज्ञः सर्ववित्
१०।८७।१५ इन्द्रोयातोऽवसितस्यराजा
अग्निर्मूर्धादिवः
वाचारमणं विकारो
सर्व खल्विदं ब्रह्म — तद्यया पुष्करपलाश आपो न
१०।८७।१६ नकर्मणा लिप्यते पापकेन
तत्सुकृत दुष्कृते विधुनुते
एतं हवाव न तपति
किमहं साधुवा करवम्
किमहं पापमकरवम्
१०।८७।१७ असुर्यानामते लोका
न चेदवेदीन् महती विनष्टि — इहचदवेदी दथसत्यमस्ति
ये तद्विदुरमृतास्ते — (युण्डकोप०)
१०।८७।१७ सवाएषपुरुषोऽन्नरसमयः
१०।८७।१८ उदरं ब्रह्म
शतं चैकाहृदयस्य नाडयः
१९ एकोदेवो सर्व भूतेषु गूढः
२० सयश्चायं पुरुषे
यश्चासवादित्ये

स एकः
तत्वमसि
यस्यदेवे परामक्तिर्यथादेवे
(श्वेताश्वतरोप० गी०)
२१ यं सर्वदेवा नमन्ति
२२ आराममस्य पश्यन्ति
नतं विदाथय इमाजजान
नीहारेण
२३ आत्मावाअरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यः
२४ यतोवाचोनिवर्तन्ते
को अद्धावेदकइह
अनेजदेकं मनसो
न तं विदाथ
२५ सदेव सौम्येदमग्र आसीत्
ब्रह्मैवसन् ब्रह्माप्येति
अनीशया शोचति मुह्यामानः
अविद्यायामन्तरे वर्तमानः
एकमेवा द्वितीयं ब्रह्म
एक एवहि भूतात्मा
२६ असतोऽधि मनोऽसृजत्
२७ सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म
नेहनानास्ति किंचन
मृत्योः स मृत्युमाप्नोति
तस्यवाक् तन्तिर्नामानिदामानि
देहान्तेदेवः परं ब्रह्म
यमेवैष वृणुत
यस्य देवे पराभक्तिः
२८ अपाणिपादो जवनोगृहीता
भीषास्माद्वातः पवते
२९ यथाग्निः क्षुद्राविस्फुलिंगा
असद्वा इदमग्र आसीत्
इहचेदवेदीदथसत्यमस्ति (मुण्डकोप०)
३० यस्या मतं तस्यमतं
अवचनेनैप्रोवप्रो च

सहतूष्णीं बभूव
यदिमन्यसे सुवेदेति
३१ अजामेकां लोहितशुक्लकृष्णां
तस्माद्वाए तस्मात्
सोऽकामयत
यथाग्ने क्षुद्रा
एकवेवाद्वितीयं
अजामेका
अविनाशी वारेऽययावमी
यथा सौम्य मधु
ते यथातत्र न विवेकं
यथानद्यः स्यन्दः मानः
३२ परीत्य भूतानि परीत्य लोकान्
उपस्थायप्रथमजामृतस्य
३३ तद्विज्ञानार्थं
आचार्यवान् पुरुषोवेद
नैषा तर्केण मति
प्राकृतौसत्कृतैश्चव मध्यपद्याक्षरैस्तथा
देशभाषादिभिः शिष्यं वोधयेत् सगुरुः स्मृतः
३४ परीक्ष्यलोकान्
यदासर्वे प्रमुच्यन्तै
अथमर्त्योऽमृतो
एतस्यैवानन्दस्यान्यानि
३५ श्रोतव्योमन्तव्यः
एकमेवाद्वितीयं
विज्ञानमानन्द
अचक्षुरश्रोत्रम्
३६ अक्षय्यं हवै
अपामसोममृता
तद्यथेहकर्मचितो
तस्माद्वासतस्मात्
३७ यतोवा इमानि
सदेवसौम्य
आत्मावाइदमेक

नासदासीन्नोसदासी
यथासौम्येकेन
वाचारमणं विकारो
एकेन लोहमणिना
एकेन नखनिकृन्तनेन
द्वासुपर्णा सयुजा
३६ कामान् यः कामयते
४० एषानित्यो महिमा
४१ यदूर्ध्वं मार्गि दिवो — वैराग्यमाद्यं
४२ अन्यदेव ताद्विदितादथो — १०।८६।१६
अन्यत्र धर्मात्
अस्थूलमनणु
११।२।३६ — यत्करोषियदश्नासि (गीता)
१।३।२० तद्यथेह कर्माचितो लोकाः — दैवीह्येषा गुणमयी (गीता)
३६ प्राणस्यप्राणमुत चक्षुश्चक्षुरुत — आततत्वात् (तन्त्रे)
यतोवाचोनिवर्तन्ते
ननु तंत्वौपनिषदं
यद्वाचानभ्युदितं येन
यन्मनो न मनुते
न चक्षुपा पश्यति
अथात् आदेशोनेति नेति
अस्थूलदनणु
यतो वाचो निवर्तन्ते
यद्वाचानभ्युदितं
३७ वाचारम्मणं
३९ यद्वैतन्न पश्गति पश्यचैतद् द्रष्व्यम्
४४ तं वा एतं चतुर्हतः
४५ मृत्वापुनर्मृत्युमापद्यन्ते
४६ यो वासतदक्षरमी वदित्वागार्ग्यस्माल्लोकात्
प्रैतिसकृपणः
तमेतं वेदानुवचनेन ब्राह्तणा विविदिषन्ति
ब्रह्मचर्येणतपया श्रद्धया यज्ञेनानाशकेन
स्वर्गकामो यजेत्

११।४।२ विष्णोर्नुकं वीर्याणि प्रवोचं यः पार्थिवानि
विममेरजांसि
४।५
६ अपामसोममममृताऽअभूम यामिमांपुष्पितां वाचं (गी०)
अक्षचयं हवै चातुर्मास्य याजिनः
य चन्नोषणां न शीतं
११ ऋतौभार्यामुपैयात्
हुतशेषं भक्षयैत्
११ इमामगृणन् रशना मृतस्य
पंचपंचनखाः भक्ष्याः अप्राप्तविधिरेवायं
(ऋतु स्नातांतुयो भार्या संनिधौ) (तंत्रवातिकें)
१४ वायव्यं श्वेत मालभेत्
यागेदविहिताहिंसः
११।५।१७ असुयानामते लोका मांस भक्षियिताऽमुत्र
११।५।५१
११।६।३ हीनजाति परिक्षीणां
११।६।११ यस्यै देवतायैहविर्गृहीतं स्यात् ननुश्रुतिस्स्मृति मर्मवाज्ञै
११।६।१३ चरणं पवित्रं विततं पुराणं येनपूत होम्यांपदाभ्यां जानुभ्यां
११।२।१० तस्यह्न देवाश्चअभूत्याईशते
११।६।१५ अक्षरात् परतः परः यस्मात्क्षरमतीतोऽहं
११।७।२१ पुरुषत्वे चाविस्तरामातमा सहिप्रज्ञानेन
११।७।४३ तत्वमसि
११।८।१२
११।८।२२ वायुर्वेगौ तमसूत्रं वायुनावै मनसोवृत्तिशून्यस्थ (योगशा०)
११।८।२८ पुरुषत्वे चाविस्तरात्मा
ताभ्यो गामानयत्ता अब्रुवन्
११।८।३१ तदभिज्ञं गुरुंशान्तं मुमुपासोत्
तस्मात् गुरुं प्रपद्येत्
११।१०।१४ विलक्षणः स्थूल सूक्ष्मत्वात्
११।१०।२६ क्षीणेपुण्येमृत्युलोके विशन्ति (कल्पित)
११।१०।३० भीषास्माद्वातः पर्वते
११।११।४ यथैकस्मिन् घटाकाशे
११।११।६ ऊर्ध्वमूलमवाक् शार्ख ऊर्ध्वमूलमधः शाखं (गीता)
द्वासुपर्णा सयुजा सखाया
११।११।६ तत्ववित्तु महावाहो

११।११।१५		प्रकृतेः क्रियमाणानि यः
		कंटकैर्वितुदति चंदनैर्यश्च(याज्ञ०)
११।११।३०		षड्भिर्मासोपवासैस्तु
११।१२।४०	चत्वारि वाक्परिमितापदानि	विष्णोर्निवेदितान्नेन
११।१३ २२	वाचारमभणं विकारो	यासामित्रावरुणसदनादुच्चरन्ती
		(अभियुक्त श्लोके)
११।१३।२७		सत्वाज्जागरणं विद्या
१२।१४।१६		मोक्षार्थी न प्रवर्तते
११।१४।२६	तमेव विदित्वाति	यावत् कीर्तिर्मनुष्यस्य
		अन्तर्लक्ष्यो (योगशा०)
११।१५।१६		यइमापूरयेद्वायुं
११।१५।३४		ऐश्वर्यस्य समग्रस्य
११।१५।३६	एष त अन्तर्याम्यमृतं	जन्मौषधितपः मन्त्रा (पत.)
११।१६।११	बुद्धेर्गुणेनात्म गुणेन	
११।१६।२६	अर्धोह्वा एष आत्मनो यत्पत्नी	
१६।१६।२७	अभिजिन्नामनक्षत्रमुपरिष्टात्	
११।१६।३७		मलप्रकृतिरविहृतिः) सा०का०
११।१७।१६		लब्धेनवेनवेनांघ्रे(नारदपु०)
११।१८।१६		माधूकरेतु नैवेद्यं (स्मृति)
११।२०।२	नानुध्यायेद्वहूनशब्दान्	
११।२१।८		सर्वैपुण्यतमोदेशः
११।२१।२७	कश्चिद्धवा अस्माल्लोकात् प्रेत्य आत्मनि	पिबनिम्बं पदास्यामि
११।२१।२८	न तं विदाथयइमाजजान	
११।२१।२६	कर्मणा पितृलोकः	
११।२१।३४		नाकामस्यक्रिया
		फलश्रुतिरियंनृणां
	चत्वारिवाक्परिमिता	
११।२२।४३	तस्माद्वाएतस्मात्	
११।२३।१६		आत्मानंधर्मक्तोच (स्मृति)
११।२३।४३	मनसा ह्येवपश्यति	
११।२३।४८	मनसोवशेसर्वमिदं	
११।२४।७	तस्माद्वाएतस्मात्	
११।	अन्नमयं हि सौम्यमनः	मृल्लोह विस्फुलिंगाद्यै

११।२४।२२ तस्माद्वा एतस्मात्

११।२५।५ हयेजाये मनसा तिष्ठ धोरेवचांसि मिश्राकृणवाव
हैनु न नौ मन्त्रा अनुदितास एते मवस्करन्
पतरे चाहन्
(ऐलनेयहीमन्त्र ९ स्कन्धमें अहोजायेतिष्ठ०)

११।२६।१६ पुरुरवो मामृथा माप्रतप्तो मात्वा वृकासो
अशिवासउक्षन् नवैस्त्रैणानि सख्यानिसन्ति
साला वृकाणां हृदयान्वेता

११।२७।२१ पाद्यैश्यामाकदूर्वायव
विष्णु क्रान्तादिरिष्यते
गन्धपुष्पाक्षत यवकुशाग्रतिल
सर्वथा

११।२७।२३ योवेदादोश्वरः प्रोक्तो

११।२७।३१ सुवर्ण धर्म परिवेदनमा
दूर्वा चेति क्रमादर्प्या द्रव्याष्टक
मुदीरितं
जाति लवंग कंकोलैर्मतमा
चमनीयकम्

जितंते पुंडारीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन

सहस्रशीर्षा
इन्द्रं नरो नेमधिता हृवन्ते
(आदि० शब्देन) राहिणादीन

११।२७।३६ विस्तासेच्छ्रायतस्तिस्रो
मेखलाश्चतुरंगुलाः
हस्तेमात्रां भवेद्गर्तः
सयोनिवेदिका तथा

११।२७।४० आघातै—प्रजापतयेस्वाहा
इन्द्रायस्वाहा
आज्यभागौ—अग्नयेस्वाहा
सोमायस्वाहा

११।२७।४१ अग्नेयस्विष्टकृतेस्वाहा

११।२८।१५ सुप्ते हरि नदृश्यन्ते

११।२८।२१ वाचारम्भणं
सर्वं खल्विदं

११।२८।२६ यस्यात्तदेषां न प्रियं

११।२८।३५ यतोवाचोनिवर्तन्ते
केनेषितं पतित
नेहनानास्ति किंचन
इन्द्रोमायामिः

११।२९।४७ तद्वामृतत्वं प्रतिपद्यमानो
अति व्रज्यगतिस्स्रो मामेवासितः परम्

११।१२।३२ अग्नौप्रस्ताहुतिः सम्यक्

११।५।३ अंगादंगात् संभवसि

४ आत्मना पितृ पुत्राभ्यामनुमेयो भवाप्ययौ

१२।७।६६ ऋभिपूर्वार्द्धं दिविदेवदूयते

१२।११।१४ प्राणोवैमुख्यः

१९ सुपर्णोसिगरुत्मान्
यज्ञोवैविष्णुः

१२।११।३० सूर्य आत्माजगस्तस्थु

श्रीमद्भागवत और गीता

श्रीमद्भगवद्गीताका जो कुछ चरम सत्य है भागवत उसकी मूर्ति है। कारण कि गीतामें कहे गये तत्व भागवतमें ही प्रस्फुटित हुए हैं।

गीतामें—श्रीभगवान्ने—"इति ते सर्वमाख्यातं"
१८।६३
के द्वारा इति शब्दका प्रयोग किया है। जिसका तात्पर्य है, जो कुछ कहना था कह दिया। परन्तु १८वें अध्यायके ६५वें ६६वें श्लोकमें पुनः "सर्वगुह्यतमं भूयः" कहकर—

मन्मना भव मद्भक्तो इत्यादि २ श्लोक कहे हैं।

गीताके इन्हीं श्लोकोंमें अन्तर्निहित सत्य छिपा है, वही श्रीमद्भागवतके 'शारदींयरास रजनी' में श्रीकृष्णके अन्तर्ध्यानके वाद—गोपीगणोंकी अवस्थामें—

तन्मनस्कास्तदालापास्तद्विचेष्टास्तदात्मिका
तद्गुणानेव गायन्त्यो नात्मागाराणि सस्मरुः।

में दर्शनीय है।

(भा. १०।३०।४४)

सर्वधर्म परिहारका जीवन्त रूप—गोपियोंका वनमें आगमन है।

(भा. १०।३२।२२, एवं १०।४७।६१

इसलिये गीता यदि उपनिषद रूपी गायोंका दूध है तो भागवत उसी दूधके मथनेसे प्रकटित नवनीत है।

अतः वेदार्थ—सूत्रार्थ—गीतार्थ सबकी परिपूर्ति श्रीमद्भागवतमें है—

क्या भागवत अपौरुषेय है—

भागवत अपौरुषेय है। वह वेदव्यास रचित नहीं।

परन्तु वेदव्यासके हृदयमें भगवत् कृपासे स्फुरित है।

अपौरुषेय वाक्य मात्र ही प्रमाणादि दोष लेशोंसे शून्य है, अतएव सर्व प्रमाण शिरोमणि (भा. १।३।४४) श्रीसूत इसे 'पुराणार्क' कहकर अज्ञानान्धकार नाशनमें इसकी उपयोगिताका ज्ञान करते हैं।

लीलास्तवमें—श्रीपाद सनातनने इसे श्रीकृष्ण स्वरूप कहा है। प्राचीन शास्त्रकारोंने इसे श्रीकृष्णके तुल्य ही घोषित किया है।

श्रीमद्भागवतके ६ प्रश्न (षट् सम्वाद)

श्रीशौनक सूत, गोस्वामी के पासमें जाते हैं और उनसे प्रश्न करते हैं—

१. पुरुषको ऐकान्तिक श्रेय क्या है?
२. आत्मा किस प्रकार प्रसन्न होती है?
३. भगवान्का देवकी गृहमें अवतारका प्रयोजन क्या है?
४. उनकी लीला कितनी है?
५. उनके अवतार कौन-कौन हैं?
६. श्रीकृष्णके अन्तर्ध्यान हो जानेपर धर्म किसकी शरणमें गया?

इन्हीं ६ प्रश्नोंके उत्तरमें समग्र भागवतकी प्राप्ति है। इसके वक्ता और श्रोता भी विभिन्न हैं—

+ श्रीविश्वनाथ चक्रवर्ति सूत और शौनकको षट् संवादके अन्तर्गत नहीं मानते।

वक्ता	श्रोता
१. श्रीनारायण	ब्रह्मा
२. नारद	व्यास
३. शुकदेव	परीक्षित
+१ ४. सूत	शौनक

प्रथम स्कन्धके द्वितीय अध्यायमें प्रथम ४ प्रश्नोंके उत्तर हैं।

तृतीय अध्यायमें ५वें का उत्तर है।

षष्ठ उत्तरमें समग्र भागवत ही आ जाती है। श्रीकृष्णका प्रतिनिधित्व भागवत ही कर रही है।

भागवतमें प्रधानतः १० विषयोंका वर्णन है—

सर्ग (मूल सृष्टि)

विसर्ग (प्रलय)

स्थान (सृष्टि पदार्थके उत्कर्ष विधान)

पोषण (भक्तगणोंपर अनुग्रह)

ऊति (कर्मवासना)

मन्वन्तर—

ईशानुकथा (हरि और तद् भक्तगणोंके चरित)

निरोध (सशक्ति शयन)

मुक्ति (स्वरूप अवस्थिति)

आश्रय—श्रीहरि।

दशम श्रीहरि ही तत्व निधान और शास्त्रोंके तात्पर्य हैं—

श्रीमद्भागवतमें ब्रह्मवाद और परमात्मवाद स्थल-स्थलपर वर्णित है। परन्तु भगवत वाद ही विशिष्ट स्थान पाता है। भक्त और भगवान्के विविध लीला विलासका ही नाम भागवत है। भगवदवतार असंख्य हैं—

पुरुषावतार—गुणावतार—लीलावतार—युगावतार
शक्त्यावेशावतार—मन्वन्तरावतार—कल्पावतार इत्यादि।

[1]ये समस्त अवतार नित्य चिन्मय अप्राकृत परमानन्द स्वरूप हानोपादान रहित, ज्ञान मात्र और सर्व गुण पूर्ण हैं।[2]

इन सब अवतारों में श्रीकृष्ण का भी उल्लेख है परन्तु ये अवतारी हैं। सर्वविध ऐश्वर्य और माधुर्य परिपूरित परतत्व हैं। लीला-प्रेम-वेणु और रूप माधुर्य श्रीकृष्णमें ही अनन्य साधारण हैं।

श्रीमद्भागवत, रसिक और भावुक जनों द्वारा संवेद्य है—

यह अतुलनीय रस ग्रन्थ है और दार्शनिक ग्रन्थोंका शिरोमणि है।

एक ही ग्रन्थमें भावुक—दार्शनिक और रसिक साहित्यिककी सर्वथा परितृप्ति विश्व साहित्यमें अतुलनीय है।

भागवतका यही अनन्य सुलभ गौरव है कि वह एकाधारपर ही रसिक और भावुकगणोंको प्रत्येकको रसास्वादनके लिए आह्वान करता है।

---

१. लीलास्तव—सनातन रचित १८—२५ इसमें ३७ अवतारोंके नाम लिखे हैं।

२. महावाराह पुराणमें—सर्वे नित्याः शाश्वताश्च देहास्तस्य परात्मनः।
हानोपादान रहिता नैव प्रकृतिजाः क्वचित्॥
परमानन्द सन्देहा ज्ञान मात्राश्च सर्वतः।
सर्वे सर्व गुणैः पूर्णाः सर्व दोष विवर्जिताः॥

जिस जीवमें दोनों योग्यताएं हों वही भागवतका सर्श्रेष्ठ आस्वादक है। उस कालमें श्रीशुकदेव एवं कलियुगमें श्रीमहाप्रभूजीके पार्षदगण इसी प्रकारके आस्वादक हुए हैं।

नायक

इस ग्रन्थका मुख्य नायक उपनिषद् पुरुष, रसिक शेखर श्रीकृष्ण एवं उनकी सर्वश्रेष्ठ आराधिका आस्वादिका महाभाव स्वरूपा श्रीराधा ठकुरानी हैं।

इन्हीं भावमयी रसमयी श्रीराधारानी कृपाके आधार-पर ही भागवत रसास्वादन सम्भाव्य है।

भागवतके अधिवेशनका स्थान

१. शम्यप्रास—सरस्वती के पश्चिम तटपर[1]

२. नदी गंगा—जिस स्थलमें वृन्दावनसे आई हुई यमुनाजी से गंगाजी मिली है प्रयागराज[2] अर्थात् प्रयागराज

३. नैमिषारण्य[3]—यहाँ उग्रश्रवा नामक सूतसे शौनकोंने कथा श्रवण की।

४. आनन्दवन[4]—गंगाद्वारके समीप आनन्द वनमें सनत्कुमारने नारदजीको कथा सुनाई।

५. तुंग भद्रा तटपर[5]—तुंग भद्रा नदींके किनारे गो कर्णने अपने भाई धुन्धुकारी के उद्धारार्थ भागवत कथाका परायण किया।

६. सखीस्थलपर[6]—यह स्थान वृन्दावन गोवर्धनके समीप था यहीं उद्धवजी ने गोपियोंसे कथा कही।

७. शुकस्थल[7]—मुजफ्फरनगरसे १७ मील या विजनौरसे ७ मील गंगा तटपर यह स्थान है यहाँ भागवतजीका द्वितीय अधिवेशन हुआ था।

८. हस्तिनापुर—मेरठ जिलाके हस्तिनापुर स्थानसे ५ मील दूर गंगा तटपर राजा परीक्षितने शुकदेवजीसे कथा श्रवण की थी।

---

१. अ. १।७।२-८
२. भा. १।१६।५-६
३. भा. १।१।४-५
४. पद्मप. भा. मा. ३।४
५. पदद्म मी. मा० ४।१६
६. स्कन्द प. भा. मा. २।२४, ३।६१
७. विमलानन्द सरस्वती

श्रीमद्भागवतके टीकाकारोंके नाम

(जिनके नाम हैं पर टीकाओं के नाम नहीं मिलते)*

१. अघयदीक्षित (११ स्कन्ध)
२. एकनाथ
३. कविकर्णपूर गोस्वामी
४. कृष्ण भट्ट
५. कौर साधू
६. चक्र चूड़ामणि
७. जनार्दन भट्ट
८. जयराम
९. नाराणतीर्थ
१०. निकुंजविलासी
११. नीलकण्ठ सूरि
१२. पुण्यारण्य (श्रीतत्वसन्दर्भः)
१३. भेदवादिन
१४. मधुसूदन आचार्य
१५. महेश्वर तीर्थ
१६. रामनारायण
१७. वनमाली
१८. वनमाली भट्ट
१९. वामन
२२. वासुदेव भट्ट
२१. विजय तीर्थ
२२. विष्णुस्वामी (भावार्थ दीपिका)
२३. वेतनारायण
२४. व्रजभूपण
२५. शंकरनारायण शास्त्री
२६. शिगंराचार्य
२७. श्रीनिवासाचार्य
२८. सत्याभिनवतीर्थ
२९. सुधीन्द्र यति (माधव)
३०. हरि वरद

श्रीमद्भागवत सम्बन्धमें निबन्धादि

ग्रन्थ	लेखक
१. अनुक्रमः	वोपदेव
२. आनन्द वृन्दावन चम्पू	कवि कर्णपूर गोस्वामी
३. उद्धव सन्देशः	श्रीरूपगोस्वामीपाद
४. कैवल्य दीपिका	हेमाद्रि
५. गोपाल चम्पू	श्रीजीव गोस्वामी पाद
६. गोविन्द मंगल	दुःखी श्यामदास (गौड़ भाषा)
७. जयोल्लास निधिः	अप्पय दीक्षित

---

* टीकाओं की सूची अन्तिम खण्डमें दी जारही है । क्योंकि टीकाओंकी सूची कई स्रोतों के प्राप्त हुई है ।

८. तत्त्वसन्दर्भः	
९. तन्त्र भागवतम्	जीव गोस्वामीपाद
१०. दुर्जन मुख चपेटिका	
११. दुर्जनमुख चपेटिका	काशीनाथ
१२. परमात्म सन्दर्भः	रामाश्रय
१३. पाखण्डध्वंसन भास्कर	श्रीजीवगोस्वामीपाद
१४. प्रीति सन्दर्भः	विश्वनाथसिंह देवराज
१५. भक्तितरंगिणी	श्रीजीवगोस्वामीपाद
१६ भक्तिभागवतम्	वैद्यनाथ पाण्डे
१७. भक्तिरत्नावली	अनन्तदेव
१८. भक्ति सन्दर्भः	श्रीविष्णुपुरी
१९. भगवत्सन्दर्भः	श्रीजीवगोस्वामीपाद
२०. भगवन्नामकौमुदी	,, ,,
२१. भागवत-कथा	श्रीलक्ष्मीधर
२२. भागवत-कथा संग्रह (दशम)	
२३. भागवत चम्पः	केशव शर्मन्
२४. भागवत तत्व दीपिका	अभिनव कालिदास
२५. भागवत तत्व भास्करः	श्रीवल्लभ दीक्षित
२६. भागवत निर्णय सिद्धान्तः	शिवप्रकाश सिंह
२७. भागवत पुराण तत्व संग्रह	दामोदर
२८. भागवत पुराण संग्रह दृष्टान्तावली	रामानन्दतीर्थ
२९. भागवत पुराण प्रामाण्यम्	विश्वेश्वरनाथ
३०. भागवत पुराण मंजरी	रामानन्दतीर्थ
३१. भागवत पुराण स्वरूप शंकानिरासः	पुरुषोत्तम महाराज
३२. भागवत पुराणाशयः	रामानन्दतीर्थ
३३. भागवत पूषणम्	गोपालाचार्य
३४. भागवत रहस्यम्	वृन्दावन गोस्वामी
३५. भागवत वादितोषिणी	गनेश
व्यास रचित है वोपदेवकी नहीं	
३६. भागवत विचारः	धरणीधरः
३७. भागवत विचार.	शशिभूषण चक्रवर्ती
३८. भागवत व्यवस्था	काशीराम केशवराम
(भागवत और देवी भागवतमें विचार)	
३९. भागवत शंका निवारण मंजरी	शिवसहाय

४०. भागवत शंका निरासवादः	पुरुषोत्तम
४१. भागवत शरणम्	
४२. भागवत संग्रहः	
४३. भागवत सन्दर्भः	श्रीजीवगोस्वामी
४४. भागवत सिद्धान्त विजयवादः	रामकृष्ण
४५. भागवतार्थमरीचिमाला	श्रीलभक्तिविनोद ठाकुर
४६. भागवतोत्पलः	
४७. मंगलार्थशतकम्	रामनारायण
४८. मुक्ताफलम्	वोपदेव
४९. मुक्तिरत्नम्	कृष्णानन्द
५०. विद्वद्विनोदिनी	अनूपनारायणतर्क शिरोमणि
५१. श्रीकृष्णप्रेम तरंगिणी	श्रीरघुनाथ भागवताचार्य (गौड़ भाषा)
५२. श्रीकृष्ण मंगल	श्रीमाधवाचार्य
५३. श्रीकृष्णलीला स्तवः	श्रीसनातन गोस्वामीपाद
५४. श्रीकृष्णविजय	श्रीमालाधर वसु (गौड़ भाषा)
५५. श्रीकृष्ण सन्दर्भः	श्रीजीवगोस्वामीपाद
५६. संक्षेप भागवतामृतम्	श्रीरूप गोस्वामीपाद
५७. सिद्धान्त दर्पणम्	श्रीवलदेव विद्याभूषण
५८. हरि चरित्रम्	
५९. हरि भक्ति तरंगिनी	केशव पंचानन भट्टाचार्य
६०. हरि भक्ति मंजरी	वनमाली भट्ट
६१. हरि लीला	वोपदेव
६२. हरिलीला व्याख्या	हेमाद्रि
६३. हरिलीला विवेकः	मधुसूदन सरस्वती

उपर्युक्त भागवतानुप्राणित साहित्यके अवलोकनसे यह निश्चित है कि श्रीमद्भागवतने संस्कृत साहित्यके भण्डारकी अनुपम वृद्धिकी है यदि इस साहित्यसे संयुक्त ग्रन्थोंकी गणनाकी जाय तो सहस्रशः ग्रन्थोंकी तालिका निर्मित होगी। अतः श्रीमद्भागवत महापुराणने भारतवर्षकी अनुपम संस्कृत ज्ञानराशिको जो योगदान दिया है वह चिरस्थायी है तथा सर्वदा रसिकों, तत्वज्ञों एवं काव्यरस प्रेमियोंको यह ग्रन्थ अपना अमृत रस प्रदान करता रहेगा। संस्कृतके भव्य भवनमें झांकनेपर भागवतके जगमगाते प्रोज्वल प्रकाशकी किरणोंसे द्रष्टा अपनी चक्षुओंको आल्हादित करता रहेगा और अपने संतृप्त मस्तिष्कमें अलौकिक शक्तिका अनुभव करता रहेगा।

—०—

श्रीमद्भागवतका उल्लेख जिन ग्रन्थोंमें मिलता है

ग्रन्थका नाम	लेखकका नाम
१. अग्निपुराण	
२. अद्वैतानन्द सागर	
३. अष्टाविंशति तत्वं	रघुनन्दन
४. अहल्या कामधेनु	केशवदास
५. आचार रत्न	मनिराम दीक्षित
६. आन्हिक शेखर	नागोजि भट्ट
७. उत्तर गीता भाष्य	गौड़पाद
८. कलिधर्म प्रकरण	
९. काल दिनकर	
१०. कालनिर्णय	माधवाचार्य
११. कालनिर्णयदीपिका	
१२. कालनिर्णय विवरण	नृसिंहाचार्य
१३. कूर्म पुराण	
१४. क्षीर निधि	
१५. क्षेमेन्द्र प्रकाश	
१६. गरुड़ पुराण	
१७. गीता भाष्य	अभिनव गुप्त
१८. पूर्ण प्रज्ञ दर्पण	श्रीमाधवाचार्य
१९. प्रबोध सुधाकर	श्रीशंकराचार्य
२० प्रयोग पारिजात	
२१. ब्रह्म वैवर्त पुराण	
२२: भक्ति प्रकाश	वाचस्पति मिश्र
२३. भक्ति सूत्र	शाण्डिल्य
२४. भोजन प्रकरण	
२५. मत्स्य पुराण	
२६. मथुरा सेतु	
२७. महाराजीय	
२८. माठर वृत्ति	सांख्यकारिका
२९. रामतापिनी व्याख्या	नारायण
३०. ,, ,, ,,	आनन्द वन
३१. ललित टीका	भास्कर राज
३२. वराह पुराण	
३३. वामन पुराण	
३४. वासुदेव सहस्रनाम भाष्य	श्रीशंकराचार्य
३५. विधान पारिजात	अनन्त भट्ट
३६. विष्णु पुराण	
३७. विष्णुसहस्रनाम भाष्य	श्रीशंकराचार्य
३८. वेदान्त तत्व सार	श्रीरामानुजाचार्य
३९- व्यवहार मयूख	नीलकण्ठ भट्ट
४०. व्रत खण्ड -	हेमाद्रि
४१. शिवतत्व विवेक	अप्पय दीक्षित
४२. शिव-पुराण	
४३. श्राद्ध मयूख	नीलकण्ठ भट्ट
४४. सम्वत्सर प्रदीप	
४५. संस्कार कौस्तुभ	अनन्तदेव
४६. सच्चरित मीमांसा	
४७. सदाचार बृहस्पति व्याख्या	
४८. सार संग्रह	रामानुज
४९. स्कन्द पुराण	
५०. स्मृति कौस्तुभ	
५१. स्मृत्यर्थ सागर	

—:०:—

श्रीमद्भागवतका अधिकपाठ और पाठभेद

चतुर्थ स्कन्ध अष्टमाध्यायमें दो श्लोकोंकी व्याख्या वीर राघवाचार्यने की है, अन्य टीकाकारोंने कुछ भी चर्चा नहीं की वे श्लोक हैं—

क्वयात्येको भवान् वत्स हित्वा स्वगृहमृद्धिमत्
लक्षयेत्वावमत्याङ्ग सन्तप्तं स्वजनोंस्थया ।
ध्रुव उवाच ।
किमेतद्भगवन् ध्यानाद् दृष्टं किं योग राधसा
नोत्सहे सुरुचेर्वाचा समाधानुं मनः क्षतम् ।

४।१६।१८ के आगे—

एष दोग्धा महींवीरो शासतामोजसौषधीः
समां करिष्यते चेमां धनुष्कोट्या समन्ततः ।

इसी श्लोककी टीका मध्व सम्प्रदायाचार्य विजयध्वज एवं निम्बार्क सम्प्रदायाचार्यशु. कसुधीने की है। जीव-गोस्वामी, विश्वनाथ चक्रवर्ती आदिने प्रतीक मात्र रखकर उपेक्षा की है। ज्ञात होता है कि श्रीधर स्वामीकी टीका न होनेके कारण उक्त गौड़ीय आचार्योंने इन श्लोकोंकी टीका नहीं की होगी।

४।२०।३१।के आगे दो श्लोक अधिक लिखे हैं—

ते साधु वणितं राजन्नाशास्से न यदाशिषः
स्वर्गापवर्गनरकान् समं पश्यति मत्परः ॥
प्रीतोऽहं ते महाराज रोषं दुरस्त्यजमत्यजः
मदादेशं श्रद्धधानस्तन्मह्यं परमर्हणम् ।

इन्हें विजयध्वजाचार्यने भी मान्यता दी है।

१।२।१६ के आगे—

पतिं वः पृच्छत भटाधर्मेऽस्मिन् यदि संशयः
सवेद परमं गुह्यं धर्मस्य भगवान् यमः ।
(वि

६।७।२३ के आगे—

अद्यश्वोवापरश्वो वा हृप्तस्ति बल शालिनः ।

६।१६।२२ के आगे—

ब्राह्मणान् भोजयेद्भक्तच साध्वन्नैर्द्वादशात्मवित् ।
तेभ्यो दद्यात्तिलान् राजन् सोदपात्रान् मुदान्वितान् ॥

७।१।५ के आगे—

जिह्वां लब्ध्वापि योविष्णु कीर्तनीयं न कीर्तयेत् ।
लब्ध्वापि मोक्षनिःश्रेणि स नारोहति दुर्मतिः ॥
तस्माद्गोविन्द माहात्म्यमानन्द रस सुन्दरम् ।
श्रृणुयात्कीर्तयेन्नित्यं स कृतार्थो न संशयः ॥
तस्मादिमां कथां पुण्यां गोविन्द चरणाश्रिताम् ।
महापुण्यप्रदां यस्माच्छृणुष्व नृपसत्तम ॥

७।४।२३—

ओं नमो भगवते तुभ्यम्पुषाय महात्मने ।
विशुद्धानुभवानन्द सन्दोहाय यतोऽभयम् ॥

७।१४।१—

साधुपृष्टं महाराज लोकान् साध्वनुगृह्णता
एतत्तुभ्यंप्रवक्ष्यामि नैष्कर्म्यं कर्मणो यतः ।

८।१।१—

यत्र धर्मांश्च विविधाश्चातुर्वर्ण्याश्रिताः शुभः ।[1]

कुल टीकामें ३१ श्लोक अधिक हैं जो तालिकामें स्पष्ट हैं—

---

१. सम्प्रति उपलब्ध गीताप्रेस गोरखपुर संस्करणमें भी ये पाट अनुपलब्ध हैं।

अधिक पाठ तालिका

	१।१४।५		
	३।३१।१		
(वि.)	४।८।२६		(२)
	४।२०।३१		(२)
	४।१६।१८		
(वि.)	४।२०।३१		(२)
	६।२।१९		(१)
	६।१९।२२		
	७।१।५		
(वि.)	७।४।२३		१
(वि.)	७।१४।१		१/२
(वि.)	८।१।१		१
	९।४।१०		
	९।२०।२२		
	१०।१।६३	असुराः सर्वएवैते	१/२
	१०।६।८		१/२

१०।७।२		
१०।१३।३९		
१०।११।२०	ततश्चास्तं गते	१
१०।१३।४८		
१०।१९।५	कृष्णः प्रोत्तुंगमारुह्य	१
१०।२३।३२	श्रवणात् दर्शनात्	१
१०।२८।५	अक्षणोर्वा यश्च	१/२
१०।२८।७	प्रजा वयमनुग्राह्या	१/२
१०।३७।१	विशाल नेत्रौ	१
१०।४८।२	काम शास्त्र कृतालेखैः	१/२

८ श्लोकोंमें वीरराघव—विजयध्वज साम्य है।

और २२ श्लोक वीर राघवने माने हैं जो विजयध्वजके अधिक श्लोकोंसे पृथक् हैं।

विजयध्वजके अधिक श्लोक

१।८।१	३ श्लोक
१।९।४५	१
१।१३।१६	१
१।१५।१६	१
३।२६।२४	१
३।२६।५०	१/२
३।२२।४	१
४।४।३०	२
४।८।४	१
४।८।२६	२
४।११।३४	१
४।२०।७	१
४।२०।३१	२
४।२२।४०	३

८।१	१
८।१२	५
९।३।३२	१/२
९।१४।९	१
९।१४।१२	२
१०।६।८	१/२
१०।११।१८	१-१/२
१०।५०।१०	११
१०।५०।१२	४-१/२
१०।५०।१५	७-१/२
१०।५०।२४	१७
१०।५०।४१	३३—१ अध्याय
	६५—२ अध्याय
	८२—३ अध्याय

४।२४।६७	१
४।२५।२०	१
४।२६।४५	२
४।३३।२२	४
५।१३।२५	२
६।२।१७	२
६।२।१९	१
६।७।४०	१
६।१०।२०	१/२
७।१।७	१
७।१।११	१
७।४।२३	१
७।६	५
७।६।८	१
७।७।२७	२
७।१०।४	१/२
७।१०।९	१
७।१४।१	१/२
७।१४।३	१

	२४-१/२ ४ अध्याय
५०।५५	१-१/२
५१।२१	२
५२।५	९-१/२
५२।९	१६
५२।२०	२-१/२
५२।३६	१
५२।३८	१
५२।४२	१
५३।१	१
५३।३३	१
५३।३८	श्रीशुक उवाच
५३।३९	१/२
५३।४०	१/२
५३।५०	१/२
५४।२६	१/२
५४।३३	१ तथा रुक्मिण्युवाच
५४।१६	श्रीशुक उवाच
५७।१०	४-१/२
५७।१४	१-१/२
५७।३०	१

अधिक पाठ

५।८।४	४
५।८।९	६
२३	३
२८	१/२
३९	१
५।९।१	६
१२	११
२०	७
३२	१
३१	१/२

८।९।१	१३
८।९।२५	४
८।९।३२	१२
९०।१९	१
९०।२१	१
९०।२८	१३
११।६।२१	१

लगभग ३५० श्लोक अधिक

५९ के आगे ६ अध्याय—अधिक हैं किन्तु भागवतमें वे आगे पीछे हैं केवल ३ अध्याय विजयध्वजकी गणनाके अनुसार ६५-६६-६७ ही अधिक हैं। इनमें क्रमशः—५१, ४९,

३५ श्लोकके अध्याय-३ अधिक हैं।

५५ में (विज. ६८ में ४

६६ वीं (६९ में) १५

८२ (७०) १० (१०।३०।१४। से २३ श्लोक तक प्रक्षप्त १० श्लोक)

६०—में (७५)	४	७८।	४-१/२
६८।४	१/२	७८।४	२-१/२
७०।३३	१	७८।१०	४
७६।४	१८-१/२	७८।१३	४
७७।१	१	७८।१५	५
७७।१२	१८	७८।३३	१/२
३२	८	८०।	११

—:०:—

पाठान्तर तालिका

स्क. अ. श्लो.	श्रीधर	वीर राघव	विजयध्वज
प्रथम स्कन्ध			
१।४	नैमिश—नैमिष		
१।५	हुताग्नयः		हुताशनाः
१।७	परावरविदो		परावर विदः
१।११	श्रद्दधानानां		भद्रायपूतानाम्
१।१४	स्वयं भयं		स्वयं भवः
१।२३	वर्मणि		कर्मणि
२।१	संहृष्ट		संप्रष्ट
२।४	जयम्		ग्रन्थम्
२।६	प्रतिहता		व्यवहिता
२।८	कथासुयः		कथाश्रयाम्
२।१०	जिज्ञासा		जिज्ञासोः
२।१५	यदनुध्यासिना		यदनुध्यायिनः

२।३४	भावयत्येष		भावयन्नेष
३।१४	दुग्धेमा		दुग्धवान्
५।२	अपि–अयि		
१।१६	भवान्–भवन्		
५।२५	लेपाननु		लेपाद्यनु
५।३६	इमं स्वनिगमम्		स्व धर्म नियमम्
७।१८	अक–अर्कः		
८।३३	अजस्त्वं—	अर्भत्वम्	
९।३०	सहस्त्रणी	सहस्त्रिणी.	
९।३१	व्यथः	श्रमः	
११।२७	अनुग्रहेषितं	अनुग्रहोषितं	
१३।१२	क्रमशो		भ्रमतो
१३।१३	नन्वप्रियं		तत्वप्रियम्
१३।३६	नाहं वेद्मि व्यवसितं		अहं च व्यवसितो राजन्
१५।१६	ऋतवान्	ऋभुमान्	
१६।११	शण्ढः	शौरि.	
१६।२४	विलम्बित	विडम्बित	

द्वितीय स्कन्ध

७।२५	ककुब्जुष ऊढ	ककुब्जय रूढ़	
७।११	मखमय	अमृतमय	
७।२१	अवावरुद्धं	अवापरुद्धं	
७।४२	तरन्ति च	तरन्त्यथ	

तृतीय स्कन्ध

१।१५	श्वसानः	श्मशानः	
२।३	समाहुताः	समाहृताः	
३।२०	पीयूष कुलयया	सुधा प्रवाह रूपया	
३।२०	चरित्रेण	चारित्रेण	
४।१४	अनुग्रहमाजनोऽहं	अनुग्रहत्यपात्रं	
४।२६	संराध्य		संगाद्धः
४।२७	प्लावितोरु		
४।२८	अधिरथ	अतिरथ	
४।२९	नूनम्	स्फीतम्	
४।३१	नार्दितः		निर्जितः

४।३६	स्व:		द्यु
४।३६	सिद्ध अहोभिर्भरतर्षभः	सिद्धोहोभिर्भागवतर्षभः	
५।१	अभितृप्तः	अभितृप्तं	
५।४	संराधित	आराधित	
५।४	विशवर्त्म		दिशशर्मवर्त्म
५।११	निःश्रेयसार्थेन	निःश्रेयसार्थाय	
५।२३	शक्त्युपलक्षणः	शक्त्युपलक्षितः	
५।२७	मनोमयः		मनोभवः
५।२७	तमोनुदः		तमोनुदन्
५।३६	वरावरं		परात्परं
५।४७	रात्मभिःस्म	रात्मनिस्वे	
५।४९	ततो	तत्ते	
५:५०	यदनुग्रहाणान्	स्वदनुग्रहाणाम्	
६।२८	आत्यन्तिकेन	औत्पत्तिकेन	
५।३९	भगवतो माया	भागवती माया	
७।१६	आभात्यपार्थ	यद्भात्यपार्थ	
९।१३	ह्रियते	प्रियते	
९।१३	ध्रियते		क्रियते
१०।१	विभु:		
१०।२	वदस्व		भासयस्व
१०।१७	प्रभो	प्रभोरिति	
११।१६	विदः	विदु	
११।२८	अनुपधीयन्ते		अनुविलीयन्ते
१२।३	अन्यां	अन्यान्	
१३।३४	रध्वरा	अन्धय इति	
१४।१	तमुद्यताजलि	समुद्धतांजलि	
१४।१४	आर्तोप		आप्तो
१५।२	हतोलोके		हूतोलोक
१५।१०	वर्धते	एधते	
१५।२५	हृद्युपरिनः	द्युचितसत्	
१६।१०	दुहितः	दुहितुः	
१६।११	उपाहृत	उपाकृत	
१६।१५	क्षुभित	कुपित	

१७।२३	क्षीवान्	वलीयान्	
१६।२२	विनाशयत	विनाशयन्	
२३।३६	स्तनीम्	स्तनम्	
२४।४७	भागवती गतिः	भागवींर्गतिं	
२५।१ ;	उदासीनम्		उदासीनान्
२५।३६	प्रयुङ्क्ते		प्रयुञ्जे
२५।३७	मायाविनस्ता		माययाचिता
२५।१६	येचेह		येह
२५।४४	स्थिरम्		स्थितम्
२६।४३	उन्दनं		ओन्दनम्
२८।३२	देह	दह्व	
२६।५	अनुविद्धया	अनुवद्ध्य	
२६।१६	मद्धर्मणो	मद्धर्मिण	
३१।२२	दशमास्यः	दशमास्यं	
३१।२४	असृङ्ग्	असृग् दिग्धे	
३१।३६	(क) ऋक्षः	ऋष्यः	
	(ख) हृतत्रपः	गतत्रपः	
३३।८	त्वामहं		त्वाद्धाह्म
३३।६	मातृवत्सलः	पितृवत्सलः	
३३।१२	सतीं		उशतीम्
३३।३०	मर्गोणाचिरतः	मार्गोणाविरह्म	

चतुर्थ स्कन्ध

१।११	मनुः	प्रभुः	
१।१२	पत्नयः	क्षतः	
१।५२	गुणोत्पत्तिः	गुणोत्पत्ती	
१।६४	वयुनां धारिणीं	मेधां वैतरणीं	
२।२०	दूषितः	रूषितः	
२।३०	विधारणं	विधरणम्	
३।२३	नमसा	मनसा	
१८।१३	तथापरे		तलो परे
६।४	कृतागसि	कृतागसा	
६।५	भवे	भवं	
६।७	यस्य	तस्य	
६।८	पुरद्विषः	पुरारेः	

६।६	मन्त्रयोगं	योगमन्त्र	
६।१०	गणावृतैः	गुणान्वितैः	
६।२१	वृक	मृग	
६।२२	तरादया	करीदया	
६।३४	पयस्त	परीतम्	
६।३४	सनंदनाद्यै	सनन्दोद्यै	
६।४०	वन्दितांघ्रिः	वन्दितांघ्रिम्	
६।५६	नयत्र	ननीयत	
७।८	तद्यदाह	तद्यथाह	
७।१६	कर्मसन्तानयामास	कर्मानुवर्तयामास	
७।२५	सादनोत्तमं	साधनोत्तमम्	
१०।३	अद्रौ	आजौ	
११।२८	मधुच्युतं	मधुच्युतां	
१८।१३	तथापरे		ततो परे
२०।१६	समचित्त		समवृत
२०।२८	जनन्यां		जगत्याम्
२१।१६	उदग्रपात्		उउग्रेवाग्
२१।१४	भगवम्		भागम्
२१।४१	पर्युगुः		वयुगु
२१।४६	व्यनक्ति		व्यनक्षी
२२।४३	साधूच्छिष्टम्		साधु दत्तम्
२३।३६	विजयाभिमुखो		संग्रामामिमुखे
२४।६	महाभागो	महाबाहो	
२४।४०	अर्थलिंगाय	शब्दलिंगाय	
२४।५२	नोन्तरघं		नोतुरघं
२४।६७	यद्विना	यद्विनो	
२५।५४	ईशस्कृता		उपस्करा

पंचम स्कन्ध

२।१२	मन उन्नयनौ	मनसोन्नयौ
३।५	जायात्मज	जायादि प्रदेषु
४।३	तस्य	यस्य
८।२२	द्दषिते	दूषित्वा
८।२३	पद	पात
११।१	सहामनन्ति	समामनन्ती

१३।१८	स्वबंधने		वनेचरान् १३।१० से १६ पर्यन्त भेद[1]
पंचम स्कन्ध			
१४।१४	बर्हिष्मतः	बर्हिष्ठान् १४।२७ से ३५ तक श्रीधरसे व्युत्क्रम	
२०।६	अविशेषेण	स्वमानेन	
		२१।४ से १० श्लोक पर्यन्य श्रीधर विभेद	
२२।५	मासः		मासान्
२२।७	सम		समान
२३।३	परिच		परितश्च
२६।३	अथेदानीं	यथेदानीं	
	वैशसे	वैशसने	
	वा अन्धान्	बालान्धान्	
षष्ठ स्कन्ध			
२।२६	धर्मघ्नाः	धर्मज्ञाः	
३।२४	दृष्टिः	दृष्टः	
३।२७	वयं	भयम्	
३।३३	एवरजः	पुनारजः	
४।८	अहो	आहौ	आदौ
४।१२	गुह्य	गुह्य	
६।६	पालकाः	बालकाः	
७।२५	सभाजित	सभावित	
८।२६	स्तोत्र	स्तोम	
८।४१	नमस्यन्ति	नपश्यन्ति	
९।५३	दध्यङ्		कृतग्रं
१०।६	अनु	नूनं	नूनम्
१०।९	उपाश्रितः	उपाहितः	
१२।२७	लेलिहः		लिलेह
१२।२९	निर्जरयन्	निर्दरयन्	

नोट—१. आचार्य विजयध्वज पंचम स्कन्धमें २४ अध्याय मानते हैं—

(क) ५।१३।१४ श्लोक १८वीं संख्याके आगे

(ख) ५।१४।३७ के आगेके श्लोक १३वें अध्यायमें हैं।

(ग) २०।१८ से ४६ श्लोक पर्यन्त अनेक शब्द परिवर्तन

(घ) मूलके २३वें अध्याय समाप्ति पर विजयध्वजका २२ समाप्त

१३।१०	संचोदितः	सम्बोधितः	
१३।१५	भोगे	भाग	
१३।१६	देव		भूत
१४।१	मतिः		रतिः
१ ।५८	मुदित	गृदित	
१५।२४	कर्मभिः	कर्माभि १८।१३[1]	
१८।१५	इल्वलम्	इल्वलः	
१८।५३	वीरवती	वरवती	
१६।६	प्रीयेथामे	प्रियेधामे	
सप्तम स्कन्ध			
१।१६	दुखग्राह	दुखग्राह्य	दुखग्राह्य
२।१७	कटोदक	करोदक	
२।५०	प्रलोभन्	प्रलोभनम्	
३।७	तवाभिभूः		तवप्रभो
४।३६	अलभ	परम	
४।३८	सन्धत्त	सन्दध	
४।४५	पुत्रात्	पुत्रेषु	
५।११	स्वः परश्च	परः स्वश्च	
५।१३	दुरत्यय	दुरन्वय	
५।१५	सेवकः	सेवकम्	
६।३	यथादुःखन्	यथा सुखम्	
६।१७	कामदृशां	वामदृशां	वामदृशां
८।६	कुलभेद	कुलच्छेद	
८।२८	वर्त्मभिः	वर्मभिः	
८।३१	पार्ष्णिभिः	प्राणिभिः	प्राणिभिः
८।३८	मनवः	मनुः	
६।१३	न च	तव	
६।४१	अद्य		सत्वम्
६।४३	त्वद्वीर्य		त्वत्तीर्थम्
६।५०	अर्हत्तम	महत्तम	
११।७	स्मृतं	स्मृतिः	
११।१३	द्विजोऽजो	द्विजोवै	
१३।१०	स	स्व	

१. वीरराघवाचार्यका यहाँ पर्याप्त पाठान्तर है।

१३।१८	कल्यो	कल्य:	
१३।२२	सम्भावनीयः	सम्भाषणीय:	
१३।२९	अध्यात्मना	अध्यात्मता	
१४।६	मक्षिका:	विमक्षिका:	
१४।४०	संश्रद्धाय		संश्रद्धया
१५।२३	दुपासया		दुपाश्रयात्
१५।२५	ह्यंजसा		मनसा
१५।२६	असद्भिः	अभिसन्धि:	अभिसन्धिः
१५।२७	वैं		यं
१५।२८	नियम		निगम
१५।२९	ह्यर्था		विद्या
१५।२९	विडम्बका:	बिडम्बिन:	विडम्बिन:
१५।४१	सृष्टन्		धाम
१५।४८	सुत		पुन:
१५।५०	सूक्ष्म	भूष्म	भूष्म:
१५।५३	नादेतं		नादेतु
१५।५७	ज्योतिस्त्व	ज्योतिश्च	ज्योतिश्च
१५।५८	आवाधितो	अबाधित	अबाधित[1]
१५।६८	भवानहारर्षि	भगवन्महर्षि:	

अष्टम स्कन्ध

१।२०	ऊर्ज	और्ज	
१।२३	पवन:	सवन:	
१।२७	पृथु: ख्याति:	वृषा ख्याति:	
२।५	कन्दर:	द्रोणय:	
२।१६	कुल	कलधृ	
२।२६	घृणी	गृणान्	
२।५	लोकेषु	लीनेषु	
११.६	भावेन	भावाय	अवाय
३।१७	नमोऽलयाय	मनोलयाय	
३।२५	मोक्षम्	मोक्षणम्	
३।२९	ततम्	हृत:	

---

१. सप्तम स्कन्धमें आचार्य विजयध्वजने १६ अध्याय माने हैं। अन्य सभीने १५ अध्याय स्वीकार किये हैं।

५।१४	सम्प्रष्टो भगवानेवं	विष्णुरातेन संपृष्टो	
५।२६	य	यत्	
५।३०	तिर्तति	पिपर्ति	
५।४१	मुखं	मुखात्	
५।४४	दूतये	भूतये	
४। ६	भगवान्	भवान्	
६।११	व्यवाये	व्यपाये	
६।१२	वदन्ति	धियन्ति	
६।२८	क्षोभान्	क्ष्वेलान्	
६।३७	ईक्षया	कटाक्षैः	
७।१५	भगवद्दशा	मघवद्दशा	
७।१७	कर्ण	कण्ठ	
७।१९	व्यतिरेकान्वयो		व्यतिरेकान्वयौ
७।२०	सत्		तत्
७।२१	त्रयंस्वयम्		त्रयाश्रयम्
७।२८	सर्व		स
७।२९	निषदः		निषत्
७।३०	सांख्यात्मनः		साक्षान्मनुः
	मिषु		मृडयैः
७।३२	गरा		हरा
७।३३	परुषं		वपुषं
७।३५	न परं		नापरं
७।३६	पीड़ितः		मीडितः
७।४३	जल		गत
८।९	मानवाः	दानवाः	
८।११	माधवौ	माधवं	माधवं
८।१३	योगी		योगात्
९।१	सुराः पात्रं		सुधा पात्रं
९।२	वर्यासि		वर्योसि
९।७	ईडितः		ईरितः
१०।१	यत्ताः	दृप्ताः	
१०।२	साशया		कातराः
११।३२	गणैः		गुणैः
११।४?	ऋतसेन		धृतसेन
	ब्रह्मापेतो		ब्रह्मरातः

११।५०	तर्पति		अवर्ति
१२।५२	अनुत्क्रमं		अकारणम्
	अजस्रभावा		अबाह्यभावा
१६।७	फेरुराज		प्रेतराज
१८।२१	कच्छ्		वत्स
१९।६	नात्मानं	आत्मानम्	
२०।३९	गोयते	जीवतः	
२१।२	नियमान्विता—	नियमान्विताः	
२१।१४	अनिच्छतो—	अनिच्छन्तो	
२१।३०	यावद्वर्षति—	यावदग्निश्च	
२४।१८	समाधत	समाधाय	
२४।३०	पृथगात्मनां	पृथगात्मयोः	
२४।३१	चिकीर्षुरेकान्तजनप्रियः प्रियम्—	चिकीर्षि कान्त जन प्रियः प्रभुः	

नवम स्कन्ध

१।१२	नभर्ग	नाभागं	
२।२२	रम्भ	दम्भ	
२।२३	भलन्दन	हलन्दन	
३।२१	अब		अब्ध
४।२५	समर्द्धयन्ति	नवर्द्धयन्ति	
६।१२	आह्वत	आहूत	
६।२९	अन्तर्हित	अन्तर्हितः	
११।२८	सवृन्दं	संवतेति	
१२।१०	उरुक्रिय	उरुक्षित	
१३।१०	शोक	मोह	
१३।१५	सुधृत्	सुहृत्	
१३।१६	विश्रुतः	विधृतः	
१३।२३	समरथः	हेमरथः, सत्यरथः	
१४।३	विप्रोषघ्युद्गुगणानां	विप्रोषध्यम्बुगर्भाणाम्	
१४।९	त्यंज	गर्भम्	
१४।३४	अहो	अपि	
१४।३५	सुदेहः		सुदेवः
१५।९	मत्वातया	मन्वानया	
१५।८५	रजसः		
१५।१७	नारायणस्यांशं	नारायणांशम्	
१६।७	कूप	रूप	

९।२०।१२	जन्मेजयो—	जन्मेजयोऽभवत्	
२०।२२	पुत्रोनयति—	पितरं पुत्रो नयत्येक	
२०।२५	सामनोयं—	दीर्घतम समिति	
२०।२७	गुरूमाययौ—	गुरुमाभिनामिति	
२०।३३	चास्खलितं प्राणान्—	जायासुतान् प्राणान्	
२१।६	आहृत्या—	आतिथ्या	
२१।१५	माया	मार्या	मायौ
२१।२०	वृहत् शत्रस्थं	वृक्षतक्षत्रात्	
२१।२५	सयोगी	योगीशो	योगीशो
२१।२६	प्राच्यः	प्राप्य	
२२।६	कुशाम्वं	कसुम्भ	
२२।३२	मणिपूर	मृणालूकं	
२२।३८	क्रियाज्ञान	परंज्ञानं	
२२।४०	कविरथःक्षुविरथः	क्षुविरथः	क्षुविरथः
२४।२	कृति	क्रतुः	
२४।३	सृष्टिः—	वृणिः	
२४।५	कुरूवशादनः—	कुकुरकस्ततः	
२४।१६	धर्मवृद्धः—	धृष्ट वर्मश्च	
२४।३२	शुचिम्	शुचिः	
२४।४१	कंकायामानकाज्जातः—	वकः कंकान्तुकंकायाम्	
२४।४३	शालादीन्—	सात्वादीत्	
२४।४४	कंकश्च	आंवकः	
२४।५०	विपृष्टो—	त्रिपृष्टः	
२४।५१	सुवंशाधाः—	सुधन्वाद्याः	
२४।६४	विक्रमलीलया—	विभुगलीलया	

दशम स्कन्ध

१।४	विनापशुघ्नात्		विनातिमुग्धात्
१।५	रति	मति	
१।१३	च्युतं		सृतम्
१।१८	क्रन्दती	रुदन्ति	रुदन्ति
१।३४	वहसे	नयसे	
	कर्मानुगोऽवशः	कर्मवशानुगः	
१।३९	पर्वणि	कर्मणि	
१।४५	दीनवत्सलः	दीन वत्सल	
१।५३	प्रसन्न-प्रसार्य	प्रहृष्ट	

१।५४	साह	त्वाह	
२।१८	मनस्तः		नमस्त
२।१६	न रेजे		विरेजे
२।२०	ज्ञान		धूत
२।२१	यदर्थंतत्रो		यथार्धतंत्रो
२।२५	वृषणं	धिषणं	
२।२१	विधः		शिफः
२।४२	मनिदं		मविदन्
३।२४	दीपः		दीपम्
३।३१	हितत्	ययेतत्	
३।२८	मांसदृश		मादृशांत्वं
३।३६	तीव्र	भद्रे	
३।४६	श्रृंखलैः	श्रृंखलाः	
४।१२	हिंसीःःअहिंसी		
४।१५	इवापत्यं	इवोपेत्य	इवोपेत्य
४।१६	कान् लोकान्		कांल्लोकान्
४।२०	यथा	यदा	
४।२५	समनुतप्ततस्य		वचनमाश्रित
४।२८	विशुब्धम्	विश्रब्धं	विशुद्धन्
४।३४	दीनाः	भीताः	भीताः
४।३५	संवृतान्	सन्नतान	सन्नतान्
५।१	दैवज्ञान	वेदज्ञान्	
५।३२	अनुज्ञाप्य	अनुज्ञाय	
६।१७	निःस्वनित	निःश्वासित	
६।२२	केशवस्त्वदुर	केशवत्युदर	
६।३८	जननी	जगती	
७।१	एवं स ववृधे	एवंविधानि	
७।२०	प्रणोदितः	प्रचोदितः	
	ईरयन्	पूरयन्	
७।२१	दिशः	देश	
७।३०	प्रतिहृता	परिगृह्य	
७।३५	इदम्	जगत्	
८।६	भवेत्	महान्	
८।१८	महा भागाः	महाभाग	
८।१६	गोपायस्व	गौपाय	

८।३५	शृंङ्गयाग्नि	दंष्ट्रंयाहिं	
८।२६	अधृष्ट	आकृष्ट	
६।६	संजात	सजात	
६।१८	स्व	स	
६।२१	भूतानां	पोतानां	
१०।१	देवर्षेस्तमः	देवर्षिः कुपिते	
१०।५	भगवान्	गतवान्	
१०।१३	परमंजनम्	परमांजनम्	
१०।१७	विशुद्ध्यति		सिध्यति
१०।३४	वीर्यैः		तिर्यग्
१०।३०	भगवान्	भगवन्	
१०।३६	ब्राह्मण	ब्रह्मण	
१३।३०	अस्नुपयाः-आस्नुपयाः		
११।४०	पतिः	गतिः	
१३।४३	स आत्मनि	-सआत्मभः	
१३।५६	उद्धृत्य	उद्धृतः	
१४।४०	अर्कमर्हन्	आर्कसुमहन्	
१४।४७	प्रोद्दाम	प्रोध्मात	
१५।८	धन्येयमद्य		१६वीं संख्यापर
१५।२०	सुबलस्तोक	सुबलाशोक	सुबलाशोक
१५।२३	वीर्यो		तीव्रो
१५।२६	वांछास्ति		वांछासीत्
१६।६०	भुज्यतां		भुज्येते
१७।१२	लेलिहः		लेलिहां
१७।१६	नगा गावो		नरा नार्यो
१७।२१	तदाशुचि	तदाशुविपिनो	
१८।२	मायया	रूपिणे	
१८।४	द्रुममण्डल	द्रुमपिप्पल	
२०।६	प्रीणनं	प्राणिनाम्	
२१।१४	अमीलित	मीलित	
२४।५	अस्त्यस्व	अस्तस्व	
२४।१६	आजीव्यैकतरं भावं		२४वी संख्यापर
२८।७	मामकेन	पितरं	
२६।४	कान्तोजव		कार्तस्वरे
२६।१४	अव्यय		अव्यक्त

२६।१८	करवाणि	करवाम	
२६।२८	कृत्वा मुखानि		न्यक्कृत्यवक्त्र
३०।३३	के आगे—मूल-टीका में परिवर्तन		
३१।२	शरदुदाशये		संख्या ६ पर
३१।२१	मा		सा
३३।२३	युतः		ययौ
४१।१	ब्रह्मन्—ब्रह्म	(पाठ भेद है)	
४४।१५	उरुक्रम—उरुक्रमं		
४८।१	प्रियम्	प्राप्तिम्	
५०।१	प्राप्ति	प्रास्ति	प्रास्ति
५१।२०	शृण्वानः	शृण्वान्	पर्याप्त अन्तर
५१।२३	स्वायं	स्वयन्तं	
५१।३७	सम्भावितः	सभाजितः	
५१।४३	सद्विषः	विद्विषः	
५१।५०	स्त्वा	वाम्	
५१।५२	ते	चेत	
५१।६९	षडमित्र		उरुकृच्छ
५२।७	विधानेन		विवाहेन
५२।१६	श्रियोमात्रां		इन्दिराशाम्
५२।१९	कन्यामुपाहरत		तत्पारमागमत्
५२।२०	कृष्ण		विष्णु
५२।३८	धीरा		व्रीडा
५२।४१	परीतः		समेतैः
५२।४४	अन्तिकम्	गृहम्	
५४ २४	चात्र		चारे
५५।०	विजयध्वजा० ने इसे ६८ वें श्लोकपर विवेचन किया है		
५६।११	सर्वाघ्रि		सर्वेऽपि
५६।१४	गिरि		विलम्
५६।२५	विनिष्पात	मुष्टिनिर्घात	
५७।१३	अवीतो		वीरो
५७।३१	उदाहृतम्		गदाभृतः
५७।३४	मत्वा		दूतैः
५८।१९	सर्व		कन्यां
५८।४६	हतदर्पान्	भग्नदर्पान्	

५८।२१	संश्रयः		वत्सलः
५६।१४	वर्मणः	वर्ष्मणः	५६ में पर्याप्त भेद १
६१।१३	वीरः	भानुः	
	अनन्तमूर्तिना	आनन्द मूर्तिना	
६४।६	माधवं	मानुषम्	
६५।११	जहिम		हिन्म
६५।१३	पुरः		परः
६८।१६	कुमत्यया	कुमत्यया	
६८।२६	असभ्याः		अह्यां
६८।४७	कोपः-कोप		
७०।६	बद्धं बद्धं		पद्म पद्म
७०।१५	पाणीः		पाणिम्
७१।१०	पाक-कर्म		कर्म
७१।२७	जवा		जला
७५।५	दुपद्जाः	द्रुपदजः	
७७।३१	ज्ञानैश्वर्य स्त्वखंडितः	ज्ञानैश्वर्यस्यहात्यनः	
७८।६	गदा		गाढ
८२।१८	ईप्सया—इषुणा		
८३।१२	जनत्वन्	जनीत्वम्	
८३।६६	अच्युतो	अच्युते	
८४।२५	एवंत्वानाममात्रेषु	एवंत्वा	माश्रितं ब्रह्मन्
८५।१०	त्वि	त्वाम्	
८५।३४	रामः कृष्ण	राम कृष्णौ	
८५।३६	पुनद्यंदम्बु	पुनात्पदोम्बुहि	
८५।३७	ताम्बूलः	स्रग्धूपः	
८७।६	स्वायम्भुव		स्वायम्भुवं

---

१. अ. ५६ के पश्चात् विजय ध्वजने ६ अध्याय रखे है जो वर्तमान आठ टीका पाठमें संगत नहीं है किन्तु व्युत्क्रमसे ३ अध्यायोंकी कथा मिल जाती है और तीन अध्याय नवीन है, विजयध्वजके अनुसार वह विपर्यय ६५वें अध्यायसे है, आठ टीकाका अध्याय ६०वां है। नये तीन अध्यायोंमें (अर्थात्' ६५-६६-६७में) क्रमशः ५१, ४६, ५३ श्लोक अधिक हैं, इनकी कथा भागवतके साथ संगत है। विजयध्वजके ६८, ६६, ७०, ७१, ७२, ७३, ७४, ७५ भागवतमें अध्याय ५५, ६६, ८२, ८४, ८५ में दो ६०वें पर हैं। आठ टीकामें अप्राप्त कथा अ ६५—कृष्णका सत्यभामाके साथ स्वर्गगमन एवं देवगणोंसे युद्ध

८७।१४	गुणा:		गुण:
८६।१६	तदन्वितं—चतुर्विधम्		

एकादश स्कन्ध

१।१	जविष्ठम्		यविष्ठम्
१।२	नृपान्		परान्
१।३	गतोप्यगतं		यत्तोत्यगतं
१।४	स्तम्व		संच
१।६	सवै		यदो:
१।२३	मशल्ये		शत्येषु
२।४	वर्त्मना	वर्ष्मणा	
३।१३	वायुना		वारिणा
३।२०	सतुल्य:		अतुल्य:
३।२६	कर्म		काय
३।२८	वृत्तम्		पूर्तं
३२१	भक्त्या		भक्ता
३।३५	तदवेहि		तदवैहि
४।१३	ते	ता	
५।५०	वितन्यते		वितन्वतीं
६।६	रहसि		हृपदि
१३।२	वृद्धात्		शुद्धात्
६।२६	चिकीर्षणा	चिकीर्षुतया	
१३।४	दशैते		नवैते
१३।७	देह:		वेद:
१३।१६	तितीषया		विनिश्चयम्
१४।२१	श्वपाकानपि		सकाममपि
१५।२५	वृत्ती:	वृत्ति	वृत्ति
१५।२६	उदकं		उदकै:
१५।३०	व्यजनै:	व्यजना:	
१५।३२	कासा	पुन:	पुन:
१६।१	त्राण		प्राण
१६।२६	अज:		पुमान्
१६।३२	परा		पुरा
१७।३	प्रभो		भवान्

१७।७	शुकोवाच		उवाच
१८।१६	पावितं-याचितम्		याचितम्
१६।१८	परिणाम		फलरूप
२०।३	नृणाँ		नुस्यात्
२०।१०	काम		मांस
२१।४३	प्रसीदति	प्रशाम्यति	प्रशाम्यति
२२।४	युक्तं च	युक्तय	युक्तय
२२।५	हेतु	हेतुः	हेतुः
२२।३१	ध्यायन्	ध्याय	
२२।४६	विपाक		विकार
२५।२०	त्रिपु सन्ततम्		त्रिष्वसंगतम्
२६।३२	सन्तोर्वाग्	सन्तो तस्यात्	
२७।११	पावनीम्		पावनः
२८।२०	त्रियवस्थम्		त्रिपदस्थम्
२८।२३	विशारदेन		विवेकबुद्ध्या
२६।४५	अपहन्तुं		अपहर्तुः
३०।६	परमोभवः		परमोदया
	स्वस्थ		स्वच्छ

द्वादश स्कन्ध

१।३४	अपरो-अपरान्	
२।१६	साधु-असाधु	
२।३५	वंशो-वंशा	
३।३	अस्य-अथ	
३।३७	ननांद-ननन्दु	
४।६	वेगोत्धः—वेगोवै	
६।१६	जन्मेजयः	जनमेजयः
६।३०	दम्भीत्यमया	दुर्भाव्यतया
६।३०	यद्विवाद	यद्विकारो
६।३१	श्रेयश्च	वचश्च
६।७४	वाजः	वाजि
६।७५	सुन्वान्	सुमन्वान्
६।७६	द्विजः	द्विजा
६।७७	कौशत्यः	कौसत्यः
	पौष्यञ्जिश्च	पौष्यं जिः

६।७८	प्राच्यान्	उदीच्यान्
६।७९	लोगाक्षिः	लौकाक्षिः
	कुशीदः	कुसीदः
	माङ्गलिः	लांगलिः
	कुत्यः	कत्यः
७।१	स्वकान्	स्विकान्
७।७	शिष्यात्	पुत्रात्
७।९	सर्गोऽस्यांथ	सर्गश्चैव
७।११	मात्र	सूक्ष्म
७।१२	बीजाद्बीजं	जीवो जीवः
७।१३	कृतास्वैन	क्लेशेन
७।१६	ब्रह्म	मनुः
	वंशाः	वंश्याः
७।१८	अनुशयिनम्	अनुशायिनम्
७।१९	व्यतिरेकान्वयो	व्यतिरेकान्वयौ
	मायामयेषु	मायाश्रयासु
७।२०	सत्	तत्
७।२०	वैदेहाया	वेदनात्मा
७।२१	त्रयंस्वयन्	त्रयाश्रयम्
७।२४	कौर्मंच	कौर्म्यं च
७।२५	विवर्धनम्	विदीपनम्
७।२५	ब्रह्मन्निदं	ब्रह्मणैतत्
	मुनैः	मुने
८।४	अद्भुतं	अर्भकं
८।५	सूतकौतूहलम्	जात कुतूहलम्
८।९	नियमर्द्धये	नियमैर्युत
८।१३	योगी	योगात्
८।१६	रजस्तोकमदौ	रजस्तोम मदा
८।२०	मनो	महो
८।२१	गोपद्रुम	गायन्द्रुम
८।२१	मनो	महो
८।२५	रजस्तोक	रजस्तोम
८।३४	एव	एक
८।४०	वन्धु	बद्धं

८।४७	दैवताय	दैवतायै
८।४७	तन्	त्वन्
८।४८	आद्य:	अद्य
	अवसाद्य	उपपद्य
८।४९	वन्देमहा	वन्दामहे
९।२	वर्यासि	वर्योऽसि
९।९	ईडित:	ईरित:
१०।२	काशया	कातरा:
१०।४	पश्येम	वश्येम
१०।५	निभृतोदझपत्रात	निभृतोनन्वृविव्रात
	वातापाये	स्तापापाये
१०।२५	वृष्टिता वृषावनि	वृष्टभयृषभावनि
११।३२	गणै:	गुणे:
११।३७	वर्यो	स्वर्य्य
११।३७	ऋतसेनं:	घृतसेन:
११।४१	पुष्यमासं	सहस्याख्यान्
११।४१	ब्रह्मोपेतो	ब्रह्मरात:
११।४३	कम्बलश्च	कम्बलाश्च
११।४६	सन्मतिन्	सद्गतिन्
१२।४	अत्रब्रह्म	यत्तद्ब्रह्म
१२।४	तत्	सत्
१२।६	ब्रह्मर्षं	ब्रह्मर्षभस्य
१२।११	अर्वाक्सर्ग	अद्यसर्ग
१२।३०	अहे:	अहो
१२।४९	रम्यम्	पुण्यम्
१२।५०	प्रग्रणीत	यदिकर्हिचिद्
१२।५२	अनुत्तमं	अकारणाम्
१२।५५	भजताधिवेश्य	भजताधिवेश्य
१२।५३	पठत्यनश्नन्	पठत्यनन्य
१२।५९	ततो	पूतो
१२।६२	ऋचो	ऋषय:

—:०:—

अनेक व्यक्तिगत प्राचीन ग्रन्थगारों में रक्षित संकलित निबन्ध संस्करण

भागवत श्रीधर टीका—श्रीसनातन गोस्वामिपाद टीका सह
रामनारायण विद्यारत्न—मुर्शिदावाद १८७२ ई०
भागवत श्रीधर—ब्रह्मावर्त शर्मा—कलिकाता १८११ ई०
" श्रीधर—श्रीजीवगोस्वामी— ह्मावर्त भट्टाचार्य कलिकाता १८८० ई०
" महाराज वीरचन्द्र वर्य मानिक्य बहादुर त्रिपुरा—(१२९० बंगाल)
" श्रीधर कलिकाता—१८७७ ई०
" आद्यश्लोक त्रय—मधुसूदन सरस्वती टीकासह—गोपालकृष्ण मत, कलिकाता १८९३ ई०
" सुखबोधिनी व्याख्या—दीनबन्धु वेदान्तरत्न विभिन्न टीकावलंबन हावड़ा (१३०६ बंगाल)
" पंचानन तर्करत्न— कलिकाता—१९०२–४–२०–२७ ई०
भागवत अष्ट टीका सह—नित्य स्वरूप ब्रह्मचारी सम्पादित—वृन्दावन १९०३–८ ई०
" श्रीधर—विश्वनाथ कृत टीका—खगेन्द्रनाथ शा. कलि. १९०६–११ ई०
" रास पंचाध्यायी—श्रीश्यामलाल गोस्वामी—वैष्णव कलि० १९०७ ई०
" रास पंचाध्याय—गूढार्थ दीपिका – रत्नगोपाल भट्ट—काशी १९०८ ई०
" वंशीधर शर्मा कृत टिप्पणी (६ खण्ड) मुंबई १९८० ई०
" सिद्धान्त चन्द्रिका (राघव सूरीहत) मद्रास १९०८ ई०
" श्रीधर वासुदेव शर्मा बम्बई १९१० ई०
भागवत १ म वीरराघव कृष्ण गुप्त कृत टीकाद्वयसह मद्रास १९१० ई०
" सुबोधिनी बल्लभ—विट्ठलनाथ टीकासह—रत्नगोपाल भट्ट काशी १९११ ई०
" रासलीला हरे गोविन्द शास्त्री (मणिप्रभा) कलिकाता १९१२ ई०
" १० म श्रीधर सनातन जीवगो. विश्वनाथ हरिपद चट्टो. कल्यानपुर १९१२ ई०
" संस्कृत भूमिकासह नित्यस्वरूप ब्रह्मचारी—कलिकाता १९१३ ई०
" श्रीधर मधुसूदन गोस्वामी कृत हिन्दी अनु. नित्यस्वरूप ब्रह्मचारी, कलिकाता १९१८ ई०
" रासलीला—नीलकण्ठ गोस्वामी कलिकाता १९२१ ई०
भागवत मतभेद समालोचना—श्यामाचरण कविरत्न—काशी (१३३० बंगाल)
" श्रीगौड़ीय मठ सं०—श्रीमाधवाचार्य श्री विश्व० अन्वय—अनु० विवृ० कलिकाता—१९२४ ई०
" १० म श्रीधर टीका—वैष्णवतोषिणी—हरिपद चट्टोपाध्याय कलिकाता—१९२५ ई०
" हिन्दी अनुवाद सह लखनऊ १९२८ ई०
" चूर्णिका वैंक्टेश्वरम् बम्बई (१८५१ बंगाल)
" मि. रामस्वामी मद्रास १९३७ ई०

भागवत श्रीजीव न्याय तीर्थ कलिकाता १९३८ ई०
" मूल श्लोक सूत्री सह—पुरीदास गोस्वामीपाद सम्पा० १९४५ ई०
" सील सनातन गो० वृहद् वै० तो० १९५१ ई०
" श्रुति कल्पलता वामन पण्डित १९३६ ई०
" सिद्धान्त प्रदीप शुकदेव धनंजयदास कलिकाता (१३४४ बंगाल)
" गीता प्रेस, गोरखपुर (१९९५ संवत)
" स्तव कौस्तुभ—भक्ति प्रदीप महाराज संक गौड़ीय मठ कलिकाता—१९५३ ई०
श्रुति—श्रुतिव्याख्या—श्रीवृन्दावन (श्रीपुरीदास गोस्वामिपाद सम्पादित श्रीप्रबोधानन्द सरस्वती)
संशय शातनी—श्रीरघुनन्दन गोस्वामी (१८०९ शक) (ऊंडाल स्टेशन निकट गोकुलानन्द गोस्वामी गृहे रक्षित)

हिन्दी भाषामें अनूदित

भागवत १० म स्कन्ध 'हरिचरित्र' कवि लालच कृत ५६४५–४६
" (सम्पूर्ण) कृष्णदास, ५६४७–६०
" (१०म स्कन्ध गुरुमुखी लिपि— ५६५८
" (१० म–११ स्कन्ध) नन्ददास ५६६१–६२
" सम्पूर्ण भाष्य ५६६४–६६
" (१० स्कन्ध) रत्न सिंह ५६७०
" सम्पूर्ण— रमजानि ५६७१–८१
भागवत (१०म स्कन्ध) विष्णु विलास व्यास कुल महरी नारायण ५६८२–८३
" (११श स्कन्ध) सन्तदास (चतुरदासेर धात्र) ५६८४
" ए गुरु मुखी लिपि ५६८५
" अवतार लीला ५६९८
" रास पंचाध्याय टीका ५६९८
" रास पंचाध्याय—टीका—माधुर कृष्णदेव ५७००
" हरि चरित ५७१६
भागवत दशस उत्तरार्द्ध—सत्यधर्मतीर्थ कृत टिप्पणी (माध्व) धारोआर १९३७ ई०
" २ खण्ड सं० मद्रास १९३७ ई०
" चन्द्रशेखर प्रफुल्लचन्द्र कृत भाषान्तर—भानपुर इन्दौर— १९३७ ई०
" तामिल टिप्पणी—यज्ञराम आचार—श्रीवेंकटद्— १९३७ ई०
" उद्धव संवाद मूल अनुवाद टिप्पणीसह—स्वामी माधवानन्द—अल्मोड़ा १९३९ ई०
" मलयालय लिपि—४ खण्ड— मद्रास १९४०–४२ ई०
" कन्नड़—चन्द्रशेखर शास्त्री—मैसूर— १९४४ ई०
" अग्रेजी अनुवाद (संक्षिप्त प्रभावानन्द, मद्रास १९४४ ई०
सुभाषितानि (निबन्ध) विष्णुविनायक—मराठी—मुंबई १९३० ई०

१. कलिकाता न्यसनाल लाइब्रेरी (१) निबन्ध संग्रह, (२) सर आशुतोष मुखोपाध्याय संग्रह, (३) भा: रामदास सेन संग्रह, (४) बुहार संग्रह,

२. कलिकाता एसियाटिक सोसाइटी—(१) निबन्ध संग्रह, (२) फोर्ट विलियम संग्रह, (३) इण्डियान् म्यूजियम संग्रह, (४) वालासर काटेर संग्रह, (५) निबन्ध संग्रह

३. कलिकाता वंगीय साहित्य परिषदेर—(१) निबन्ध संग्रह, (२) गोपालदास संग्रह, (३) चितरंजन संग्रह, (४) विद्यासागर संग्रह.

४. कलिकाता संस्कृत कालेज लाइब्रेरी संग्रह—

१. कालिकाता संस्कृत साहित्य परिषद संग्रह (२) कलिकाता श्रीचैतन्यचन्द्र लाइब्रेरी निवन्ध संग्रह

३. बांकीपुर (पटना) ओरियन्टल पब्लिक लाइब्रेरी संग्रह (४) वराह नगर श्रीगौरांग ग्रन्थागार संग्रह

५. कलिकाता विश्वविद्यालय संग्रह

पारस्य (फारसी) भाषा अनूदित

भागवत (१म-१२श स्कन्द) सं० नाम नहीं बांकीपुर—१४५०

महम्मद साहेब राजत्वेर ११ अंक लिखित—बांकीपुर—१४५१

तर्जुमा ए भागवत (१०म का अनुवाद) नाम नहीं ए. एस. बी. सी. १७०६

तर्जुमा ए भागवत पुराण—१-६म का संक्षिप्तानुवाद आलम साहेब राजत्वेर २१ अंक १७७६ ई० १८ नवम्बर ए. एस. बी. सी. ६८८

तर्जुमा भागवत पुराण—समग्र (लिपिकाल) १८७० ई० ए. एस. बी. सी. ६८६

(फारसीमें अनूदित श्रीमद्भागवतके मुद्रित संस्करण)

(ब्रिटिश म्यूजियम लाइब्रेरीमें सुरक्षित पारसी भाषामें मुद्रित पुस्तक तालिका १६२२ ई०)

भागवत पुराण—पद्य अनूदित—आभानतरण्य २ खं० कानपुर (१६७० ई०)

भागवत ए शारिफ—पद्यानुवाद—राजा गिरधारीप्रसाद कर्तृक (१८८६ ई०)

रास पंचाध्यायी—हिन्दी फारसी पद्यानुवाद—अनु० अयोध्याराम-गोरखपुर (१८६४)

मुद्रित भागवत ग्रन्थ पंजी लन्दनस्थ ब्रिटिश म्यूजियम लाइब्रेरी रक्षित

१८७६, १८६३, १९०८, १६२८ ई० की तालिका

श्रीमद्भागवत—मूल संस्कृत, तामिल और फारसी भाषामें अनूदित

श्रीधर स्वामिटीकासह—भवानीचरण वन्द्योपाध्याय संपादित कालिकाता—१८२७-३० ई०

श्रीधर स्वामि कृत टीकासह—मुम्वई १८३६ ई०

श्रीमद्भागवत—एवं तत्परे कर्तृक फारसी भाषाय अनू० फारिस १८४०-६८ ई०

वामन कृत मराठी टीकासह—मुम्वई १८४२ ई०

श्रीधर स्वामीकृत टीका आनन्दकुमार कविरत्न कृत व्याख्यासह कलिकाता (१८४५ ई०)

ध्रुव चरित—

मराठी टीकासह, मुम्वई १८५४ ई०

गुजराती टीकासह—मुम्वई १८५१ ई०

सनातन चक्रवर्ति कृत बंगानुवाद—रामानन्द चूड़ामणि भट्टाचार्य

श्री लाल चांद विश्वासकृत भूमिका सह—कालिकाता ११८० शाके, १८५८ ई०
श्रीमद्भागवत—श्रीधरी टीकासह—दामपुर वेंकट सुब्बा शास्त्री, भागवत सिद्धान्त चन्द्रिकामें संपादित १८५८ ई०

भागवत श्रीधरटीकासह—हरिजोत महादेव सम्पादित मुम्बई १८६० ई०
" १०म समूल गौड़ीय—पद्यानुवाद—वीरभद्र गोस्वामी सम्पादित नन्दकिशोर कविरत्न—संशोधित
" कलिकाता १८६१ ई०
" श्रीधर—तेलगु टीकासह—मद्रास—१८६२ ई०
" वेदस्तुति—श्रीधरी टीका—काशीनाथ उपाध्याय कृत सुबोधिनी, मुम्वई १८६२ ई०
" रास पंचाध्यायी—
" श्रीधर टीका काशी १८६८ ई०
" १०म गिरिप्रसाद कृत हिन्दी टीकासह—काशी १८६९ ई०
" श्रीधर—दुर्गाचरण वन्द्योपाध्याय—कालिकाता १८७० ई०
भागवत श्रीधर—वंगानुवाद—रामनारायण विद्यारत्न ... वहामपुर—१९७१ ई०
" वेदस्तुति—अन्वयार्थ दीपिका सह (संस्कृत गुजराती) पीताम्वर पुरुषोत्तम बम्बई १८७७ ई०
" ११श स्कन्ध—एकनाथ कृत—मराठी टीका—पूना १८८१ ई०
" १२ स्कन्ध—उत्कल अनुवाद कटक १८४८ ई०
" श्रीधर—भागवतार्थ दर्पण-मराठी व्याख्या सह—मुम्वई—१५९२ ई०
" भागवतप्रसाद आचार्य कृत—भक्तमनोरंजनी व्याख्या—विहारीलाल आचार्य कृत टिप्पणी सह (१३ खण्ड)
" मुम्वई १७९७ ई०
" इच्छाराम सूर्यराम देशाई कृत व्याख्या—गुजराती अनु० मुम्बई १८९७ ई०
" अन्वितार्थ प्रकाशिका—गंगासहाय कृत—कल्याण १९०१ ई०
" रामस्वरूप शर्मा कृत—कीर्ति वर्द्धिनी हिन्दी भूमिकासह—मुरादाबाद १९०१ ई०
" आर रघुनाथ राना कृत—व्याख्या सह कुम्भकोणम्—१९०३ ई०
" भागवत चन्द्र चन्द्रिका टीका—वीर राघव (विशिष्टाद्वैत) शेषाद्रि आचार्य सम्पादित—कुन्ताकोणम् १९०८ ई०
" गूढार्थ दीपिका—धनपति सूरि काशी १९०८ ई०
" मुनि भाव प्रकाशिका सह (भागवत चन्द चन्द्रिका) कृष्णागुरु कृत नरसिंहचार्य—कुमार ताताचार्य सं० मन्द्राज १९१० ई०
" सुबोधिनी—वल्लभार्य कृत काशी १९११ ई०
टिप्पणी विट्ठलनाथ
प्रकाश टिप्पणी— पुरुषोत्तमजी महाराज

निबन्ध

भागवत हरिविचार—शशिभूषण चक्रवर्ति कृत भूमिका, कलिकाता १८१४ ई०

" भूषण—गोपालाचार्य—१८७० ई०
" शंका निवारण मंजरी—हिन्दी अनुवाद मुम्बई--१८८८ ई०

लन्दन इण्डिया आफिस लाइब्रेरी में सुरक्षित

भागवत सिद्धान्त चन्द्रिका—तेलगु वेंकट शास्त्रि सम्पा, मद्रास १८५८ ई०
" १०म पदच्छेदसह—गौड़ीय भाषा—वीरचन्द्र गोस्वामी कलिकाता १८६१ ई०
" १०म (मराठी) पूना १८७० ई०
" मराठी व्याख्या जगद्धितेच्छु पाक्षिका (असं.) पूना १८७०-७६ ई०
" क्रम सन्दर्भ—ब्रह्मावर्त समाध्यायिकृत टिप्पणी सह १८७४ ई०
" श्रीधर—चित् सुखादि बहुविध प्राचीन, कलिकाता १८७७ ई०
" श्रीधर—(द्राविणी भाषामें) तामिले मुद्रित—मद्रास १९०९ ई०
" तामिले मुद्रित मद्रास १९१० ई०
" श्रीधर टीका 'श्रीकोष' मुनि भाव द्र. भाग. चन्द्र च. मद्रास—१९१४ ई०
" सारोद्धार टीका—जयतीर्थ अवधूत—मुम्बई—१९२० ई०
" सत्यानन्द तीर्थ गुरुराज सम्पा० (तैलगु) विद्याविनो. प्रेस मद्रास रामचन्द्रपुरं १९२२ ई०
" भागवत हृदयम् (तेलगु टीकासह) श्रीनिवास सं० (कोकोनाडा) १९२० ई०
" भागवत मंजरी—मंजरी परिमल—गौतम कुलचन्द्र शर्मा—१९२८ ई०
" वेदस्तुति—शंकर यशोवन्त शास्त्री—पूना १९२९ ई०
" सुबोधिनी—वल्लभाचार्य कृत—निर्णय सागर सं० १९३० ई०
" श्रीकृष्ण रासलीला—गुजराती अनुवाद—अहमदाबाद १९३० ई०
" ११श स्कन्ध (मलयालम व्याख्यासह) गोपालक नायार चिपूर १९११ ई०
" परीक्षित दास शर्मा कृत टीका (उड़िया) कटक १९१७ ई०
" १०म हिन्दी भाषा टीका—काशी १९२५ इ०
" गुजराती व्याख्या सह (असं.) अहमदाबाद १९३०-२० ई०
" भागवत हृदय
(विशेष २) ३६७ श्लोकोंका अंग्रेजी अनुवाद श्रीनिवास राड निरुपति १९३१ ई०
मातृका क्रमे प्रधान २ विषय—पात्रसूची—मद्रास १९३२ ई०
सुबोधिनी—वल्लभाचार्य मुम्बई--१९२१-२३-२८-४३—अहमदाबाद १९४०-४२) प्रकाश व्याख्यासह सूरत १९३२ ई०
" तामिल अनुवाद—नागराक्षर—गणपति अयारु—मद्रास १९३६ ई०

———

श्रीमद्भागवतके अनुष्ठान

विश्वामित्रोक्त सप्ताह क्रम

१. संकट निवृत्यर्थ सप्ताह क्रमके विश्राम संकेत—

दिन संख्या	१	२	३	४	५	६	७
अध्याय संख्या	२८	६४	४५	३८	७३	७२	१३
स्कन्धके	२ के	४	६	८	१०	११	१२
अध्याय पर विश्राम	१०	३१	१८	२४	४८	३१	१३

२. दिन वही

सप्ताह

अरिनाशनके लिए अध्याय	४८	६०	४५	६०	७२	३७	१३
स्कन्ध अध्यायपर विश्राम	३।१८	५।१५	७।१५	१०।१२	१०।८४	११।१३	१२।१३

३. अत्रिप्रोक्त–रोग निवारण के लिये	३८	६०	३८	५८	३८	५०	१३
	३।१०	५।६	६।१८	८।२०	१०।३५	१०।८४	१२।१३

४. सूतोक्त पुरुषोत्तम प्राप्ति के लिये	४८	६७	३७	४८	१२	७८	४८
	३।२०	५।२३	७।१५	८।२४	१०।१२	१०।८०	१२।१३

५. भारद्वाज प्रोक्त बन्धन मुक्ति के लिये	६२ / ३।२८	५७ / ४।२६	३८ / ७।१५	४८ / ८।२४	८० / १०।८०	३१ / ११। १	१३ / १२।१३
६. वशिष्ठोक्त पुत्र प्राप्ति के लिये	५३ / ३।२८	४३ / ५।३	५० / ७।८	५८ / १०।४	५१ / १०।५५	४१ / ११।६	३८ / १२।१३
७. कश्यपोक्त श्रीप्राप्ति के लिये	७१ / ४।८	६१ / ६।१३	५२ / ७।८	१५ / १०।३४	३८ / १०।७३	१७ / १०।९०	४४ / १२।१३

मन्त्रोपासना प्रयोग

१. दाम्पत्य प्रीति तथा काम शान्तिके लिए — हृषीकेशोपासना	" ओं ह्रां.............. । "	५।१८।१८
२. आत्मशान्त्यर्थ	" ओं नमो भगवते...... ।	५।१८।२५
३. धारणार्थ कूर्मोपासना	" ओं मनो भगवते अकूपाराय...... ।	५।१८।३०
४. जीवनोद्वाहार्थ-वाराहो०	" ओं नमो भागवते.......... ।	५।१८।६०
५. संकल्प सिद्ध्यर्थ—मत्स्यो०	" अवतारो हरे र्योयं......... ।	८।२४।६०
६. महाविपत्ति दूर करने के लिए	" तमूचुः................ ।	८।२०।४३
७. उल्लासप्त्यप्रार्थ	" अयेशसाया०.......... ।	६।६।४७
८. मायामोहनिवृत्यर्थं	" संसार सागरे मग्नं	महा० ६।२७
९. अहंतलनिवृत्यर्थ	" यत्कीर्तनं०........ ।	२।४।१५-१७
१०. पुत्रप्राप्त्यर्थ	" सत्वत्राणधितः०.......... ।	३।२४।४
११. अभयप्राप्त्यर्थ	" मा मा त्यानं०.......... ।	३।२४।३६
१२. गायत्री	" ओं परो रजः०....... ।	४।७।१४
१३. नेत्ररोगनाशार्थ	" देवतिर्यङ्०.......... ।	५।२०।४६
१४. यज्ञविघ्ननाशार्थ	" स प्रसीद त्वमस्माकम्.......... ।	४।७।४७
१५. आत्मकल्याणार्थ	" जितं त आत्मविहर्य०.............. ।	४।२४।३३
१६. अन्नवृद्ध्यथ	" स्त्र गोभिः पितृदेवेभ्यो०....... ।	५।२०।१२

१७. स्वर्गप्राप्त्यर्थं	" परस्य ब्राह्मण:............ ।	५।२०।१७
१८. धान्यवृद्ध्यर्थं	" आप: पुरुष:.............. ।	५।२०।२३
१९. आभ्यन्तर शुद्ध्यर्थं	" अन्त: प्रविश्य भूतानि०........... ।	५।२०।२८
२०. पुंसवनव्रत	" अलंतेनिरपेक्षायं०........... ।	६।१९।४
२१. पयोव्रत	" अन्वयर्तन्त यं देवता:०.......... ।	८।१६।३०
२२. ज्वर शान्त्यर्थं	" नमामित्वानन्त.................. ।	१०।६३।२५-२८
२३. दु:खनाशार्थं	" अहं हरे तव.............. ।	१२।१३।२३
२४. भगवत्प्रेमार्थं	" नाम संकीर्तनं.......... ।	६।११।२४-२७
२५. आदर्शपत्नीप्राप्त्यर्थं	" तथा सन्वाहं.... ... ।	३।२१।१५
२६. ब्रह्मतेजप्राप्त्यर्थं	" त्वत्त: सनातनो धर्मो.......... ।	३।१६।१८
२७. लक्ष्मी प्राप्त्यर्थं	" श्रियाविलोकिता....... ।	८।८।२८
२८. अभय प्राप्त्यर्थं	" ओं नमो भगवते नरसिंहाय....... ।	५।१८।८
२९. निष्काम भक्ति०	" यदि रासीश मे०.......... ।	७।१७।८
३०. विश्वशान्त्यर्थं पुत्र-मनो०	" यज्ञेश०.......... ।	८।१७।८
३१. बंधन मुक्त्यर्थं	" भूत भावन०........... ।	४।२२।२९
३२. व्रतपूर्त्यर्थं	" मन्त्र तस्तन्त्र०........... ।	८।२३।१६
३३. चरित्र शुद्धयर्थं	" ओं नमोभगवते०........... ।	५।१९।३
३४. अज्ञाननाशार्थं	" अव्रत्तं न सवया०........... ।	९।११।९
३५. वर प्राप्त्यर्थं	" व्यसनं ते०........... ।	१०।६२।१८
३६. अभिचारशान्त्यर्थं	" कृत्यानल: प्रतिहत:........... ।	१०।६७।४०
३७. बंधन मुक्त्यर्थं	" कृष्ण कृष्णा प्रमेयात्मन........... ।	१०।१०।२५
३८. सर्वापन्निवारणार्थं	" वासुदेवाय.............. ।	१०।७३।१६
३९. दारिद्रनाशार्थं	" ध्येयं सदा०.............. ।	११।५।३३
४० दुख: शान्त्यर्थं	" नामेसंकीर्तनं........... ।	१२।१३।२३
४१. विषतिवारक (१)	" देवदेव महादेव..... .... ।	८।७।२१
४२. विद्या प्राप्त्यर्थं	" नम: शिवाय........... ।	१२।१०।१७
४३. पति प्राप्त्यर्थं (२)	" कात्यायनि.......... ।	१०।२२।४
	या	
	" प्रसन्न वदा ओजं०.......... ।	३।२८।१३-१९
४४. एकाग्रतार्थं	" येन चेतयते विश्वं.............. ।	८।१।
४५. ब्रह्मदर्शनार्थं	" कृष्ण कृष्ण.............. ।	१।७।२२
४६. भवनाशार्थं		

(१) यहांसे शिवोपासना मन्त्र हैं

(२) देवीके मन्त्र

४७. गर्भ रक्षार्थ	" पाहि पाहि............ ... ।	१।८।९
४८. आपत्तिमें प्रसन्नतार्थ	" कृष्णाय वासुदेवाय............ ।	१।८।२१
४९. भक्ति पुष्ट्यर्थ	" त्वयि मेऽनन्य............ ।	१।८।४२
५० देशविकासार्थ	" इमेजन यदा .... ।	१।८।४०
५१. मृत्यु समय दर्शनार्थ	" स देव देवो........... ।	१।९।२४
५२. आत्म निवेदनार्थ (३)	" प्रान् दारन्सुता ब्रह्मन्........	४।२२।४४
५३. मृत्यु विजयार्थ	" मत्यो मृत्यु........... ।	१०।१
५४. बालरोग निवृत्यर्थ	" अव्यादजोंघ्र........ ।	१०।६।२२-२९
५५. पतिकी बीमारीसे रक्षार्थ	" अनुगृह्णी.......... ।	१०।,१।५२
५६. संसार नाश्यर्थ	" कृष्ण कृष्ण महावीर........ ।	१०।१६।६
५७. कृष्णदर्शनार्थ	" हे नाथ रमण प्रेष्ठ........ ।	१०।३०।४०
५८. प्रेम प्राप्त्यर्थ	" अप्यङ्घ्रि मूले............... ।	१०।३८।१६
५९. प्रेम प्राप्त्यर्थ	" नमस्ते वासुदेवाय........... ।	१०।४०।३०
६०. पति पुर्नमिलन (१)	" तासामाविरभूच्छौरिः.......... ।	१०।३२।२
६१. संकटनाशार्थ	" हे नाथ हे रमानाथ........ ।	१०।४७ ५३
६२. मस्तकपीड़ा	" दर्शयस्व महाभाग........... ।	१०।५७।३९

विभिन्न कामनाओंकी पूर्तिके लिए भागवतके चरित एवं मन्त्र*

निम्नलिखित सिद्ध प्रयोग अनेक महापुपुषों द्वारा अनुभूत एवं सफल हैं। भागवतमें स्वयं इनकी प्रामाणिकताका वर्णन है, अदितिने पयोव्रत आदिके द्वारा मनःकामनापूर्ण की थी। यहां केवल विवरणके लिए संक्षिप्त संकेत लिखा जा रहा है—

हेतु	चरितादि	स्कन्ध अध्याय श्लोक	फल श्रुतिके श्लोकांक
पितृ तृप्त्यर्थ	आत्मदेव	महात्म्य – ४-५	महा- ५।६०
हरिभक्ति	पाण्डव निर्याण	१।१४-१५	१।१५।५२
सर्वसिद्धि	देवोपासना	२।३।२	२।३।२-१०
भगवत्प्रसन्नता	ब्रह्म स्तुति	३।९।१-१५	३ ९।४०
आयुष्य	हिरणाक्ष वध	३।१३-१९।	३।१३।४८
भगवत्प्रीति	सांख्य तत्वदर्शन	३।२५-३३	३।३३।३७

(३) पुष्टि सम्प्रदायका ब्रह्म सम्बन्ध ।

(१) ३१वें अध्यायका सम्पुट : १९ दिन पाठकी विधि है।

*गुजराती—रमणलाल शा० भागवत तत्व चिन्तामणि

पापनाश	सती चरित	४।२-७।	४।६।३१
सर्वश्रेय	ध्रुव चरित	४।८-१२	४।१२।४५
भगवत्प्रेम	पृथु चरित	४।१५-२३	४।२३।३९
कर्म बन्धनाश	रुद्रगीत	४ २४।३३	४।२४।७८
जीवन्मुक्ति	पुरंजन चरित	४।२५-२९।०	४।२९।८३
ऐश्वर्यलाभ	क—विदुर मैत्रेय संवाद	४।३-४।०	४।३१।३१
	ख—भरत चरित	४।७-१४।०	४।१४।४६
स्थूलमें सूक्ष्मदर्शन	भूलोकादि चरित	५।१६-२६।०	५।२६-३९
पापनाशार्थ	शिशुमार	५।२३-४-८	५।२३-९
आपद्विनाशार्थ	नारायण कवच	६।८	६।८।३६-४२
शत्रुविजयार्थ	इन्द्र विजय	६।७-१३।०	६।१३।२३
बन्धन मुक्ति	चित्रकेतु चरित	६।१४-१७।०	६।१७।४०-४१
स्त्री सुख	पुंसवन व्रत	६।१९।०	६।१९।२५-२८
अभय प्राप्ति	प्रल्हाद	७।१-१०।०	७।१०।४६-४७
दुःस्वप्न नाश तथा मृत्युभय निवारण	गजेन्द्र मोक्ष	८।२-३।०	८।४।१४-१५
संसार दुःख निवृत्ति	अमृत मन्थन	८।५-१२।	८।१२।४६
परमगति	वामन	८।१५-२३।	८।२३।३०-३१
संकल्पसिद्धि	मत्स्यावतार	८।२४	८।२४।६०
कविबनने के लिये	नाभाग	९।४।१-१२	९।४।१२
भक्ति	अम्बरीष	९।४-५।	९।५।२७
कर्मबन्ध मोचन	रामचरित	९।१०-११।०	९।११ १३
भगवत्प्रेम	पूतनामोक्ष	१०।६	१०।६-४४
पराभक्ति	रासक्रीडा	१०।२९।३३	१०।३३।४०
कलंक निवृत्यर्थ	स्यमन्तकोपाख्यान	१०।५६-५७	
पराजय निवृत्ति	अनिरुद्ध	१०।६२-६३।०	१०।६३।५३
पापमुक्ति	पौण्ड्रक वध	१०।६६	१०।६६।४३
भगवद्भक्ति	कृष्ण गार्हस्थ्य	१०।१९।०	१०।२९।४५
पापमुक्ति	शिशुपाल वध	१०।७४	१०।७४।५४
विष्णु प्रीति	बलराम	१०।७९	१०।७९।३४
कर्मबन्ध मुक्ति	सुदामा	१०।८०-८१।	१०।८१।४१
पापनिवृत्ति	देवकी पुत्रानयन	१०।८५	१०।८५।५९
काम निवृत्ति	श्रुतिगीत	१०।८७	१०।८७।४४

शत्रु पराभव	शिव मुक्ति	१०।८८	१०।८८।४०
ईश्वर प्राप्ति	भागवत धर्म	११।२-५।	११।५।५२
द्वन्द्व निवृत्ति	भिक्षु गीत	११।२३	११।२३।६२
मुक्ति संग	यदु संवाद	११।७-९।	११।७-९।
मोह निवृत्ति	ऐल गीत	११।२६	११।२६।२६
मुक्ति	कृष्णोद्धव संवाद	११।७-२९	११।२९।४८
उत्तमगति	श्रीकृष्ण निर्याण	११।३१ .	१५।३१।१४
कर्माशय तथा संसार निवृत्ति	मार्कण्डेय चरित	१२।८-१०।	१२।१०।४२
ब्रह्म ज्ञान प्राप्ति	महापुरुष लक्षण	१२।४।४-२६	१२।११।२६
सर्वसिद्धि	भागवत फल स्रुति	१२।१२।	१२।१२।५८-६४

नरनारायण मन्त्र	५।१९।११
नारायण मन्त्र	५।१९।११
नारायण मन्त्र	६।८।६।१० ६।५।२८
विष्णु मन्त्र	६।१९।७-८।
वासुदेव मन्त्र	१।५।३७, ४।८।५३, ८।३।२
रुद्र गीत	४।२४
नारायण वर्म	६।८।११-३४ (अनेक मन्त्रोंका संकेत)
रक्षाबन्धन मन्त्र	१०।६।२२-२९
कवच-नारायण वर्म	६।८।१२-३४
रक्षा कवच	१०।६।२२-२९

स्तव समावेश	**भागवतकी स्तुतियाँ**
१. कुन्तीकृत स्तव	१।८।१८-४३
२. भीष्म कृतस्तव	१।९।३२-४२
३. ऋषिकृत	३।१३।३४-४५
४. गर्भस्थ जीवकृत	३।३१।१२-२१
५. दक्षादि कृत	४।१।२६-४७
६. ध्रुव कृत	४।९।६-१७
७. भवकृत	५।१७।१८-२४
८. प्रजापतिकृत	७।८।४०।५६
९. प्रहलाद कृत	७।९।८-५०
१०. गजेन्द्र कृत	८।३।२-२९
११. ब्रह्म स्तव	८।५।२६-५०
१२. प्रजापतिगण कृत	८।७।२१-३५
१३. आदिति कृत	८।१७।८-१०
१४. गर्भ स्तुति	१०।२।२६-४१
१५. देवकीकृत	१०।१४।१-४०
१६. नागपत्नी कृत	१०।१६।३३-५३
१७. इन्द्र कृत	१०।२७।४-१३
१८. अक्रूर कृत	१०।४०।१-३०
१९. मुचुकुन्द कृत	१०।५१-४६-५८
२०. श्रुति स्तुति	१०।८७।१४-४१
२१. मार्कण्डेकृत	१२।८।४०-४९

पुटनोटः– (परिशिष्ठमें अन्य पाठानुष्ठान देखें) —सं०

इन स्तुतियोंमें वेदस्तुति वेदनाम परिपूर्ण सर्वोत्कृष्ट स्थानपर टीकाकारोंने भक्तवन्दोंने स्थापित की है। मुचुकुन्द-स्तुतिमें मायामुग्ध जीवनके स्वरूपका महत्व समझाया है।

—:०:—

